राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

जुलाई - 2025

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

विमान हादसे!

थम गई जंग!

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO.: MAHHIN-2014/55532

• वर्ष : 10 • अंकः 04 • मुंबई • जुलाई-2025

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS.,
A-102, A-1 Wing , Near
Shahad Station , Kalyan (W),
Dist: Thane, PIN: 421103,
Maharashtra.
Phone: 9082391833 ,
9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

थम गई जंग!	05
भयानक विमान हादसे!	12
पकवान	18
कावड़ यात्रा ११ जुलाई से...	20
'हज' और 'ईद-उल-अजहा' का महत्व...	22
राशिफल	24
ओड़िशा का विश्व विख्यात सूर्यमंदिर कोणार्क	26
सिनेमा	29
'CM रेखा गुप्ता के मायामहल में लगेंगे करोड़ों रुपये!!	30
श्रीवाणी क्षेत्र जगन्नाथ मंदिर की ओर से अनुष्ठित हुई भगवान जगन्नाथ...	32
५ जुलाई को लक्ष्मी-नारायण रुप में रथारुढ़ होकर बाहुड़ा विजय ...	34
भगवान जगन्नाथ के प्रथम सेवक, पुरी धाम के गजपति महाराजा...	35
श्री जगन्नाथपुरी गोवर्द्धन पीठ के १४५ वें पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य...	36
आखिरी झूठ	38
बनवास	41
कच्ची नींव	50
देश-विदेश	54
कंटोला की खेती...	56

सुविचारः

कभी-कभी लोग मीठी बातें करके आपको सम्मान नहीं, धोखा दे रहे होते हैं।

विमानन क्षेत्र के संकट...

विमानन क्षेत्र आधुनिक युग का एक अहम स्तंभ है, जो वैश्विक व्यापार, पर्यटन, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेकिन हाल के वर्षों में यह क्षेत्र अनेक संकटों और चुनौतियों से जूझ रहा है। कभी विस्तार और विकास का प्रतीक रहा यह क्षेत्र अब आर्थिक मंदी, पर्यावरणीय दबाव, तकनीकी समस्याओं और सुरक्षा खतरों के चक्रव्यूह में फँसता जा रहा है। कोविड-१९ महामारी के बाद से हवाई यात्रा में भारी गिरावट आई। कई एयरलाइनों को संचाल न बंद करना पड़ा या कर्ज में डूबना पड़ा। ईंधन की कीमतों में वृद्धि, डॉलर के मुकाबले रुपये का गिरना, और विमान रख-रखाव की बढ़ती लागत ने एयरलाइंस की अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया है। इसके अतिरिक्त, टिकटों के सस्ते दाम और प्रतिस्पर्धा के कारण मुनाफा कम होता जा रहा है। १२ जून को अहमदाबाद से उड़ान भरने के फौरन बाद एअर इंडिया की फ्लाइट एआई-१७१ दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी. इस विमान दुर्घटना ने न सिर्फ पूरे देश की अंतरात्मा को झकझोर दिया है, बल्कि इसने भारत के तेजी से बढ़ते विमानन उद्योग में भी खलबली मचा दी है. इस हादसे के बाद, कैंसिलेशन में वृद्धि हुई, यात्रियों की संख्या में कमी आई और विमानन में लोगों का भरोसा कम हुआ. अधिकारियों का कहना है कि घटना की जांच की जा रही है, कई लोग सोच रहे हैं कि क्या यह थोड़े समय की अशांति है या भारत के तेजी से बढ़ते विमानन क्षेत्र के लिए संकट है.

नागरिक उड्डयन मंत्रालय (MoCA) के डेटा से पता चलता है कि इस दुर्घटना ने यात्रियों के आत्मविश्वास को किस तरह प्रभावित किया है. जून के पहले सप्ताह में भारत के हवाई अड्डों पर प्रतिदिन औसतन ल गभग ९.९ लाख यात्रियों की आवाजाही हो रही थी. हालांकि, दुर्घटना के बाद कुल यात्रियों की संख्या में काफी कमी आई. १३ जून से १६ जून की अवधि में हवाई अड्डों पर यात्रियों की संख्या क्रमशः ९.७९ लाख, ९.७९ लाख, ९.५१ लाख और ९.२ लाख रही- पिछले औसत से कुल १ लाख यात्रियों की कमी आई है. एविएशन विशेषज्ञ सुभाष गोयल ने ईटीवी भारत को बताया, 'एअर इंडिया विमान दुर्घटना जैसी कोई भी बड़ी घटना यात्रा भावना पर अस्थायी प्रभाव डालती है. हमने ट्रेन दुर्घटनाओं या आतंकी हमलों के बाद भी इसी तरह के प्रभाव देखे हैं. इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है, लोग डरे हुए हैं, लेकिन यह अस्थायी है. यह सिर्फ एअर इंडिया तक ही सीमित नहीं है; वैश्विक स्तर पर भी समस्याएं रही हैं, ब्रिटिश एयरवेज और लुफ्थांसा को वापस लौटना पड़ा और सऊदी एयरबस का एक विमान अभी भी लखनऊ में खड़ा है.' गोयल के अनुसार, सतर्कता के माहौल के कारण सभी उड़ानों में देरी हो रही है और कैंसिलेशन हो रहा है, ऐसा परिचालन अक्षमता के कारण नहीं है, बल्कि इसलिए क्योंकि एयरलाइंस अब हर तकनीकी पैरामीटर की दोबारा जांच कर रही हैं, खासकर बोइंग ७८७ विमानों के मामले में. उन्होंने कहा, 'यह अच्छी बात है. एयरलाइंस सावधानी बरत रही हैं, पछताने से बेहतर है कि सुरक्षित रहें.' यात्री श्रेणियों में इसका प्रभाव अलग-अलग रहा है. ट्रैवल एजेंट्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के चेयरमैन (East) अंजनी धानुका ने इस व्यवहार परिवर्तन की पुष्टि करते हुए कहा, 'लोग एअर इंडिया के बजाय अन्य लंबी दूरी की उड़ानों को प्राथमिकता दे रहे हैं क्योंकि वे डरे हुए हैं. अगर किसी अन्य एयरलाइंस पर समान किराया उपलब्ध है, तो वे स्विच कर रहे हैं. हाल ही में सऊदी अरब के एयरबस में भी एक चिंगारी निकली है, इसलिए लोग सतर्क हो रहे हैं. केवल प्री-बुकिंग वाले ही अभी भी अपनी यात्रा जारी रख रहे हैं; नई बुकिंग लगभग रुकी हुई है.'

विमानन क्षेत्र पर यह आरोप लगते रहे हैं कि यह ग्रीनहाउस गैसों का बड़ा स्रोत है। कार्बन उत्सर्जन को लेकर वैश्विक दबाव के चलते सरकारें विमान कंपनियों पर कार्बन टैक्स लगाने पर विचार कर रही हैं। इससे न केवल एयरलाइंस पर आर्थिक बोझ बढ़ेगा, बल्कि टिकाऊ ईंधन (Sustainable Aviation Fuel - SAF) के विकास की चुनौती भी सामने आएगी। हाल के वर्षों में हुए कई विमान हादसों ने विमान निर्माताओं और एयरलाइंस की जवाबदेही पर सवाल उठाए हैं। बोइंग जैसे प्रतिष्ठित कंपनियों के विमानों में तकनीकी त्रुटियाँ और सुरक्षा खामियाँ सामने आई हैं। इसके अलावा, विमानों की समय पर डिलीवरी में देरी और कुशल इंजीनियरों की कमी ने भी संकट को और बढ़ा दिया है। रूस-यूक्रेन युद्ध, इजराइल-ईरान संघर्ष और मध्य पूर्व में अस्थिरता ने विमानन मार्गों को जटिल बना दिया है। कुछ देशों के हवाई क्षेत्र बंद होने से वैकल्पिक और लंबे रास्ते अपनाने पड़ते हैं, जिससे यात्रा समय और ईंधन दोनों की लागत बढ़ जाती है। कोविड काल में पायलटों, ग्राउंड स्टाफ और इंजीनियरों की बड़ी संख्या में छंटनी की गई। अब जब विमानन क्षेत्र धीरे-धीरे पटरी पर लौट रहा है, तो योग्य कर्मचारियों की भारी कमी महसूस की जा रही है। युवा वर्ग इस क्षेत्र को करियर के रूप में चुनने से कतराने लगा है।

टिकाऊ विमान ईंधन, हाइड्रोजन या इलेक्ट्रिक विमानों पर निवेश करना होगा। नीतिगत सहयोग, सरकारों को इस क्षेत्र के लिए कर राहत, अधोसंरचना विकास और अनुसंधान में सहयोग देना होगा। सुरक्षा पारदर्शिता, विमान कंपनियों को सुरक्षा मानकों में पारदर्शिता और जवाबदेही लानी होगी। डिजिटल बदलाव, एयर ट्रैफिक कंट्रोल, टिकटिंग और ऑपरेशंस में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और ऑटोमेशन से सुधार हो सकता है। विमानन क्षेत्र की चुनौतियाँ अनेक हैं– आर्थिक से लेकर तकनीकी और सुरक्षा तक। लेकिन इन समस्याओं के बीच समाधान की संभावनाएँ भी मौजूद हैं। यदि सरकार, उद्योग और वैज्ञानिक समुदाय मिलकर समर्पित प्रयास करें, तो यह क्षेत्र फिर से नई ऊँचाइयों की उड़ान भर सकता है। भविष्य का विमानन न केवल अधिक सुरक्षित होगा, बल्कि पर्यावरण के अनुकूल और तकनीकी रूप से उन्नत भी। ■

किन शर्तों पर हुआ सीजफायर, क्या थम गई है जंग!

ईरान और इजरायल के बीच चल रहे युद्ध में अमेरिका की कोशिशों के बाद सीजफायर की बातें सामने आ रही हैं। व्हाइट हाउस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ बातचीत के जरिए इजरायल और ईरान के बीच युद्ध विराम की मध्यस्थता की, जबकि उपराष्ट्रपति जेडी वेंस सहित उनकी टीम ने तेहरान के साथ बातचीत की। नाम न बताने की शर्त पर युद्ध विराम का विवरण देते हुए अधिकारी ने कहा कि इजरायल ने एक शर्त रखी और कहा कि वे सीजफायर पर सहमत है, उनकी शर्त ये थी कि ईरान नए हमले न करे। अधिकारी ने कहा कि ईरान ने संकेत दिया है कि आगे कोई हमला नहीं होगा। अधिकारी ने कहा कि ईरान के साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संचार में वेंस, विदेश मंत्री मार्को रुबियो और अमेरिकी विशेष दूत स्टीव विटकॉफ शामिल थे। ट्रंप ने सोमवार को पहले कहा था कि इजरायल और ईरान के बीच 'पूर्ण और समग्र' युद्ध विराम आने वाले घंटों में लागू हो जाएगा

क्या ईरान-इजरायल ने मान ली ट्रंप की बात?
ईरान-इजराइल सीजफायर ढाई घंटे में ही टूटा
ट्रम्प बोले- जंग रुकी; कुछ देर बाद ईरान ने मिसाइलें दागीं, जवाब में इजराइल ने बम गिराए
ईरान और इजरायल के बीच कैसे हुआ सीजफायर
भारत सरकार ने जारी किया बयान, फैसले का किया स्वागत

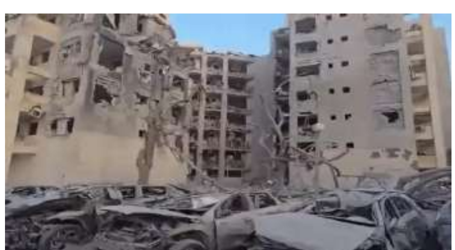

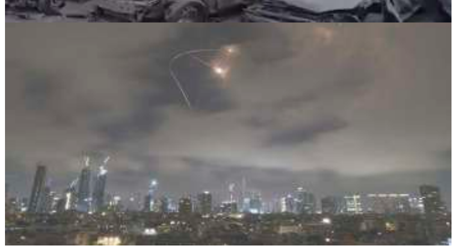

लेकिन कुछ ही देर बाद दोनों पक्षों ने नए हमलों की धमकी दे दी।

इजराइल-ईरान जंग रोकने से उत्साहित अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अब अपने पुराने वादे को पूरा करने का बीड़ा उठा लिया है. राष्ट्रपति चुनाव और उसके बाद कई बार रूस-यूक्रेन जंग रुकवाने का वादा कर चुके ट्रंप इसी मिशन पर लग गए हैं. इसका ऐलान व्हाइट हाउस की ओर से एक पोस्ट में किया गया है. ट्रंप की ओर से इस पोस्ट में कहा गया है, सबसे खराब स्थिति में नाटो की ओर बढ़ते हुए, यह इजराइल और ईरान के साथ मेरे द्वारा अनुभव किए गए समय की तुलना में बहुत शांत अवधि होगी. मैं अपने सभी बहुत अच्छे यूरोपीय मित्रों और अन्य लोगों से मिलने के लिए उत्सुक हूं. उम्मीद है कि बहुत कुछ हासिल किया जाएगा! इस तरह ट्रंप अब नाटो समिट में यूरोपीय नेताओं को रूस-यूक्रेन जंग रोकने के लिए मानने की कोशिश करेंगे. इससे पहले ईरान-इजराइल जंग को लेकर उन्होंने मंगलवार को कहा था कि इजराइल अब ईरान पर हमला नहीं करेगा. उन्होंने दावा किया था कि सीजफायर अब प्रभावी हो गया है. हालांकि, एक बार फिर इजराइल ने ईरान पर हमले बंद नहीं किए.

इजराइल के मैगन डेविड एडोम एम्बुलेंस सर्विस ने बताया है कि १२ दिनों के दौरान ईरानी हमलों में कुल २८ इजराइली मारे गए हैं। ३००० से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। इजराइली डिफेंस फोर्स (IDF) के अनुसार, युद्ध के दौरान ईरान ने इजराइल पर लगभग ५५० बैलिस्टिक मिसाइलें और लगभग १,००० ड्रोन दागे, जिनमें से अधिकांश को रोक दिया गया। बीते दिन ट्रंप ने एक पोस्ट में लिखा था, इजराइल ईरान पर हमला नहीं करने जा रहा है.अमेरिका ईरान में सत्ता परिवर्तन को लेकर भी कोई पहल नहीं कर रहा है. मौजूदा हालात में अस्थायी युद्धविराम लागू है.सीजफायर समय-सीमा के बाद भी जारी हमलों पर निराशा जाहिर की थी.

इजराइल-ईरान जंग के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने मंगलवार सुबह सीजफायर का ऐलान किया। हालांकि यह कुछ घंटों में ही टूट गया। सीजफायर शुरू होने के करीब ढाई घंटे बाद ईरान ने इजराइल पर ६ बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं। एक मिसाइल बीर्शेबा शहर में इमारत पर गिरी, जिसमें ५ लोगों की मौत हो गई, जबकि २० से ज्यादा घायल हैं। ईरानी हमले के जवाब में इजराइल ने अपनी सेना को तेहरान में हमले का आदेश दिया था। थोड़ी देर पहले इजराइल ने ईरान की राजधानी तेहरान में एक रडार साइट पर हमला किया। इजराइली आर्मी रेडियो ने हमले की पुष्टि की है।

ताजा हमले के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने इजराइल PM बेंजामिन नेतन्याहू को फोन करके ईरान पर हमला रोकने को कहा था। अल जजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक नेतन्याहू ने ट्रम्प से कहा, 'मैं हमला नहीं रोक सकता, क्योंकि ईरान ने पहले सीजफायर का उल्लंघन किया और उसे जवाब देना जरूरी है। दोनों देशों के बीच जारी जंग के १२वें दिन, आज सुबह ३:३२ बजे ट्रम्प ने सीजफायर पर सहमति बनने का ऐलान किया था। सुबह १०:३८ बजे उन्होंने एक और पोस्ट किया और लिखा- 'अभी से सीजफायर लागू होता है, प्लीज इसे न तोड़ें।'

चीन बोला- हमें सच्चा सीजफायर देखने की उम्मीद

चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने मंगलवार को तुर्की के विदेश मंत्री से फोन पर बातचीत में कहा कि चीन ईरान और इजराइल के संपर्क में है और सच्चा सीजफायर होने की उम्मीद कर रहा है। चीनी विदेश मंत्रालय के बयान के अनुसार, वांग ने कहा कि सभी पक्षों को समान आधार पर बातचीत फिर से शुरू करनी चाहिए और ईरानी परमाणु मुद्दे के राजनीतिक समाधान के रास्ते पर लौटना चाहिए।

भारत ने ईरान-इजराइल के बीच सीजफायर का स्वागत किया

भारत ने ईरान और इजराइल के बीच सीजफायर पर सहमति बनाने में अमेरिका और कतर की भूमिका का स्वागत किया है। भारत के विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को एक बयान में कहा, 'बातचीत और कूटनीति के अलावा कोई विकल्प नहीं है। उम्मीद है कि सभी पक्ष स्थायी शांति की दिशा में काम करेंगे।'

कतर के PM ने अल-उदीद पर ईरानी हमले की फिर आलोचना की, कहा- हम हैरान

कतर के प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान बिन जसीम अल थानी ने सोमवार रात

अल-उदीद एयरबेस पर ईरान के मिसाइल हमले की फिर से आलोचना की है। दोहा में लेबनान के प्रधानमंत्री नवाफ सलाम के साथ मीडिया को संबोधित करते हुए शेख मोहम्मद ने कहा, 'हम ईरान के हमले से हैरान हैं, क्योंकि कतर से उसके दोस्ताना रिश्ते हैं। कतर के प्रधानमंत्री ने कहा, 'कतर पर हमला एक अस्वीकार्य कदम है, खासकर तब जब कतर तनाव को कम करने के लिए महान कूटनीतिक प्रयास कर रहा है।' प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद ने कहा कि कतर ने अल-उदीद पर ईरानी हमले का जवाब देने पर विचार किया है, लेकिन हम हमेशा तर्क और विवेक के साथ काम करते हैं।

जर्मनी ने सीजफायर का स्वागत किया

जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा किए गए ईरान-

ईरान-इजराइल जंग

ईरान और इज़राइल के बीच का तनाव एक लंबे समय से चले आ रहा भू-राजनीतिक संघर्ष है, जो केवल सैन्य नहीं बल्कि वैचारिक, धार्मिक और रणनीतिक कारणों से भी प्रेरित है। वर्ष २०२४-२५ में यह टकराव और भी तीव्र हो गया है, जिससे पश्चिम एशिया में अस्थिरता की स्थिति बनी हुई है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

१९४८ में इज़राइल की स्थापना के बाद ईरान ने उसे एक समय मान्यता दी थी। लेकिन १९७९ की ईरानी इस्लामिक क्रांति के बाद दोनों देशों के रिश्ते पूरी तरह टूट गए। ईरान, इज़राइल को 'ज़ायोनिस्ट शासन' कहता है और उसे अस्तित्वहीन देखना चाहता है। वहीं इज़राइल, ईरान को अपनी सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा मानता है, खासकर उसके न्यूक्लियर प्रोग्राम के कारण।

संघर्ष के प्रमुख कारण

- ईरान का परमाणु कार्यक्रम - इज़राइल को आशंका है कि ईरान गुप्त रूप से परमाणु बम बना रहा है।
- हिज़्बुल्लाह और हमास का समर्थन - ईरान इन आतंकी संगठनों को फंडिंग और हथियार देता है जो इज़राइल पर हमले करते हैं।
- सीरिया और लेबनान में प्रभाव - ईरान की वहां सैन्य उपस्थिति से इज़राइल लगातार हमले करता रहा है।
- ड्रोन और मिसाइल हमले - हाल के वर्षों में दोनों पक्षों ने एक-दूसरे की सैन्य और औद्योगिक संरचनाओं को निशाना बनाया है।

२०२४-२०२५ की प्रमुख घटनाएं

अप्रैल २०२४ में इज़राइल ने दमिश्क में ईरानी दूतावास पर एयर स्ट्राइक की। जवाब में ईरान ने पहली बार सीधे इज़राइल पर ड्रोन और मिसाइलों से हमला किया।

मई-जून २०२५ तक दोनों पक्षों के बीच साइबर युद्ध, प्रॉक्सी लड़ाइयाँ और सीमा संघर्ष तेज हो गए हैं।

अमेरिका और खाड़ी देश इस संघर्ष को काबू में लाने की कोशिश कर रहे हैं।

वैश्विक प्रभाव

तेल की कीमतों में वृद्धि

व्यापार और शिपिंग पर असर, खासकर होर्मुज़ जलडमरूमध्य के पास, संयुक्त राष्ट्र और यूरोपीय संघ की बार-बार मध्यस्थता की कोशिश और भारत जैसे देशों पर प्रभाव - ऊर्जा सुरक्षा, खाड़ी देशों के साथ संबंधों में सावधानी

भविष्य की संभावना

अगर यह टकराव पूर्ण युद्ध में बदल गया तो पूरे मध्य पूर्व में भारी तबाही हो सकती है।

परमाणु हथियारों का उपयोग एक वैश्विक संकट खड़ा कर सकता है।

लेकिन कूटनीतिक प्रयास जैसे अमेरिका, रूस और चीन की मध्यस्थता से स्थिति को संयम में रखने की उम्मीद है।

ईरान-इज़राइल संघर्षः क्या युद्ध ही समाधान है?

मानव सभ्यता ने सदियों से युद्धों का खामियाजा उठाया है - चाहे वह धर्म के नाम पर हो, सत्ता के लिए, या सुरक्षा के भ्रम में। २१वीं सदी में, जब दुनिया कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मंगल मिशन की बात कर रही है, उसी समय ईरान और इज़राइल के बीच बढ़ता युद्ध-सा तनाव हमें एक बुनियादी सवाल पूछने पर विवश करता है - क्या युद्ध ही समाधान है?

ईरान और इज़राइल का संघर्ष तकनीकी रूप से भू-राजनीतिक प्रतीत होता है, परंतु इसकी जड़ें कहीं गहरी हैं -

धार्मिक वैमनस्य

विचारधाराओं का टकराव

बाहरी शक्तियों का हस्तक्षेप

और क्षेत्रीय प्रभुत्व की होड़

इस संघर्ष में केवल मिसाइलें नहीं चल रहीं, विश्वास, सुरक्षा और अस्तित्व की बुनियादी अवधारणाएं भी झुलस रही हैं।

यह युद्ध केवल सरकारों का नहीं, जनता की शांति और भविष्य का है।

यह युद्ध सिर्फ सीमाओं का नहीं, संस्कृतियों और सह-अस्तित्व की संभावनाओं का है।

और सबसे अहम - यह युद्ध केवल सैन्य हथियारों का नहीं, सामाजिक चेतना और अंतरराष्ट्रीय नैतिकता का है।

सामाजिक और मानवीय प्रभाव

युद्ध में सैनिकों से ज्यादा आम नागरिक मरते हैं। शरणार्थियों की पीढ़ियाँ पहचान और घर दोनों खो बैठती हैं। बच्चों की पढ़ाई, महिल

ाओं की सुरक्षा, बुजुर्गों की दवाइयाँ - सब छिन जाते हैं। युद्ध विकास की रफ्तार को वर्षों पीछे ले जाता है।

भारत समेत दुनिया के कई देशों पर पड़ेगा प्रभाव

ईरान-इज़राइल संघर्ष का असर सिर्फ इन दो देशों तक सीमित नहीं रहेगा। इसका व्यापक प्रभाव भारत समेत दुनिया के कई देशों पर पड़ेगा, विशेष रूप से आर्थिक, राजनीतिक, और सामाजिक स्तरों पर।

१. भारत पर प्रभाव

* **कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धिः** भारत अपनी जरूरत का ८०% से अधिक तेल आयात करता है, जिसमें ईरान और खाड़ी देशों का बड़ा योगदान है। युद्ध की स्थिति में होर्मुज़ जल डमरूमध्य से तेल की आपूर्ति बाधित होगी, जिससे पेट्रोल-डीज़ल महंगे होंगे। इसका असर महंगाई, परिवहन, कृषि और आम जनजीवन पर पड़ेगा।

* **खाड़ी देशों में रहने वाले भारतीयः** खाड़ी देशों में लगभग ८५ लाख भारतीय कामगार हैं। यदि संघर्ष खाड़ी क्षेत्र तक फैलता है, तो वहां की राजनीतिक अस्थिरता से प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा और नौकरियों पर खतरा पैदा हो सकता है। भारत को बड़े पैमाने पर निकासी अभियान चलाना पड़ सकता है (जैसे 'ऑपरेशन कुश' या 'गंगा' पहले हुए थे)।

* **विदेशी व्यापार पर असरः** भारत का विदेश व्यापार विशेष रूप से पश्चिम एशिया और यूरोप से जुड़ा है। युद्ध से समुद्री व्यापार मार्ग (shipping lanes) बाधित होंगे जिससे निर्यात-आयात प्रभावित होंगे। इसके अलावा रुपया कमजोर हो सकता है।

* कूटनीतिक चुनौती : भारत के ईरान, इज़राइल और अरब देशों से अच्छे संबंध हैं। भारत को संतुलन बनाए रखना होगा ताकि किसी पक्ष के खिलाफ झुकाव न दिखे। इससे भारत की 'गुटनिरपेक्ष नीति' और 'स्ट्रैटेजिक ऑ

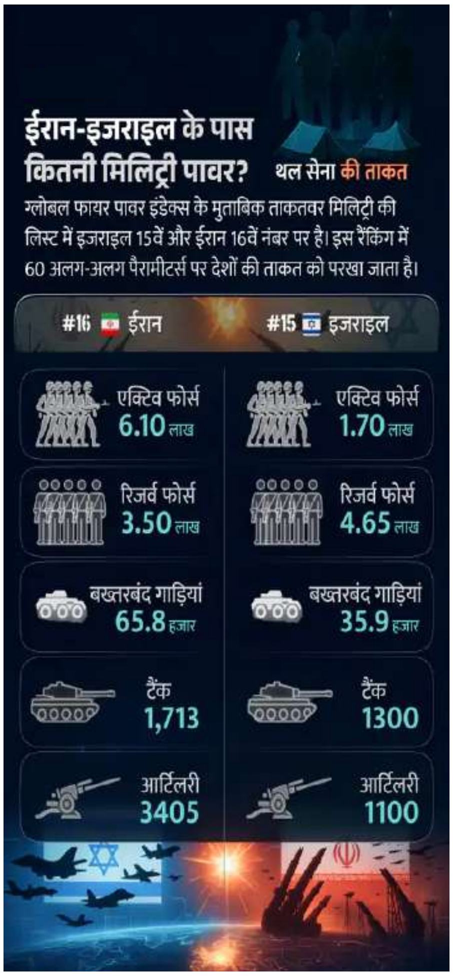

प्रमुख देश और उनके Ceasefire

देश/क्षेत्र	संघर्ष/युद्ध Ceasefire	वर्ष	मध्यस्थता/विवरण
□□ भारत	भारत-पाक सीमा (LoC)	२००३, २०२१	द्विपक्षीय समझौता कई बार उल्लंघन, लेकिन प्रयास जारी
□□ भारत	नागालैंड/पूर्वोत्तर उग्रवाद	१९९७-अब तक	केंद्र सरकार - उग्रवादी गुट, शांति वार्ता चालू
□□ पाकिस्तान	TTP (तालिबान पाकिस्तान)	२०२१ (अस्थायी)	एकतरफा Ceasefire प्रयास असफल, फिर संघर्ष बढ़ा
□□ रूस	यूक्रेन संघर्ष	२०१४-२०22+	Minsk समझौते, UN मध्यस्थता बार-बार उल्लंघन
□□ यूक्रेन	रूस-यूक्रेन युद्ध	कई प्रयास	मानवीय Ceasefire, अंतरराष्ट्रीय प्रयास आंशिक सफलता
□□ इज़राइल	हमास (गाज़ा पट्टी)	२०२१, २०२३	मिस्र, क़तर, UN की मध्यस्थता अक्सर उल्लंघन
□□ अमेरिका	अफगानिस्तान (तालिबान)	२०२०	Doha समझौता (सीमित संघर्षविराम)बाद में वापसी और अशांति
□□ सीरिया	गृहयुद्ध	२०१६+	रूस-अमेरिका मध्यस्थता, UN सीमित सफलता
□□ दक्षिण सूडान	गृहयुद्ध	२०१८	अफ्रीकी यूनियन, क्षेत्रीय संगठन स्थायी Ceasefire प्रयास
□□ इथियोपिया	Tigray संकट	२०२२	अफ्रीकी यूनियन के प्रयास, शांति वार्ता चालू
□□ कोरिया	कोरियन युद्ध	१९५३	युद्धविराम (Armistice), USA/UN कोई औपचारिक शांति समझौता नहीं

टोनॉमी' की परीक्षा होगी।

२. अन्य देशों पर प्रभाव

* अमेरिका और पश्चिमी देशः अमेरिका इज़राइल का प्रमुख सहयोगी है। युद्ध बढ़ने पर सीधा हस्तक्षेप कर सकता है। इससे यूक्रेन-रूस युद्ध के बीच दूसरा मोर्चा खुल सकता है। यूरोप की ऊर्जा निर्भरता भी फिर संकट में पड़ सकती है।

*चीनः चीन मध्य-पूर्व में बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के तहत कई परियोजनाएं चला रहा है। क्षेत्रीय अस्थिरता से चीन के निवेश और सप्लाई चेन पर असर पड़ेगा। वह शांति स्थापना में मध्यस्थ की भूमिका निभाना चाहेगा।

* वैश्विक बाजार

शेयर बाज़ारों में गिरावट, सोने की कीमतों में उछाल, निवेशकों में डर खाद्य आपूर्ति और कंटेनर यातायात प्रभावित, वैश्विक स्तर पर आर्थिक मंदी का खतरा

ईरान-इज़राइल युद्ध से भारत की अर्थव्यवस्था और रोजगार पर प्रभाव

ईरान-इज़राइल युद्ध जैसे अंतरराष्ट्रीय संकट का प्रभाव भारत की अर्थव्यवस्था और रोजगार पर अप्रत्यक्ष लेकिन गंभीर रूप से पड़ सकता है। हालांकि यह युद्ध भारत में नहीं हो रहा, लेकिन वैश्विक परिदृश्य से जुड़ी वजहों से भारत में बेरोज़गारी बढ़ने की आशंका है। भारत में अधिकांश उद्योग (जैसे ट्रांसपोर्ट, कृषि, निर्माण) ईंधन पर निर्भर हैं।

* ईरान-इज़राइल युद्ध के कारण यदि कच्चे तेल की कीमतें $१००-१२०/बैरेल तक जाती हैं, तो उत्पादन लागत बढ़ेगी, कंपनियाँ छँटनी (layoffs) कर सकती हैं नई नौकरियाँ रुकेंगी, अनुमान अगर तेल कीमतें २०% तक बढ़ती हैं, तो २-३ करोड़ असंगठित कामगारों की आजीविका खतरे में आ सकती है।

* खाड़ी देशों में काम करने वाले ८५ लाख भारतीय हैं। अगर युद्ध खाड़ी तक फैला, तो लाखों को भारत लौटना पड़ सकता है, जिससे घरेलू रोजगार पर दबाव और बढ़ेगा। ये लोग कम-से-कम १-२ लाख प्रति माह भेजते हैं, जो ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था को संभालता है। अनुमानः अगर ५ लाख प्रवासी लौटते हैं, तो कम से कम २५ लाख घरेलू रोजगार पर असर पड़ेगा (सीधा + परोक्ष रूप से)।

* भारत का बहुत सा निर्यात पश्चिम एशिया और यूरोप में होता है (जैसे टेक्सटाइल, दवाइयाँ, इंजीनियरिंग सामान)। युद्ध से शिपिंग बाधित होगी और ऑर्डर घटेंगे। इससे MSME सेक्टर (जो ११ करोड़ लोगों को रोजगार देता है) पर असर पड़ेगा। अनुमानः MSME में १०-१५% तक अस्थायी बेरोज़गारी बढ़ सकती है, खासकर महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, तमिलनाडु में।

* सरकार को अगर प्रवासियों की वापसी, तेल सब्सिडी, और आपात हालात से निपटना हो तो रोज़गार गारंटी योजनाओं (MNREGA, Skill India) पर खर्च घट सकता है. नई सरकारी नौकरियाँ स्थगित हो सकती हैं

संभावित आंकड़ा वर्तमान में (२०२५ के अनुसार): भारत की बेरोज़गारी दरः ७.५% से ८.२%. युद्ध और तेल संकट के असर से यह ९%-१०% तक जा सकती है। यानी लगभग १ करोड़ नए लोग बेरोज़गारी की कतार में आ सकते हैं। ईरान-इज़राइल युद्ध भारत की सीधी लड़ाई नहीं है, लेकिन इसके आर्थिक झटकों से भारत में बेरोज़गारी तेज़ी से बढ़ सकती है।

इसका असर निचले और मध्यम वर्ग पर सबसे ज़्यादा होगा। भारत को समय रहते योजना और लचीलापन अपनाना होगा।

भारत वैकल्पिक तेल आपूर्ति कैसे सुनिश्चित कर सकता हैः

☐☐ १. आपूर्तिकर्ता देशों में विविधता लाना (Diversification)

देश विशेषता भारत के लिए अवसर

☐☐ रूस भारी छूट (डिस्काउंटेड रेट पर तेल) २०२२ से भारत सबसे बड़ा खरीदार बना है, इस रूट को और बढ़ाया जा सकता है

☐☐ वेनेज़ुएला भारी भंडार, लेकिन अमेरिका के प्रतिबंध अमेरिका से छूट मिलने पर भारत फिर से खरीद शुरू कर सकता है

☐☐ अमेरिका शेल ऑयल उत्पादन में अग्रणी भारत ने २०२१ में भी अमेरिका से काफी कच्चा तेल खरीदा था

☐☐ नाइजीरिया अफ्रीका का बड़ा उत्पादक तेल के साथ गैस भी मिल सकती है

☐☐ मेक्सिको, ब्राज़ील लैटिन अमेरिका के विकल्प दीर्घकालीन रणनीति में उपयोगी

☐☐ २. रणनीतिक भंडार (Strategic Petroleum Reserves - SPR) का इस्तेमाल

भारत के पास लगभग ५.३ मिलियन टन का रणनीतिक तेल भंडार है (कर्नाटक, विशाखापट्टनम, ओडिशा में)। आपात स्थिति में सरकार इसे बाजार में जारी कर सकती है ताकि तेल की उपलब्धता बनी रहे। साथ ही, निजी रिफाइनरी कंपनियों (जैसे Reliance, Nayara) के पास भी निजी भंडारण होता है।

☐ ३. लॉन्ग टर्म अनुबंध (Long-Term Contracts)

भारत अन्य देशों के साथ १०-२० साल के दीर्घकालिक तेल समझौते कर सकता है ताकि नियमित आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। जैसेः UAE, रूस और सऊदी के साथ पहले भी ऐसे समझौते हुए हैं। इससे मूल्य स्थिरता भी रहती है।

☐ ४. वैकल्पिक शिपिंग मार्ग

युद्ध के समय होर्मुज़ जलडमरूमध्य बाधित हो सकता है। भारत कोः Red Sea (सुएज़ मार्ग), Cape of Good Hope जैसे वैकल्पिक मार्गों से आपूर्ति सुनिश्चित करनी होगी। यह भले महंगा हो, पर आपूर्ति बनी रह सकती है।

☐ ५. वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना (Medium-Long Term)

बायोफ्यूल, एथेनॉल, सौर ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन जैसी योजनाएं सार्वजनिक परिवहन में CNG, इलेक्ट्रिक वाहन इससे आयातित तेल पर निर्भरता कम होगी।

☐ ६. कूटनीतिक सक्रियता और ऊर्जा गठबंधनः भारत को OPEC (तेल उत्पादक देशों का समूह) और IEA (International Energy Agency) जैसे मंचों पर सक्रिय रहना होगा। साथ ही Quad, BRICS, G२० जैसे मंचों पर ऊर्जा सुरक्षा पर अंतरराष्ट्रीय सहमति बनानी होगी।

वैकल्पिक तेल आपूर्ति केवल एक व्यापारिक मसला नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता का सवाल है। भारत को तेल स्रोतों में विविधता, रणनीतिक भंडारण, कूटनीति और वैकल्पिक ऊर्जा* के संयुक्त उपाय अपनाने होंगे।

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

भयानक विमान हादसे!

आग से घटनास्थल का पारा हुआ १०००° सेल्सियस, जानवर-पक्षी जो जद में आए सब खाक

अहमदाबाद विमान दुर्घटनाः क्या यह भारत के तेजी से बढ़ते विमानन क्षेत्र के लिए संकट है (AFP)

गुजरात के अहमदाबाद से लंदन जा रहा एअर इंडिया का विमान उडान भरते ही भयावह हादसे में कैश हो गया और डॉक्टरों के छोत्रावास व नर्सिंग स्टाफ के आवासीय परिसर से टकरा गया। हादसे में कुल २६६ लोगों की मौत हो गई। विमान में चालक देख समेत कुल २४२ लोग सवार थे, जिनमें से २४१ लोगों की मौत हो गई। विमान से कूद जाने के कारण सिर्फ एक यात्री जिंदा बचा है। विमान में सवार गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी की भी मौत हो गई। १९९६ के बाद देश में यह दूसरा बडा विमान हादसा है। हादसे की जांच विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो करेगा।

अहमदाबाद में हुए एयर इंडिया के विमान हादसे के बाद विचलित करने वाला मंजर सामने आया है। अहमदाबाद के मेघाणीनगर में हुए इस हादसे में अब तक २६५ लोगों के शव अहमदाबाद सिविल अस्पताल ले जाए जा चुके हैं। वहीं, विमानन कंपनी एयर इंडिया ने भी पुष्टि की है कि हादसे का शिकार हुए विमान में सवार २४२ लोगों में से २४१ की मौत हो चुकी है। वहीं, जीवित बचे एक मात्र शख्स का इलाज चल रहा है। हादसे की भयावहता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि सड़कों पर शव बिखरे पड़े थे। ज्यादातर शव बुरी तरह से झुलस गए। उनकी पहचान भी नहीं हो पा रही है। वहीं, हादसे के बाद से लगातार राहत और बचाव कार्य चल रहा है। इस बीच सामने आया है कि हादसे के कारण घटनास्थल का तापमान इतना ज्यादा बढ गया कि बचाव कार्य बेहद कठिनता से हो पा रहा है।

विस्फोट के बाद दुर्घटनाग्रस्त विमान के आसपास तापमान १००० डिग्री सेल्सियस पहुंच जाने के कारण बचाव कार्य में काफी मुश्किलें आईं। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार देर रात बताया कि घटनास्थल पर ताप इतना बढ़ गया कि यहां तक कि जानवरों और पक्षियों तक को भागने का मौका नहीं मिला और सभी जलकर

खाक हो गए। राज्य आपदा मोचन बल के एक सदस्य ने कहा कि वह करीब आठ साल से आपदा की स्थिति को देख रहे हैं, लेकिन ऐसी आपदा कभी नहीं देखी। उन्होंने कहा, हम यहां पीपीई किट के साथ पहुंचे, लेकिन तापमान इतना ज्यादा था कि बचाव कार्य मुश्किल हो गया। एअर इंडिया की उड़ान संख्या एआई-१७१ बृहस्पतिवार को अहमदाबाद से लंदन गैटविक जा रही थी। विमान ने अहमदाबाद के रनवे-२३ से १३:३९ बजे उड़ान भरी थी। विमान में १६९ भारतीय, ५३ ब्रिटिश, एक कनाडाई और सात पुर्तगाली नागरिक सवार थे। विमान में दो पायलट एवं १० केबिन क्रू थे। दो इंजन वाला यह विमान उड़ान भरने के कुछ मिनट बाद ही तेजी से नीचे की ओर आने लगा और सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के पास मेघानीनगर के सिविल अस्पताल और बीजे मेडिकल कॉलेज के पांच मंजिला छात्रावास पर गिर गया।

हादसे के वक्त विमान में १,२६,९०७ लीटर ईंधन था। उड़ान के समय उसकी ऊंचाई ६२५ फीट थी। विमान क्रैश होते ही उसके ईंधन ने आग पकड़ ली। तेज धमाके से उसके परखच्चे उड़ गए, विमान ज्वालामुखी की तरह धधक उठा। घने काले धुएं का गुबार काफी दूर तक देखा गया। भयावहता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि सड़कों पर शव बिखरे पड़े थे। ज्यादातर शव बुरी तरह से झुलस गए। उनकी पहचान भी नहीं हो पा रही है

Plane Crash में एकमात्र जीवित बचे विश्वासकुमार रमेश...

लंदन के लिए रवाना हुआ बोइंग ७८७-८ ड्रीमलाइनर गुरुवार दोपहर अहमदाबाद से उड़ान भरने के कुछ क्षण बाद ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया था जिससे विमान में सवार लगभग सभी लोग और जमीन पर मौजूद कई लोग मारे गए। यात्रियों में विश्वासकुमार और उनके भाई अजयकुमार रमेश भी शामिल थे। मात्र ३० सेकंड के भीतर, भाग्य ने दोनों भाइयों को सदा के लिए जुदा कर दिया। सीट 11A पर बैठे विश्वासकुमार किसी तरह मलबे से लहूलुहान, स्तब्ध और जीवित बाहर निकल आए। उनके भाई, जो उनके सामने की सीट 11J पर बैठे थे, वह इस हादसे में मारे गये। विश्वासकुमार रमेश एक ब्रिटिश नागरिक हैं जोकि भारत के दीव के रहने वाले हैं। वह पिछले १५ वर्षों से यूनाइटेड किंगडम में रह रहे हैं। वह और उनके भाई अजयकुमार दीव के बुचरवाड़ा और वनकबारा गांवों से ताल्लुक रखते थे और उन १५ यात्रियों में शामिल थे जो इन गांवों से इस उड़ान में सवार थे। लंदन में, दोनों भाई परिधान (गारमेंट) व्यवसाय चलाते थे और साथ ही दीव में एक मत्स्य पालन व्यवसाय (फिशिंग एंटरप्राइज) का भी संचालन करते थे।

अहमदाबाद सिविल अस्पताल के वार्ड B7, बेड नंबर ११ से विश्वासकुमार ने अपने चचेरे भाई धीरेंद्र सोमाभाई को फोन पर बताया कि विमान ने एक अजीब-सी आवाज की और ऐसा लगा जैसे वह हवा में ठहर गया हो, तभी पायलट की सिहरन भर देने वाली आपात कॉल आई– 'मेडे! मेडे! मेडे!' इसके बाद उन्हें ज़्यादा कुछ याद नहीं है– केवल इतना कि उन्होंने किसी दरवाज़े से छलांग लगाई और फिर जब होश आया तो वे मलबे और अफरातफरी के बीच पड़े थे। कल सामने आये उनके वीडियो में उन्हें देखा जा सकता है कि वह घायल अवस्था में यह कहते हुए कि प्लेन फटयो छे प्लेन फटयो छे कहते हुए जा रहे हैं। बाद में उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उनकी हालत खतरे से बाहर बताई गयी। बताया जा रहा है कि उनकी पत्नी लंदन में ही रहती हैं और वह अपने परिवार के पास जा रहे थे।

जानवर-पक्षी जो जद में आए सब जल गए

आठ सालों में नहीं देखी ऐसी आपदा

हादसे के वक्त विमान में था १,२६,९०७ लीटर ईंधन

टाटा समूह ने पीड़ितों के परिवारों को १ करोड़ रुपये की सहायता

अहमदाबाद प्लेन हादसा- २११ DNA मैच, १८९ शव सौंपे गए

अहमदाबाद प्लेन हादसे में जान गंवाने वाले अब तक २११ मृतकों की पहचान DNA टेस्ट से हो चुकी है और १८९ शव उनके परिवारों को सौंप दिए गए हैं। यह जानकारी गुजरात के स्वास्थ्य मंत्री रुशिकेश पटेल ने गुरुवार को दी।

सिविल अस्पताल के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डॉ. राकेश जोशी ने बताया कि अब तक जिन शवों को सौंपा गया, उनमें १३१ भारतीय नागरिक, ४ पुर्तगाली, ३० ब्रिटिश नागरिक, १ कनाडाई और ६ गैर यात्री शामिल हैं। हादसे के बाद ७१ घायलों को सिविल अस्पताल में भर्ती किया गया था, जिनमें से अब केवल ७ मरीज इलाज करा रहे हैं। बाकी मरीजों को छुट्टी दे दी गई है।

एअर इंडिया कल से १५% अंतरराष्ट्रीय उड़ानें घटाएगी

एअर इंडिया अंतरराष्ट्रीय वाइडबॉडी विमानों की उड़ान १५% कम करेगा। व्यवस्था २० जून से लागू होगी और जुलाई मध्य तक जारी रहेगी। यह निर्णय AI171 विमान हादसे के छह दिन बाद लिया गया है।

मकसद विमान बेड़े की सुरक्षा जांच और तकनीकी निरीक्षण है। इससे कंपनी के पास इंटरनेशनल रिजर्व एयरक्राफ्ट की उपलब्धता रहेगी, ताकि आकस्मिक व्यवधान से निपटा जा सके। कंपनी ने कहा है, जिन यात्रियों की उड़ानें प्रभावित होंगी, उन्हें वैकल्पिक उड़ानों से भेजेंगे या पूरा रिफंड देंगे।

टाटा समूह ने पीड़ितों के परिवारों को १ करोड़ रुपये की सहायता देने की घोषणा की

सरदार वल्लभभाई पटेल अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरने के बाद बोइंग ७८७ ड्रीमलाइनर (एआई१७१) शहर के सिविल अस्पताल और बीजे मेडिकल कॉलेज में दुर्घटनाग्रस्त हो गया और उसमें आग लग गई। टाटा समूह ने अहमदाबाद विमान दुर्घटना में मारे गए प्रत्येक पीड़ित के परिवार को एक करोड़ रुपये मुआवजा देने की घोषणा की है। २४२ यात्रियों और चालक दल को ले जा रहा एयर इंडिया का विमान गुरुवार दोपहर उड़ान भरने के कुछ ही मिनटों बाद अहमदाबाद के एक मेडिकल कॉलेज परिसर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने कहा, 'हम घायलों के चिकित्सा व्यय को भी वहन करेंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि उन्हें सभी आवश्यक देखभाल और सहायता मिले। इसके अतिरिक्त, हम बी.जे. मेडिकल के छात्रावास के निर्माण में भी सहायता प्रदान करेंगे।'

बयान में कहा गया, 'एयर इंडिया फ्लाइट १७१ से जुड़ी दुखद घटना से हम बहुत दुखी हैं। इस समय हम जो दुख महसूस कर रहे हैं, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं उन परिवारों के साथ हैं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है और जो घायल हुए हैं।' बयान में कहा गया, 'एयर इंडिया फ्लाइट १७१ से जुड़ी दुखद घटना से हम बहुत दुखी हैं। इस समय हम जो दुख महसूस कर रहे हैं, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं उन परिवारों के साथ हैं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है और जो घायल हुए हैं।'

टाटा समूह के चेयरमैन ने यह भी आश्वासन दिया कि कंपनी इस दुखद घटना से प्रभावित लोगों के साथ खड़ी है। दुर्घटना के बाद अहमदाबाद स्थित एयर ट्रैफिक कंट्रोल ने कहा कि दोहरे इंजन वाले विमान के पायलट ने उड़ान भरने के तुरंत बाद दोपहर १:३९ बजे 'मेडे' संकट कॉल जारी किया, जो पूर्ण आपातकाल को दर्शाता था। इस बीच, विमान के ब्लैक बॉक्स की खोज जारी है, जो यह समझने के लिए आवश्यक है कि अंतिम महत्वपूर्ण क्षणों में क्या हुआ था।

Vijay Rupani जिस नंबर (१२०६) को जिंदगी भर अपने लिए लकी नंबर मानते रहे उसी तारीख को उनकी दर्दनाक मौत हो गई

पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी उस एअर इंडिया उड़ान में सवार थे जो अहमदाबाद से उड़ान भरने के कुछ पलों बाद ही दुर्घटनाग्रस्त हो गई। वह लंदन जा रहे थे, जहां उनकी पत्नी और बेटी उनका इंतजार कर रही थीं। गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी के लिए १२०६ जिंदगी भर लकी नंबर की तरह रहा। लेकिन १२ तारीख और छठे महीने को उनकी दर्दनाक मौत के चलते यह नंबर उनके लिए दुर्भाग्य का प्रतीक बन गया। हम आपको बता दें कि विजय रूपाणी १२०६ नंबर के प्रति गहरी आस्था रखते थे। उनके सभी वाहनों- स्कूटर से लेकर कार तक की नंबर प्लेट पर १२०६ अंक होता था। उनके मित्र कहते हैं कि यह हमेशा उनका लकी चार्म रहा है। लेकिन किस्मत ने उनके साथ इसी नंबर के जरिये क्रूर खेल खेल दिया। १२ जून, यानी १२/०६ को उनकी जीवन यात्रा समाप्त हो गई।

सबसे सुरक्षित सीट कौन-सी होती है, ११ पर कोई बैठना नहीं चाहता, लेकिन इसी पर बैठे शख्स की बची जान

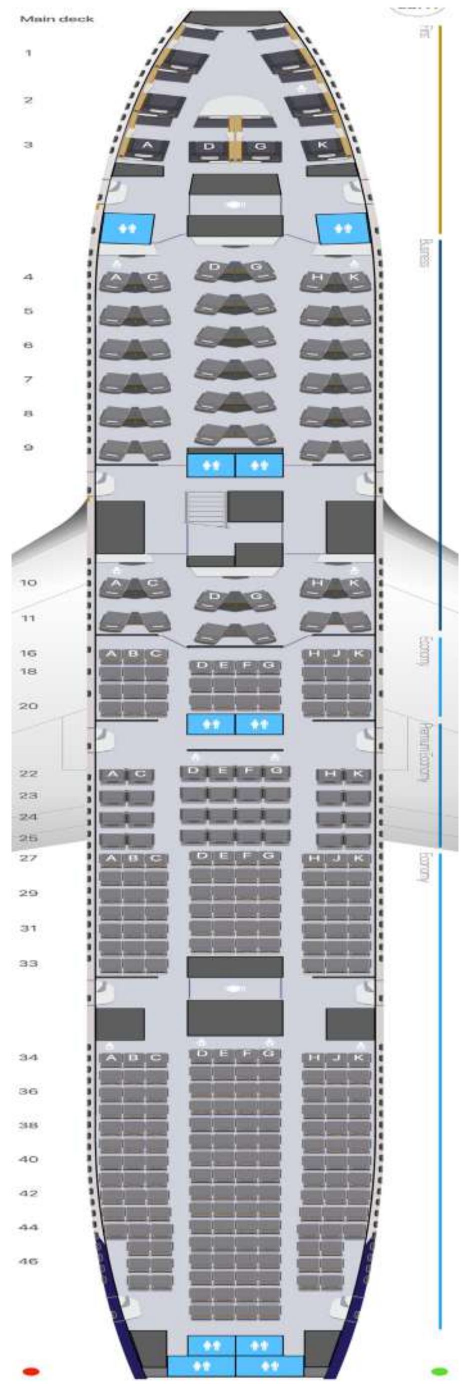

किसी भी हादसे के बाद सुरक्षा और सुरक्षा उपायों को लेकर गंभीर चर्चा होती है। अहमदाबाद एअर इंडिया विमान हादसे के बाद भी सुरक्षा को लेकर बातें हो रही हैं। यात्री विमान को लेकर हमेशा एक सवाल उठता है कि आखिर यात्री विमान की सबसे सुरक्षित सीट कौन-सी होती है। यदि हवाई यात्री की बात करें तो हां, हवाई यात्रा दुनिया के सबसे सुरक्षित परिवहन तरीकों में से एक मानी जाती है।

२०२३ को अब तक का दूसरा सबसे सुरक्षित वर्ष माना गया है, जैसा कि एविएशन सेफ्टी नेटवर्क डेटाबेस में दर्ज घटनाओं से पता चलता है। २०२३ में कुल ३.५ करोड़ उड़ानों में से केवल १,२१३ गंभीर घटनाएं, १३४ दुर्घटनाएं, ५ घातक दुर्घटनाएं और १०५ मौतें हुईं। पिछले पांच वर्षों में औसतन हर साल केवल १३ दुर्घटनाएं और ३०० मौतें होती रही हैं। आइए अब असली मुद्दे पर आते हैं कि विमान की सबसे सुरक्षित सीट कौन सी होती है।

कई अध्ययनों के अनुसार विमान में कौन-सी सीट पर बैठा जाता है, उससे आपात स्थिति में जीवित रहने की संभावना प्रभावित हो सकती है। विमान में कौन-सी जगह सबसे सुरक्षित मानी जाती है? अमेरिका के नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड ने १९७१ से २० विमान दुर्घटनाओं का विश्लेषण किया और पाया कि पीछे की सीटों पर बैठने वालों की जीवित रहने की संभावना ६९% थी। सामने बैठने वालों की संभावना ४९%। विंग (पंख) के पास वालों की संभावना ५९% थी।

ऊग्स मैगजीन द्वारा की गई FAA (अमेरिका की एविएशन अथॉरिटी) की एक रिपोर्ट के अनुसार विमान के पीछे मिडल सीट पर बैठने वालों की मौत की दर केवल २८% थी, जबकि विमान के बीच की पंक्तियों की आइल सीट पर मौत की दर ४४% तक थी। CNN की रिपोर्ट के मुताबिक, मिडल सीट इसलिए ज्यादा सुरक्षित होती है क्योंकि यात्रियों के दोनों ओर अन्य लोग मौजूद रहते हैं जो बफर का काम करते हैं। दुर्घटना का प्रकार और प्रभाव का स्थान सीट की सुरक्षा को प्रभावित करता है। १९८९ में यूनाइटेड फ्लाइट २३२ के हादसे में २६९ में से १८४ लोग विमान के अगले हिस्से में बैठकर बच गए थे। अगर विमान पहाड़ से टकरा जाए या नाक की ओर समुद्र में गिर जाए, तो बचने की संभावना और घट जाती है।

FAA का मानना है कि कई दुर्घटनाओं में जीवित बचने वालों और मरने वालों के स्थान यादृच्छिक (रैंडम) होते हैं, इसलिए कोई भी सीट पूर्णतः 'सुरक्षित' नहीं कही जा सकती। अहमदाबाद एअर इंडिया विमान हादसे में भी सीट का फैक्टर सामने आया है। आमतौर पर ११ नंबर सीट पर कोई बैठना नहीं चाहता, क्योंकि यह सीट बीच में पड़ती है, इसलिए लोगों को विमान से बाहर निकलने में परेशानी होती है लेकिन आपको हैरानी होगी कि अहमदाबाद विमान हादसे में एक ही शख्स जिंदा बचा है और उसकी सीट 11A थी जो कि इमरजेंसी विंडो वाली सीट थी।

३ दिन में ६ फ्लाइट प्रभावित हुईं... इनमें तीन एयर इंडिया की

अहमदाबाद में हुए प्लेन क्रैश के ५ दिन बाद अहमदाबाद से लंदन जा रही एअर इंडिया की पहली फ्लाइट कैंसिल कर दी गई है। इसके पीछे तकनीकी खामी को वजह बताया गया है। फ्लाइट संख्या AI-159 अहमदाबाद से दोपहर १:१० बजे लंदन के लिए उड़ान भरने वाली थी। जानकारी के मुताबिक, फ्लाइट के टेकऑफ से कुछ घंटे पहले ही इस तकनीकी खराबी का पता चला। आज की फ्लाइट कल रिशेड्यूल की जाएगी। इसके चलते यात्री परेशान हो रहे हैं। एक यात्री ने कहा, 'इस तरह से जनता को परेशान मत करो। यहां आने के बाद आप बताते हैं कि फ्लाइट रद्द कर दी गई है। अब २५० लोग क्या करेंगे? कहां रहेंगे। एयरलाइंस की तरफ से कोई उचित व्यवस्था नहीं है।'

१७ जूनः एअर इंडिया की फ्लाइट से पैसेंजर्स को उतारा गया सैन फ्रांसिस्को से मुंबई जा रही एयर इंडिया की फ्लाइट में सोमवार रात को तकनीकी खराबी आ गई, जिसके चलते यात्रियों को मंगलवार सुबह कोलकाता एयरपोर्ट पर प्लेन से उतारना पड़ा। फ्लाइट नंबर AI180 कोलकाता होते हुए मुंबई जा रही थी। बोइंग ७७७-२00LR (वर्ल्डलाइनर) विमान १७ जून को रात १२:४५ बजे समय पर कोलकाता पहुंचा था। इसे मुंबई के लिए रात २:00 बजे रवाना होना था। विमान के बाएं इंजन में तकनीकी खराबी आने के कारण टेकऑफ में देरी हुई। इसके बाद सुबह करीब ५:२० बजे कैप्टन ने यात्रियों से कहा गया कि वे प्लेन से नीचे उतर जाएं। उन्होंने बताया कि यह फैसला फ्लाइट सेफ्टी को ध्यान में रखते हुए लिया गया है।

१७ जूनः इंडिगो विमान में बम की सूचना

मस्कट (ओमान) से कोच्चि होते हुए दिल्ली जा रही इंडिगो की फ्लाइट को बम से उड़ाने की धमकी के बाद नागपुर एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग करवाई गई है। एयरलाइंस को सूचना मिली थी कि विमान में बम रखा गया है। इसके बाद फ्लाइट को नागपुर डायवर्ट किया गया और लैंड कराया गया। नागपुर के DCP लोहित मातानी ने बताया कि सभी यात्रियों को सुरक्षित विमान से उतार लिया गया है और विमान की तालाशी ली जा रही है। हालांकि, अभी तक कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला है।

१६ जूनः एअर इंडिया की दो फ्लाइट्स को वापस लौटना पड़ा

पहली फ्लाइटः हॉन्गकॉन्ग से दिल्ली आ रही एअर इंडिया की फ्लाइट (नंबर AI315) वापस लौट गई थी। इसमें तकनीकी खराबी की बात सामने आई थी। यह उड़ान बोइंग ७८७-८ ड्रीमलाइनर की थी। दूसरी फ्लाइटः दिल्ली से रांची जाने वाली एअर इंडिया एक्सप्रेस की एक फ्लाइट को संदिग्ध तकनीकी समस्या के कारण उड़ान भरने के तुरंत बाद वापस दिल्ली डायवर्ट कर दिया गया। बोइंग ७३७ मैक्स ८ विमान को शाम ६:२० बजे रांची के बिरसा मुंडा हवाई अड्डे पर उतरना था।

१५ जूनः ब्रिटिश एयरवेज और लुफ्थांसा एयरलाइन की दो फ्लाइट्स वापस लौटीं

पहली फ्लाइटः ब्रिटिश एयरवेज के चेन्नई आ रहे बोइंग ७८७-८ ड्रीमलाइनर को तकनीकी खराबी के चलते लौटना पड़ा। दूसरी फ्लाइटः लुफ्थांसा एयरलाइन (जर्मनी) के बोइंग ७८७-९ ड्रीमलाइनर को बम से उड़ाने की धमकी मिली थी। इसके चलते प्लेन को लैंडिंग की परमिशन नहीं मिली और लौटना पड़ा। रविवार को लखनऊ में लैंडिंग के दौरान फ्लाइट से चिनगारी निकली लखनऊ के चौधरी चरण सिंह एयरपोर्ट पर रविवार सुबह सऊदी अरबिया एयरलाइंस की फ्लाइट SV-3112 की लैंडिंग के दौरान पहिए से चिनगारी और धुआं निकलने लगा। पायलट ने तुरंत एयर ट्रैफिक कंट्रोलर को इसकी सूचना दी। इस दौरान विमान में हजयात्री बैठे हुए थे। पायलट ने तुरंत स्थिति को भांपते हुए विमान को रोक दिया, जिससे बड़ा हादसा टल गया। एयरपोर्ट की फायर टीम ने मौके पर पहुंचकर फोम और पानी का छिड़काव किया। करीब २० मिनट की मशक्कत के बाद स्थिति पर पूरी तरह काबू पाया। घटना का वीडियो सोमवार सुबह सामने आया।

विमान शनिवार रात ११:३० बजे जेद्दा एयरपोर्ट से हज यात्रियों को लेकर रवाना हुआ था। इसमें क्रू मेंबर्स समेत २५० यात्री सवार थे। रविवार सुबह ६:३० बजे विमान लखनऊ पहुंचा। रनवे पर लैंडिंग के बाद जब विमान टैक्सी-वे पर आ रहा था, तभी यह घटना हुई।

तीन दिन पहले एअर इंडिया फ्लाइट में ५ घंटे बिना AC के रहे पैसेंजर एअर इंडिया एक्सप्रेस की

कोलकाता एयरपोर्ट पर विमान के इंजन की जांच की जा रही है।

दुबई से जयपुर आने वाली फ्लाइट IX-१९६ में पैसेंजर्स को ५ घंटे से ज्यादा समय तक बिना एयर कंडीशनर (AC) के बैठाए रखा गया। इस दौरान उन्हें पीने का पानी या अन्य किसी तरह की मदद नहीं मिली। इसका वीडियो सोमवार को सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। फ्लाइट में १५० से ज्यादा पैसेंजर थे। फ्लाइट १३ जून की शाम ७:२५ बजे दुबई से जयपुर के लिए रवाना होना था, लेकिन तकनीकी खराबी की वजह से यह रात १२:४४ बजे उड़ान भर सकी। जयपुर एयरपोर्ट पर

एअर इंडिया ड्रीमलाइनर का ब्लैक बॉक्स अमेरिका भेजा जाएगाः देश में डेटा रिकवरी मुमकिन नहीं...

अहमदाबाद में १२ जून को क्रैश हुए एअर इंडिया विमान का ब्लैक बॉक्स जांच के लिए अमेरिका भेजा जाएगा है। क्रैश हुए बोइंग ७८७-८ ड्रीमलाइनर विमान का ब्लैक बॉक्स क्रैश के अगले दिन ही रिकवर कर लिया गया था। विमान में आग लगने के बाद ब्लैक बॉक्स इतना डैमेज हो चुका है कि उससे डेटा रिकवर करना मुश्किल है। इसलिए उसे जांच के लिए अमेरिका भेजने का फैसला लिया गया है।

ब्लैक बॉक्स के २ हिस्से कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर (CVR) और फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर (FDR) को हीट और आग से नुकसान पहुंचा है। देश में ऐसी कोई लैब नहीं है, जहां डेटा रिकवर किया जा सके। इसी वजह से अब इन्हें अमेरिका की नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड (NTSB) की लैब में भेजने का फैसला किया गया है। इसके साथ सरकारी अफसर भी जाएंगे ताकि सुरक्षा और गोपनीयता बनी रहे।

इसे ब्लैक बॉक्स क्यों कहते हैं?

'ब्लैक बॉक्स' नाम को लेकर कई बातें कही जाती हैं। एक मान्यता है कि पहले इसके अंदर का हिस्सा काला होता था, इसलिए इसे यह नाम मिला। दूसरी राय यह है कि हादसे के बाद आग से जलकर इसका रंग काला हो जाता है, इसलिए लोग इसे 'ब्लैक बॉक्स' कहने लगे।

ब्लैक बॉक्स असल में ओरेंज रंग का होता है और बॉक्स जैसा नहीं दिखता। यह अलग-अलग आकार का हो सकता है–जैसे गोल, बेलनाकार या गुंबद जैसा। इसका आकार इतना बड़ा होता है कि प्लेन के मलबे में आसानी से मिल सके।

अगर विमान पानी में गिरता है तो ब्लैक बॉक्स का अंडरवाटर बीकन पानी छूते ही सिग्नल भेजना शुरू कर देता है। अगर हादसा जमीन पर होता है तो इसका चमकीला नारंगी रंग इसे ढूंढने में मदद करता है।

ब्लैक बॉक्स को विमान के सबसे सुरक्षित हिस्से, आमतौर पर टेल सेक्शन में रखा जाता है। यह टाइटेनियम या स्टेनलेस स्टील से बना होता है। ११०० डिग्री सेल्सियस तापमान व समुद्र की गहराई में दबाव को झेल सकता है। पानी में गिरने पर यह १४,००० फीट गहराई तक से सिग्नल भेज सकता है। कुछ हादसों में ब्लैक बॉक्स ढूंढने में बहुत समय लगता है। कई बार ऐसा भी हो सकता है कि नहीं मिले। उदाहरणः - श्रीविजया एयर जेट (९ जनवरी २०२१): करीब ३ दिन में मिल गया। - एयर फ्रांस ४४७ (१ जून २००९): ६९९ दिन बाद मिला। - मलेशिया एयरलाइंस ३७० (८ मार्च २०१४): अब तक नहीं मिला।

दिल्ली में हाल ही में DFDR & CVR लैब की शुरुआत हुई है, जहां ब्लैक बॉक्स से डाटा निकाला और एनालिसिस किया जा सकता है। यहीं पर इस ब्लैक बॉक्स की जांच भी की जाएगी।

दही सैंडविच

सामग्री -
ब्रेड- १० स्लाइस
दही- १ १/२ कप
बारीक कटा टमाटर- २ चम्मच
बारीक कटी शिमला मिर्च- २ चम्मच
बारीक कटी मिर्च- १
बारीक कटी धनिया पत्ती- २ चम्मच
चाट मसाला- १ चम्मच
नमक- स्वादानुसार
बटर- आवश्यकतानुसार

विधि-

दही को एक साफ सूती कपड़े में डालकर बांध लें। इस कपड़े को लटकाकर छोड़ दें ताकि दही का सारा पानी धीरे-धीरे निकल जाए। इसमें एक से डेढ़ घंटे का वक्त लगेगा। एक कटोरी में दही, टमाटर, शिमला मिर्च, धनिया पत्ती, चाट मसाला और नमक डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। ब्रेड के किनारों को काटकर हटा दें। ब्रेड के स्लाइस पर तैयार स्प्रेड को डालकर फैलाएं। ऊपर से ब्रेड का दूसरा स्लाइस रखकर हल्के हाथों से दबाएं। सारे ब्रेड से यूं ही सैंडविच तैयार कर लें। नॉनस्टिक पैन गर्म करें और उसमें हल्का-सा बटर लगाएं। सैंडविच को दोनों ओर से सुनहरा होने तक सेंक लें। सैंडविच को बीच से काटकर उसे तिकोना आकार दें। मनपसंद सॉस या चटनी के साथ सर्व करें।

ब्रोकली सब्जी

सामग्री
ब्रोकली २०० ग्राम (टुकड़ों में काटलें)
प्याज़ का पेस्ट १ चम्मच
लहसुन अदरक का पेस्ट १ चम्मच
१ टमाटर की प्यूरी
जीरा १ छोटी चम्मच
तेजपत्ता १
हल्दी पाउडर १ छोटी चम्मच
धनिया पाउडर १ चम्मच
लाल मिर्च पाउडर १ चम्मच
तेल - २ बड़े चम्मच
स्वाद अनुसार नमक
हरा धनिया थोड़ा सा

विधिः ब्रोकली की सब्जी बनाने के लिए सबसे पहले ब्रोकली के टुकड़ों को पानी में डालकर उबालें। ध्यान रहे कि ब्रोकली को ज्यादा नहीं उबालना है, वरना सब्जी में टूट सकती है। अब एक पैन में तेल डालकर गर्म करें। गरम तेल में तेजपत्ता और जीरा डालकर चटकाए। अब प्याज का पेस्ट डालकर १ मिनट मध्यम आंच पर भूनें। अब लहसुन अदरक का पेस्ट डाल और १ मिनट भूनें। जब मसाले भून चुके हो तब टमाटर प्यूरी डालें और साथ ही हल्दी, नमक, मिर्च पाउडर और धनियां पाउडर डाल कर अच्छी तरह मिलाते हुए २ मिनट पकाएं। मसालों से तेल अलग हो जाए तब उबली हुई ब्रोकली डालकर हल्के हाथ से मिलाते रहे। अब थोड़ा ग्रेवी के लिए पानी मिला सकते हैं और मध्यम आंच पर ५-७ मिनट पकने दें। ब्रोकली की सब्जी बनकर तैयार है। इसमें कटा हुआ हरा धनिया डालकर मिला दें और गरम-गरम रोटी या पराठा के साथ सर्व करें।

अरबी का पराठा

सामग्रीः
अरबी उबली और छिली- २०० ग्राम,
प्याज- २ बड़े,
हरी मिर्च- २,
धनिया पत्ती- ४० ग्राम,
अमचूर पाउडर- २ चम्मच,
लाल मिर्च पाउडर- २ चम्मच,
मिक्स अचार का पेस्ट- १ चम्मच,
नमक- स्वादअनुसार,
तेल- फ्राई करने के लिए,
गेहूं का आटा- ३०० ग्राम,
भुना जीरा- १/२ चम्मच,
नमक स्वादअनुसार,
१ चम्मच बटर या तेल,
विधिः

उबली अरबी की सब्जी को छोटे पीस में काट लें। एक बर्तन में थोड़ा सा तेल गरम करें। फिर उसमें कटी प्याज, अचार का मसाला और अरबी डाल कर धीमी आंच पर चलाएं। जब प्याज पक जाए तब बर्तन के नीचे की आंच को बंद कर दें। अब अरबी में कटी हरी धनिया, हरी मिर्च, लाल मिर्च पाउडर, नमक और अमचूर पाउडर मिक्स करें। सभी सामग्रियों को मसल कर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को फ्रिज में १० मिनट तक के लिए रख दें, जिससे यह टाइट हो जाए। अब आटा गूथ लें और लोई बना कर रख लें। अब आटे को थोड़ा सा बेल कर उसके बीच में अरबी का मिश्रण भरें। मोटा पराठा बेलें और इसे बटर या तेल लगा कर तवे पर गोल्डन ब्राउन होने तक सेक लें। अब इसी तरह से अन्य पराठे सेक कर गरमा गरम सर्व करें। इसे चटनी या फिर सॉस के साथ खाया जा सकता है।

मूंग दाल टिक्की

सामग्रीः
२ कप मूंग दाल (भिगोई हुई),
१ आलू उबला हुआ,
१ शिमला मिर्च (बारीक कटी हुई),
१ प्याज (बारीक कटी हुई),
२-३ हरी मिर्च बारीक कटी हुई,
१ बड़ा चम्मच बारीक कटी हुई धनियापत्ती,
१ छोटा अमचूर पाउडर,
१ छोटा चम्मच जीरा पाउडर,
२ बड़ा चम्मच कॉर्न फ्लोर,
१ छोटा चम्मच चाट मसाला,
नमक स्वादानुसार,
तेल तलने के लिए।

विधिः मूंग दाल टिक्की बनाने के लिए सबसे पहले दाल को ३ से ४ घंटे के लिए भिगोकर रख दें। तय समय के बाद धीमी आंच में एक पैन में पानी गर्म करने के लिए रखें। पानी में पहला उबाल आते ही दाल डालकर इसे १ से २ मिनट के लिए उबाल लें। दाल के उबलने के बाद इसे आलू, हरी मिर्च और धनिया पत्ती के साथ मिक्सर जार में डालकर महीन पीस लें। अब सभी सामग्रियों को तैयार पेस्ट के साथ मिक्स कर लें और हथेलियों को चिकना कर इनकी टिक्कियां बना लें। मीडियम आंच में एक नॉन-स्टिक पैन पर थोड़ा सा तेल लगाकर गर्म कर लें। तेल के गर्म होते ही पैन पर टिक्कियां रखें और सुनहरा होने तक दोनों साइड से फ्राई कर लें। मूंग दाल टिक्की तैयार है। हरे धनिये की चटनी के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

मीठी चटनी

सामग्री -
इमली - १ कप
चीनी या गुड़ - १ कप
काला नमक - ३/४ छोटी चम्मच
सादा नमक - आधा छोटी चम्मच
किशमिश - १/४ कप
छुआरे - ५-६(बारीक लम्बे कतर लीजिये)
गरम मसाला - एक छोटी चम्मच
लाल मिर्च - १/४ छोटी चम्मच से कम
छोटी इलाइची - ४ -५ (छील कर पीस लें)

चीनी के घोल को छान कर, गैस पर उबालने के लिये रख दीजिये, घोल में उबाल आने के बाद किशमिश और छुआरे डाल दीजिये, घोल को गाढ़ा होने तक धीमी आग पर उबलने दीजिये, थोड़ी थोड़ी देर में चमचे से चलाते रहिये, ताकि वह तले में न लगे.इमली के गाढ़े घोल में नमक, लाल मिर्च और गरम मसाला मिला कर २ मिनिट और पका दीजिये, आग बन्द कर दीजिये, मीठी चटनी में पीसी हुई इलाइची मिला दीजिये. इमली की मीठी चटनी तैयार है. इमली की मीठी चटनी को दहीवड़ा या किसी भी चाट या परांठे के साथ खा सकते हैं.

कावड़ यात्रा ११ जुलाई से...

शिव भक्तों का पंसदीदा महीना श्रावण

कावड़ यात्रा २०२५ शुरू होने से पहले धार्मिक हिंसा या सांप्रदायिक तनाव बढ़ाने की साजिशें!

कांवड़ यात्रा श्रद्धा, भक्ति और सामाजिक सहभागिता का एक विशाल पर्व है। इसमें धार्मिक भावना के साथ साथ सामाजिक सेवा, अनुशासन, और त्याग की भावना शामिल होती है। इसे शांतिपूर्ण और गरिमामय बनाए रखना हम सबकी जिम्मेदारी है।

कांवड़ यात्रा उत्तर भारत के प्रमुख हिंदू धार्मिक त्योहारों में से एक है, जिसमें लाखों श्रद्धालु (कांवड़िये) भगवान शिव के लिए गंगाजल लाने की यात्रा पर निकलते हैं। यह यात्रा विशेष रूप से श्रावण मास (जुलाई-अगस्त) में होती है।

क्या है कांवड़ यात्रा?

कांवड़ यात्रा एक पैदल तीर्थ यात्रा होती है जिसमें श्रद्धालुः गंगाजल (गंगा नदी का जल) हरिद्वार, गंगोत्री, गौमुख, या वाराणसी से भरते हैं। उसे कांवड़ (लकड़ी की छोटी झूलेदार संरचना) में टांग कर अपने गांव/शहर के शिव मंदिर तक लाते हैं। भगवान शिव को गंगाजल अर्पित करते हैं – विशेषकर श्रावण के सोमवार (श्रावण सोमवारी) को।

कहां से शुरू होती है यात्रा?

कांवड़ यात्रा मुख्य रूप से उत्तर भारत में होती है, और प्रमुख स्थल हैंः

नदी से जल भरने का स्थल	
हरिद्वार (उत्तराखंड)	गंगा नदी
गंगोत्री	गंगा का उद्गम
सुल्तानगंज (बिहार)	उत्तरवाहिनी गंगा
वाराणसी	गंगा
देवघर (झारखंड)	जल चढ़ाने का स्थान

कांवड़िये कौन होते हैं?

कोई भी भक्त – युवा, वृद्ध, पुरुष, महिलाएं – कांवड़ यात्रा में भाग ले सकते हैं।

सफेद या भगवा कपड़े पहनते हैं, सिर पर रूमाल या पटका बांधते हैं।

पैदल चलते हैं, कुछ मोटरसाइकिल या ट्रक से भी जाते हैं (हाल में 'बुलेट कांवड़' भी चर्चित हुआ)। बोलते हैंः 'बोल बम!', 'हर हर महादेव!'

पौराणिक मान्यता

कथा के अनुसार, समुद्र मंथन के समय निकले हलाहल विष को भगवान शिव ने पी लिया था। विष के प्रभाव को शांत करने के लिए देवताओं ने गंगा जल चढ़ाया। उसी परंपरा को भक्त आज भी निभाते हैं – भगवान शिव को गंगाजल से अभिषेक करते हैं।

२०२५ में कांवड़ यात्रा

आरंभः ११ जुलाई २०२५ (श्रावण मास का आरंभ)

समाप्तिः २३ जुलाई २०२५ (श्रावण शिवरात्रि)

यात्रा लगभग १०-१४ दिन तक चलती है।

नियम और परंपराएं

कांवड़ यात्रा पूरी तरह नशामुक्त और संयमपूर्ण मानी जाती है।

जल को धरती पर नहीं रखना चाहिए। कांवड़ हमेशा लटकी रहनी चाहिए।

कांवड़िए भोजन, विश्राम और स्नान के लिए विशेष शिविरों में रुकते हैं।

यात्रा में कोई विवाद या अशिष्ट व्यवहार नहीं किया जाता – शुद्ध आचरण आवश्यक है।

सुरक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था

लाखों लोगों की भीड़ होने के कारण पुलिस, NDRF, मेडिकल टीम, ट्रैफिक कंट्रोल की तैनाती होती है। कुछ मार्गों पर रास्ता एकतरफा कर दिया जाता है। मांस और शराब की बिक्री पर रोक लगती है।

आधुनिक बदलाव

डीजे कांवड़, भगवा झंडे, बाइक पर कांवड़ आधुनिक युवा इसे उत्सव की तरह मनाते हैं। सोशल मीडिया पर लाइव स्ट्रीम, फोटो पोस्ट आदि अब आम हो गए हैं। प्रशासन ने इसके लिए कई बार नियम बनाए हैं: डीजे की ऊँचाई, रूट निर्धारित करना आदि।

विवाद और चर्चा

कुछ लोग इसे धार्मिक आस्था और शक्ति प्रदर्शन के बीच संतुलन बनाने की चुनौती मानते हैं। हाल के वर्षों में सांप्रदायिक तनाव, सड़क जाम, और डीजे विवाद भी चर्चा में रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में कावड़ यात्रा २०२५ शुरू होने से पहले धार्मिक हिंसा या सांप्रदायिक तनाव बढ़ाने की साजिशों को लेकर कई घटनाक्रम सामने आए हैं:

मुजफ्फरनगर ढाबा विवाद

- कावड़ मार्ग के एक ढाबे पर कुछ हिंदू कार्यकर्ताओं ने कर्मचारियों से आधार कार्ड मांगे। जब QR कोड स्कैन किया गया तो मालिक का नाम मुस्लिम पाया गया। इसी पर विवाद उठ खड़ा हुआ, पुलिस ने जांच शुरू की है

हाईवे पर होटल्स की पहचान मुद्दा

- विश्व हिंदू परिषद (VHP) ने आरोप लगाया कि कुछ हाईवे होटल और ढाबे हिंदू नामों का इस्तेमाल कर श्रद्धालुओं को भ्रमित कर रहे हैं। VHP मांग कर रहा है कि इन प्रतिष्ठानों का सत्यापन (verification) कराया जाए

सीएम योगी की चेतावनी और निर्देश

- काउशांबी और इतावा की हालिया घटनाओं को जातीय संघर्ष फैलाने की साजिश बताया गया। कावड़ यात्रा मार्ग पर डीजे, खुले में मांस की बिक्री पर रोक और दुकानदारों की पहचान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं

नाम-प्लेट व्यवस्था और सियासत

- दुकानदारों को अपना नाम-ठिकाना लगाना अनिवार्य किया गया। मांस-शराब के व्यापार पर सख्ती से रोक लगाई जा रही है, जिसे लेकर सुप्रीम कोर्ट में भी सवाल उठे थे

क्या है असल 'साजिश'?

ये घटनाएं संकेत देती हैं कि कावड़ यात्रा के धार्मिक माहौल का राजनीतिक और सांप्रदायिक उपयोग किया जा सकता है:

छद्म पहचान से धार्मिक आस्था को भड़काने के प्रयास।

'साम्प्रदायिक तनाव' फैलाने का आरोप (जाति व धर्म आधारित)।

VHP जैसे संगठनों के जरिए 'गैर-संपर्कित' प्रतिष्ठानों का सत्यापन और दबाव।

प्रशासन की ओर से बचाव के नाम पर सुरक्षा उपायों और पहचान जांच का।

☐ कावड़ यात्रा की तिथि और तैयारी

यात्रा शुरू होगी ११ जुलाई २०२५, समाप्त हो रही है २३ जुलाई (शिवरात्रि) तक

दिल्ली, गाजियाबाद सहित राज्यों में पंजीकरण, ट्रैफिक व्यवस्था, सड़क मरम्मत, सुरक्षा और नाम-प्लेट जैसी तैयारियां तेज की गई हैं। यहाँ कांवड़ यात्रा २०२५ से पहले या उससे जुड़ी हुई कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं (खास घटनाएँ) दी गई हैं जो सामाजिक, धार्मिक और प्रशासनिक रूप से काफी चर्चित रही हैं:

☐ १. मुजफ्फरनगर ढाबा QR स्कैन विवाद

तारीख: जून २०२५

मुजफ्फरनगर में कांवड़ मार्ग पर एक ढाबे का नाम 'पंडित जी ढाबा' था। विश्व हिंदू परिषद (VHP) के कार्यकर्ताओं ने ढाबे के कर्मचारियों से आधार कार्ड मांगा। जब QR कोड स्कैन किया गया, तो मालिक का नाम मुस्लिम निकला।

आरोप: झूठे हिंदू नाम से दुकान चलाकर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। इसके बाद वहां हंगामा और मारपीट भी हुई। पुलिस जांच में लगी है, लेकिन यह घटना सांप्रदायिक तनाव का संकेत बनी। यह घटना सोशल मीडिया और टीवी चैनलों पर तेजी से फैली।

☐ २. कांवड़ मार्ग पर नाम-प्लेट अनिवार्य

तारीख: जून २०२५

उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड सरकार ने आदेश जारी किया कि कांवड़ मार्ग पर सभी दुकानदारों को अपना नाम और पहचान स्पष्ट रूप से लगानी होगी। खुले में मांस और शराब की बिक्री पर पूर्ण रोक।

मुस्लिम व्यापारियों को लेकर अफवाहें: 'हिंदू नाम लगाकर दुकान चला रहे हैं'। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल इस मुद्दे पर सवाल उठाए थे - 'धार्मिक पहचान की शिनाख्त क्यों ज़रूरी?' इस साल यह व्यवस्था फिर से लागू हुई और कई जगह VHP ने सत्यापन की मांग की।

☐ ३. कौशांबी और इटावा की घटनाएं - 'जातीय संघर्ष की साजिश'

तारीख: मई २०२५

CM योगी आदित्यनाथ ने बयान दिया

कि कौशांबी और इटावा में जो घटनाएं हुईं, वे यूपी में जातीय हिंसा फैलाने की साजिश का हिस्सा हैं। कांवड़ यात्रा और मोहर्रम साथ आने से संवेदनशील माहौल। सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक पोस्ट डालकर माहौल बिगाड़ने की कोशिश।

☐ ४. बागपत में डीजे विवाद और FIR

तारीखः जून २०२५

बागपत जिले में कांवड़ यात्रा के लिए डीजे बजाने की अनुमति मांगी गई थी। कुछ इलाकों में प्रशासन ने मना कर दिया तो युवाओं ने विरोध किया। एक जगह डीजे जबरन बजाया गया, जिससे सांप्रदायिक झड़प का खतरा बढ़ा। FIR दर्ज हुई और DJ संचालक पर कार्रवाई की गई।

☐ ५. हाईवे ढाबों पर सत्यापन अभियान

तारीखः जून-जुलाई २०२५

VHP और बजरंग दल के कार्यकर्ता हाईवे के ढाबों की जांच करने लगे - कौन मालिक है, क्या नाम है। कुछ जगह मुस्लिम व्यापारियों से बहस, मारपीट और वायरल वीडियो सामने आए। प्रशासन ने अपील की कि सत्यापन का अधिकार केवल पुलिस के पास है। लेकिन इस अभियान से कांवड़ मार्ग पर असुरक्षा और डर का माहौल बना।

☐ प्रशासनिक प्रतिक्रियाएँ

CCTV कैमरे, ड्रोन निगरानी, ट्रैफिक कंट्रोल। 24x7 कंट्रोल रूम। महिला कांवड़ियों की सुरक्षा पर विशेष बल (Anti-Romeo Squad)~

गैर-कानूनी गतिविधियों पर NSA (राष्ट्रीय सुरक्षा कानून) लगाने की चेतावनी।

'ये सब क्यों हो रहा है?'

कांवड़ यात्रा २०२५ से पहले जिन घटनाओं और विवादों का जिक्र किया गया – जैसे कि ढाबों की पहचान पर सवाल, मुस्लिम मालिकों पर आरोप, नाम-प्लेट अनिवार्यता, डीजे विवाद – इनके पीछे एक से अधिक परतें हैं। आइए समझते हैं कि इन घटनाओं के पीछे क्या गहरे कारण हैंः

१ हिंदू धार्मिक आयोजन

कांवड़ यात्रा एक बहुत बड़ा हिंदू धार्मिक आयोजन है जिसमें लाखों श्रद्धालु शामिल होते हैं। इसमें, धार्मिक भावना तीव्र होती है, श्रद्धालु समूहों में यात्रा करते हैं, माहौल उत्सवपूर्ण और भावनात्मक होता है।

ऐसे में धार्मिक पहचान को लेकर संवेदनशीलता बहुत ज़्यादा हो जाती है। अगर कोई मुस्लिम व्यापारी 'हिंदू नाम' से ढाबा चलाता है, तो कुछ संगठन इसे 'धोखा' मानकर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की बात करते हैं।

२ राजनीतिक एजेंडा और ध्रुवीकरण

भारत में धार्मिक ध्रुवीकरण चुनावों से पहले एक आम राजनीतिक रणनीति रही है। धार्मिक आयोजनों के दौरान छोटी घटनाओं को बड़ा बनाकर जनता की भावनाएं भड़काना, बहुसंख्यक समुदाय की असुरक्षा को उजागर करना, 'हम बनाम वे' का माहौल खड़ा करना। इससे धार्मिक पहचान पर आधारित वोट बैंक को प्रभावित करना आसान होता है।

३. सोशल मीडिया + अफवाहें = भावनात्मक विस्फोट

आज WhatsApp, Facebook, Instagram पर छोटी सी घटना को भड़काऊ ढंग से फैलाया जा सकता हैः 'देखो ये ढाबा मुस्लिम का है लेकिन हिंदू नाम से चला रहा है।' 'हिंदुओं को धोखा दिया जा रहा है।' 'मांस बिक रहा है कांवड़ मार्ग पर।' इन संदेशों में भावना का उबाल, सच्चाई से ज़्यादा असर करता है।

४. प्रशासन की 'सख्ती' बनाम 'भय'

प्रशासन कहता है कि वो, सुरक्षा सुनिश्चित कर रहा है, सांप्रदायिक तनाव से बचाना चाहता है, यातायात और स्वास्थ्य का ध्यान रख रहा है। लेकिन ज़मीनी हकीकत में व्यापारी डरे हुए हैं कि कहीं उन्हें निशाना न बना लिया जाए। छोटे मुस्लिम व्यापारी, ढाबा मालिक, डीजे ऑपरेटर– संदेह की निगाह से देखे जा रहे हैं। इससे धार्मिक स्वतंत्रता और नागरिक अधिकारों पर दबाव आता है।

☐ ५. मोहर्रम और कांवड़ यात्रा साथ-साथ

इस साल मोहर्रम और कांवड़ यात्रा करीब-करीब एक ही समय पर हैं। इसका मतलब एक तरफ ताजिया जुलूस (शिया मुस्लिमों की शोक यात्रा), दूसरी ओर डीजे, नाच-गाने के साथ कांवड़ यात्रा। इससे सामंजस्य और शांति बनाए रखना मुश्किल हो जाता है। स्थानीय विवाद को सांप्रदायिक रंग मिल जाता है।

सामाजिक या राजनीतिक विश्लेषण

पारंपरिक रूप से कांवड़ यात्रा श्रद्धा और तपस्या का प्रतीक रही है। लेकिन पिछले दो दशकों में, इसका स्वरूप शक्ति-प्रदर्शन, डीजे-साउंड, और धार्मिक वर्चस्व जैसी चीज़ों से जुड़ गया है। इससे यह सिर्फ धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रदर्शन और आत्म-घोषित धार्मिक पहचान का जरिया बन गया। धार्मिक आस्था का सार्वजनिक प्रदर्शन एक ऐसी जगह बन गया है जहाँ पहचान और 'हम बनाम वे' की राजनीति पनपने लगी है।

मुस्लिम व्यापारियों के नाम, पहचान, QR कोड जैसे मुद्दे सिर्फ व्यापार नहीं, सांप्रदायिक अविश्वास को दर्शाते हैं। 'वे हमारे त्यौहारों में घुसपैठ कर रहे हैं' – ऐसा नैरेटिव बनाया जा रहा है। इस सोच से समाज में भय और असुरक्षा की भावना फैलती है – दोनों समुदायों में। समाज में सामूहिक अविश्वास गहराता है, जहाँ हर मुसलमान को संदेह की नज़र से देखा जाता है, और हर हिंदू को 'शुद्धिकरण' के नाम पर उकसाया जाता है। 'नाम-प्लेट लगाओ', 'कागज़ दिखाओ', 'QR स्कैन करो' – ये सब प्रशासनिक आदेश लग सकते हैं, लेकिन इनका सामाजिक संदेश यह है कि कोई न कोई 'संदेहास्पद' है।

नागरिकों से पहचान माँगना अब सामान्य होता जा रहा है, जिससे आम लोगों की निजता (privacy) खतरे में पड़ती है।

सामाजिक सहभागिता की जगह निगरानी और अविश्वास वाला समाज उभर रहा है। चुनावी राजनीति में धार्मिक भावनाओं का दोहन अब एक रणनीति बन चुका है। धार्मिक आयोजनों को राजनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल कर 'हिंदू खतरे में हैं' जैसा नैरेटिव गढ़ा जाता है, और 'रक्षक' के रूप में कुछ संगठन सामने आते हैं। राजनीतिक लाभ के लिए समाज का सांप्रदायिक विभाजन गहरा किया जा रहा है।

राज्य यानी पुलिस, प्रशासन, सरकार – आमतौर पर धार्मिक आयोजनों में न्याय और शांति सुनिश्चित करता है। लेकिन कई बार वो खुद एक पक्ष के दबाव में आकर कार्य करता हैः

ढाबों पर छापे, मांस बिक्री पर रोक, पहचान सत्यापन – ये सब निष्पक्ष शासन से ज़्यादा, सांस्कृतिक पक्षधरता को दर्शाते हैं। राज्य की धर्म-निरपेक्षता पर सवाल उठने लगते हैं।

आज का राष्ट्रवाद केवल संविधान और देशभक्ति तक सीमित नहीं, बल्कि धार्मिक पहचान के प्रदर्शन से जुड़ चुका है। कांवड़ यात्रा में झंडा, डीजे, नारा, भगवा रंग – ये सब प्रदर्शनात्मक राष्ट्रवाद के प्रतीक बन चुके हैं। राष्ट्र और धर्म की सीमा धुंधली हो जाती है, और भीड़ को नियंत्रित करने की बजाय उसका इस्तेमाल राजनीतिक फायदे के लिए

किया जाता है।

कांवड़ यात्रा जैसे धार्मिक आयोजन अब सिर्फ श्रद्धा का विषय नहीं रह गए हैं।

वे राजनीतिक संगठनों के लिए ध्रुवीकरण का औज़ार, प्रशासन के लिए सामाजिक नियंत्रण का माध्यम और आम नागरिकों के लिए भय और असमंजस का प्रतीक बनते जा रहे हैं। यह सिर्फ यात्रा नहीं – यह समाज के भीतर चल रहे गहरे धार्मिक, राजनीतिक और नैतिक संकट का दर्पण बन चुकी है।

मांस और शराब की बिक्री पर रोक ?

कांवड़ यात्रा के दौरान मांस और शराब की बिक्री पर रोक क्यों लगाई जाती है? यह निर्णय धार्मिक, सामाजिक और प्रशासनिक तीनों दृष्टिकोणों से लिया जाता है।

☐☐ १. धार्मिक कारणः शुद्धता और संयम की भावना

कांवड़ यात्रा एक पवित्र तपस्या और श्रद्धा का पर्व माना जाता है, जिसमेंः भक्त शिवजी के लिए गंगाजल लाते हैं,

संयम (संयमित आहार-विहार, ब्रह्मचर्य) का पालन करते हैं, पूरी यात्रा नशामुक्त और सात्विक आचरण के साथ की जाती है।

☐ ऐसे माहौल में मांस और शराब को अशुद्धता का प्रतीक माना जाता है, और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला व्यवहार समझा जाता है।

☐ २. पुराणों और लोक परंपरा का प्रभाव

शिवभक्ति की परंपरा में 'गंगाजल + बेलपत्र + संयम' को विशेष महत्व है। शास्त्रों के अनुसार, श्रावण मास मेंः

सात्विक भोजन,

संयमित दिनचर्या,

ब्रह्मचर्य और तपस्या को श्रेय दिया गया है।

इसलिए यह माना जाता है कि जहाँ शिव के भक्त श्रद्धा से जल ला रहे हों, वहाँ मांस या शराब का प्रदर्शन अपवित्रता है।

☐ ३. प्रशासनिक कारणः सुरक्षा और शांति बनाए रखना

कांवड़ यात्रा में लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं – कई बार भीड़ बेकाबू हो जाती है। अगर यात्रा मार्ग पर कहीं मांस की दुकान खुली मिल जाए, तो कुछ लोग इसे जानबूझकर 'उकसावा' समझते हैं। इससे सांप्रदायिक तनाव, झगड़े, तोड़फोड़ की आशंका रहती है। इसीलिए प्रशासन सावधानीवश कहता है 'कांवड़ मार्ग पर कुछ दिनों तक मांस और शराब की बिक्री या प्रदर्शन न हो।' यात्रा के दौरान हिंदू श्रद्धालुओं की भावना को आहत न हो – इस सोच से यह रोक लगती है।

प्रशासन का उद्देश्य होता है कि किसी समुदाय विशेष की दुकानें बंद न हों,परंतु प्रदर्शन या गंध से कोई विवाद न हो। इसलिए कई जगहों पर दुकानें खुलती हैं लेकिन पर्दा लगा होता है, या कुछ समय के लिए बंद रखी जाती हैं।

कुछ विवादास्पद पहलू भी हैं यह रोक कई बार सिर्फ निर्देश के रूप में होती है, लेकिन दबाव के तहत सख्ती भी हो जाती है। कुछ लोगों का मानना है कि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और रोज़गार के अधिकार का उल्लंघन है। सुप्रीम कोर्ट ने भी कहा है कि 'धार्मिक भावना के नाम पर सबकी आज़ादी सीमित नहीं की जा सकती।'

कांवड़ यात्रा के दौरान मांस और शराब की बिक्री पर रोक का स्थानीय रोज़गार (employment) और व्यापार (business) पर सीधा और कभी-कभी गंभीर प्रभाव पड़ता है – विशेषकर उन लोगों पर जिनकी आजीविका इन्हीं व्यवसायों पर निर्भर है।

आइए इसे कुछ पहलुओं से गहराई से समझते हैंः

☐ १. प्रभावित व्यवसाय

व्यापार का प्रकार	प्रभाव
☐ मांस की दुकानें (कसाई, चिकन-मटन विक्रेता)	आमदनी में भारी गिरावट, कई दिन दुकान बंद रखनी पड़ती है
☐ शराब दुकानेंपूरी तरह बंद करवा दी जाती हैं,	नुकसान प्रशासन से नहीं वसूला जा सकता
☐☐ होटल/ढाबे (जो नॉनवेज परोसते हैं)	भोजन का मेनू सीमित करना पड़ता है, ग्राहक घट जाते हैं
☐ मांस/शराब सप्लाई चेन (cold storage, transport)	लॉजिस्टिक रुक जाता है; सप्लाई फंस जाती है

☐ २. आर्थिक नुकसानः कुछ आंकड़े और अनुमानों के आधार पर

क्षेत्र	औसत अनुमानित हानि (श्रावण महीने में)
मांस विक्रेता (छोटे शहर)	☐१०,००० - ☐५०,०००
ढाबा/होटल (नॉनवेज सर्व करने वाले)	☐२०,००० - ☐१ लाख
शराब विक्रेता (लाइसेंसधारी दुकानें)	☐५०,००० - ☐२ लाख
कुल सप्लाई चेन हानि (राज्यवार)	करोड़ों में

उदाहरणः उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और बिहार जैसे राज्यों में १५-२० दिन की बिक्री बंद होने से हज़ारों छोटे व्यापारियों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है।

☐ ३. किस पर सबसे अधिक असर होता है?

छोटे व्यापारी और मजदूर जो रोज़ की बिक्री पर निर्भर हैं। किराए पर दुकान चलाने वाले, जिन्हें किराया देना ही पड़ता है लेकिन आमदनी नहीं होती। मांस काटने वाले या होटल किचन स्टाफ जिन्हें श्रावण में छुट्टी दे दी जाती है – अवैतनिक। बड़े ब्रांड या सप्लायर को नुकसान कम होता है क्योंकि वे अन्य प्रॉडक्ट बेचकर भरपाई कर सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने समय-समय पर यह कहा है कि 'सार्वजनिक व्यवस्था के नाम पर व्यापारिक आज़ादी पर अनावश्यक अंकुश नहीं लगाया जाना चाहिए।' संविधान का अनुच्छेद 19(1)(g): 'हर नागरिक को कोई भी व्यवसाय या व्यापार करने की स्वतंत्रता है।' लेकिन प्रशासन इसे 'सार्वजनिक भावना' और 'धार्मिक सौहार्द' के नाम पर सीमित करता है। पूरी दुकान बंद, दुकान खुले लेकिन पर्दा लगा हो, आर्थिक हानि, प्रशासन की ओर से कुछ मुआवज़ा या टैक्स छूट (अभी नहीं मिलती) धार्मिक भावना का सम्मान, सीमित प्रतिबंध, परंतु संवाद से लागू असुरक्षा या हिंसा पुलिस सुरक्षा या निगरानी ।

मेष राशि

ये महीना आपके लिए थोड़ा उतार-चढ़ाव वाला रहेगा। शुरुआत से ही आपको समय, धन और ऊर्जा का संतुलन साधना होगा। मेहनत ज्यादा करनी पड़ेगी, लेकिन फल थोड़े कम मिलेंगे। इस वजह से मन में असंतोष और करियर को लेकर चिंता बनी रह सकती है। दूसरे सप्ताह में भाग्य अपेक्षित साथ नहीं देगा। छोटी-छोटी बातों को लेकर चिंता बढ़ सकती है। कामों में बाधाएं आएंगी, और विरोधी सक्रिय रहेंगे। हालांकि माह के मध्य में कुछ राहत मिल सकती है, लेकिन स्थिति पूरी तरह नहीं सुधरेगी। इस समय लापरवाही से बचना बहुत ज़रूरी है, वरना बने-बनाए काम बिगड़ सकते हैं। आर्थिक स्थिति थोड़ी राहत दे सकती है। खासकर व्यापार में लाभ के योग हैं। माह के उत्तरार्ध में चुनौतियां दोबारा दस्तक देंगी। किसी बुजुर्ग की तबीयत या प्रॉपर्टी से जुड़ा मसला आपकी चिंता का कारण बन सकता है। निजी रिश्तों में किसी भी तरह की टकराहट से बचना आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

वृषभ राशि-

इस माह आप जिन चीज़ों का लंबे समय से इंतजार कर रहे थे, वे अब आपके सामने आ सकती हैं। माह की शुरुआत में करियर और कारोबार को लेकर लंबी यात्राएं संभव हैं, जो सुखद और लाभकारी रहेंगी। यह महीना वृषभ राशि के जातकों के लिए काफी हद तक शुभता और सौभाग्य से भरपूर है। खासकर यदि आप जुलाई के मध्य का थोड़ा समय छोड़ दें। व्यवसाय करने वालों के लिए बाजार में उनकी छवि मजबूत होगी, और अच्छे मुनाफे के संकेत हैं। कुछ बड़े फैसले आप भविष्य को ध्यान में रखते हुए ले सकते हैं। कारोबार में लाभ कुछ कम हो सकता है और नौकरीपेशा लोगों को जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ा सकता है। लेकिन ये स्थिति ज्यादा देर नहीं टिकेगी। जुलाई के अंत तक हालात दोबारा अनुकूल होंगे।

मिथुन राशि-

मिथुन राशि के जातक चतुर, बातूनी और विचारों से भरपूर होते हैं। ये एक साथ कई कामों को साधने की क्षमता रखते हैं। जुलाई का पूर्वार्ध मिथुन राशि वालों के लिए बेहद शुभ रहेगा। यह समय करियर और कारोबार से जुड़े बड़े फैसलों और कामों को अंजाम देने के लिए उपयुक्त है। बेरोजगार जातकों को प्रयास करने पर रोजगार के अवसर मिल सकते हैं। निजी जीवन में भी सहयोग और समर्थन बना रहेगा। दूसरे सप्ताह में यदि आप किसी समस्या से जूझ रहे थे तो उसका हल निकल सकता है। नौकरीपेशा जातकों की मनचाही नियुक्ति या स्थानांतरण हो सकता है। कारोबार में सुधार और रुका हुआ पैसा मिलने की संभावना है। रिश्तों में संयम बनाए रखें और वाणी पर नियंत्रण जरूरी होगा।

कर्क राशि-

सरकारी अधिकारियों से सहयोग मिलने के योग हैं। प्रेम संबंधों में सावधानी रखें। जुलाई माह कर्क राशि के लिए मिलाजुला रहेगा। माह की शुरुआत से ही कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। इच्छानुसार कार्य पूर्ण न होने से खिन्नता रह सकती है। विरोधियों की साजिशों से सतर्क रहने की जरूरत होगी। पूर्वार्ध में क्रोध पर नियंत्रण बनाए रखना आवश्यक है अन्यथा रिश्तों में विवाद हो सकता है। घर की किसी महिला सदस्य की सेहत चिंता का विषय बन सकती है। छात्रों को अतिरिक्त मेहनत करनी होगी। कार्यस्थल पर विरोधी झूठे आरोप लगाने की कोशिश कर सकते हैं। तीसरे सप्ताह में कोर्ट-कचहरी संबंधी मामलों में राहत मिल सकती है। सेहत और संबंधों पर ध्यान देना इस माह आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए।

सिंह राशि-

माह की शुरुआत अनुकूल है। करियर और कारोबार दोनों ही क्षेत्रों में योजनाएं समय पर पूरी होंगी। सहकर्मियों के साथ मतभेद के बावजूद परिस्थितियां आपके पक्ष में रहेंगी। कारोबार में लाभ के संकेत हैं। यदि आप विदेश से जुड़े कार्य करते हैं, तो इस दौरान सफलता मिलेगी। विदेश यात्रा के योग भी हैं। भूमि-भवन या वाहन सुख की प्राप्ति संभव है। माह के मध्य में परिस्थितियों में बड़ा बदलाव आ सकता है। भावनाओं में बहकर निर्णय न लें। उत्तरार्ध में पारिवारिक मतभेद संभव हैं। धैर्यपूर्वक संवाद करें।

कन्याः

प्रभावशाली व्यक्ति से मुलाकात लाभकारी सिद्ध हो सकती है। उत्तरार्ध में परिस्थितियां पूरी तरह अनुकूल होंगी। सहयोग और समर्थन मिलेगा। प्रेम संबंध सुधरेंगे। वैवाहिक जीवन सुखद रहेगा। जुलाई के पहले भाग में आपको कर्म पर भरोसा रखना होगा। यदि आप समय और ऊर्जा का उचित उपयोग करेंगे तो सफलता निश्चित है। कार्यों को तनाव की बजाय योजना से करें। कुछ लोग शॉर्टकट या रहस्यवाद की ओर आकर्षित हो सकते हैं। दूसरे सप्ताह में अचानक बड़े खर्चों से बजट गड़बड़ा सकता है। पार्टनर से संबंधों में खटास की संभावना है। भावनाओं में बहने की बजाय संतुलन बनाए रखें। माह के मध्य में यात्रा के योग हैं।

तुला राशि-

तुला राशि के जातक संतुलन और सौंदर्य के उपासक होते हैं। इन्हें शांति और तालमेल प्रिय होता है। इनके व्यक्तित्व में आकर्षण और सौजन्य झलकता है। जुलाई माह के पूर्वार्द्ध का थोड़ा समय यदि छोड़ दिया जाए तो पूरा महीना सुख-समृद्धि लिए रहने वाला है। माह की शुरुआत में तुला राशि के जातकों को छोटे-छोटे कार्यों को पूरा करने के लिए अधिक भागदौड़ करनी पड़ सकती है। इस दौरान विरोधियों से सतर्क रहना होगा। यदि बीते कुछ समय से किसी समस्या को लेकर परेशान चल रहे थे तो इस दौरान राहत मिलने के आसार कम हैं। घरेलू विवाद भी परेशान कर सकता है और नौकरीपेशा लोगों पर कामकाज का दबाव रहेगा। हालांकि आप अपने विवेक से समस्याओं का समाधान खोज लेंगे और विरोधियों पर भारी पड़ेंगे। व्यवसाय में माह के मध्य से सुधार की शुरुआत होगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और पारिवारिक सहयोग प्राप्त होगा।

वृश्चिक राशि-

वृश्चिक राशि के लोग तीव्र भावनाओं और रहस्य से जुड़े होते हैं। इनके विचार गहरे होते हैं और ये आधे रास्ते में कुछ नहीं छोड़ते। यह महीना मिश्रित फलदायी रहेगा। पूरे माह सुख-दुख साथ-साथ रहेंगे। वृश्चिक राशि के जातकों को पूरे समय अपने खानपान, वाणी और व्यवहार पर नियंत्रण रखना होगा, नहीं तो सेहत और रिश्तों में गड़बड़ी हो सकती है। माह की शुरुआत में अनावश्यक खर्चों से बचें क्योंकि इससे आपकी जमा पूंजी प्रभावित हो सकती है। जल्दबाज़ी में कोई निर्णय न लें। किसी योजना को पूरा हुए बिना प्रचारित करना नुकसानदेह हो सकता है। आत्मीय लोगों का साथ मिलेगा। प्रेम संबंधों में मधुरता बनी रहेगी और सेहत बेहतर रहेगी।

धनु राशि-

धनु राशि के लोग खुले विचारों वाले, दार्शनिक और घुमक्कड़ प्रवृत्ति के होते हैं। महीने की शुरुआत में कुछ उलझनों का सामना करना पड़ सकता है। कामकाज में बाधाएं, योजनाएं अटक सकती हैं और आत्मविश्वास थोड़ा कमजोर पड़ सकता है। हालांकि यह स्थिति दूसरे सप्ताह से सुधरने लगेगी। प्रभावशाली लोगों का सहयोग मिलेगा और लाभकारी योजनाएं सामने आएंगी। पदोन्नति की संभावना है।माह के मध्य तक भूमि-भवन या पैतृक संपत्ति से जुड़ी अड़चनें दूर होंगी। आय में वृद्धि होगी और पूर्व निवेश से लाभ मिलेगा। हालांकि उत्तरार्ध में सेहत और रिश्तों पर विशेष ध्यान देना होगा। प्रेम संबंधों में संयम रखें।

मकर राशि-

मकर राशि के लोग मेहनती, धैर्यवान और लक्ष्य केंद्रित होते हैं। इन्हें जीवन में सफलता के लिए संघर्ष से कोई गुरेज नहीं। यह महीना मिश्रित परिणामों वाला है। शुरुआत में आय कम और खर्च अधिक रह सकते हैं, जिससे आर्थिक संतुलन बिगड़ सकता है। अपनों की ओर से भी जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं। इस दौरान नियम-कानून का उल्लंघन करने से बचें। माह के मध्य में मौसमी बीमारी या पुराने रोग उभर सकते हैं। कार्यस्थल या परिवार में किसी वरिष्ठ से मतभेद की आशंका है। उत्तरार्ध में करीबी लोगों का अपेक्षित सहयोग न मिल पाने से निराशा हो सकती है। परिस्थितियों से तालमेल बनाना ही बेहतर रहेगा।

कुंभ राशि-

कुंभ राशि के लोग प्रगतिशील, मानवीय और विचारवान होते हैं। इन्हें परंपरा से अलग सोचने और सामाजिक बदलाव लाने में मज़ा आता है। कुंभ लग्न वाले जातक असामान्य लेकिन दूरदर्शी होते हैं। जुलाई का अधिकांश समय आपके लिए लाभदायक रहेगा। करियर-कारोबार में सफलता और प्रशंसा मिलेगी। योजनाएं सफल होंगी और आय के नए स्रोत बनेंगे। धर्म-कर्म और तीर्थाटन के योग बन सकते हैं। माह के मध्य में बाधाएं आ सकती हैं, जिससे आमदनी प्रभावित होगी, लेकिन तीसरे सप्ताह तक सब कुछ फिर से सामान्य हो जाएगा। उत्तरार्ध में नौकरीपेशा लोगों को प्रशंसा और पुरस्कार मिल सकते हैं। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

मीन राशि-

मीन राशि के जातक कोमल हृदय, संवेदनशील और कलात्मक होते हैं। इन्हें आध्यात्म और सेवा में विशेष रुचि होती है। जुलाई का महीना आपके लिए मिश्रित परिणाम लेकर आएगा। माह के पूर्वार्द्ध में दूसरों के मामलों से दूर रहें और अपने लक्ष्यों पर ध्यान दें। खर्च बढ़ सकते हैं और किसी बुजुर्ग महिला की सेहत चिंता बढ़ा सकती है। कार्यक्षेत्र में काम का दबाव रहेगा। मध्य तक व्यापार में मंदी के संकेत हैं, लेकिन उत्तरार्ध में शुभचिंतकों की मदद से सुधार होगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में राहत मिलेगी। उच्च शिक्षा में सफलता के योग हैं। माह के अंत में जीवनसाथी के साथ यात्रा का सुख मिल सकता है। पारिवारिक जीवन सामान्य और प्रेम संबंधों में सामंजस्य बना रहेगा। ■

एक तरफ ओड़िशा जहां भारत के अन्यतम धाम श्रीजगन्नाथ पुरी धाम के लिए विश्व विख्यात है वहीं यह विश्व विख्यात है सूर्यमंदिर, कोणार्क के लिए भी।२०२३ में नई दिल्ली के भारत मण्डपम में जब जी-२० शिखर सम्मेलन का आयोजन हुआ था तब वहां पर आकर्षण का मुख्य केन्द्र ओड़िशा के विश्व विख्यात सूर्यमंदिर, कोणार्क के कालचक्र के पहिये की बनावट थी जहां पर जी-२० के अध्यक्ष के रुप में भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी खड़े होकर जी-२० शिखर सम्मेलन में पधारे सभी शासनाध्यक्षों का भारतीय परम्परानुसार स्वागत किए थे।

कहते हैं कि प्रकृति के एकमात्र प्रत्यक्ष देवता भगवान सूर्यदेव ही हैं जो अपने २४ पहियोंवाले रथ पर कोणार्क में आरुढ़ दिखाए गए हैं। ये २४ पहिये प्रत्यक्ष रुप में कालचक्र के प्रतीक हैं। यह विश्व प्रसिद्ध कोणार्क सूर्यमंदिर बंगोपसागर (बंगाल की खाड़ी) के तट पर चन्द्रभागा नदी के समीप आज भी भग्नावशेष के रुप में अवस्थित है। इस मंदिर की अनुपम छटा सूर्योदय और सूर्यास्त के समय अनुदेखते ही

ओड़िशा का विश्व विख्यात सूर्यमंदिर कोणार्क

बनती है। ऐसा लगता है जैसे सूर्य की समस्त किरणें सबसे पहले धरती पर यहीं पर उतरत आई हों। यह कोणार्क सूर्यमंदिर ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से लगभग ५३ किलोमीटर की दूरी पर तथा श्री जगन्नाथपुरी धाम से करीब ३५ किलोमीटर की दूरी पर उत्तर-पूर्व दिशा में अवस्थित है। इसका निर्माण १३वीं शताब्दी में गंगवंश के प्रतापी राजा नरसिंह देव ने किया था जिसे १९८४ में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर के रुप में मान्यता प्रदान की गई। इस अनूठे कोणार्क सूर्यमंदिर के निर्माण में कुल लगभग २ वर्ष लगे। इसके निर्माण में कुल लगभग १२०० शिल्पकारों तथा कारीगरों ने योगदान जिया। यह मंदिर ओडिशा की प्राचीनतम स्थापत्य और मूर्तिकल का बोजोड उदारण है। यह सूर्यमंदिर सभी प्रकार से पूरे विश्व में कालचक्र के प्रतीक के रुप में विख्यात है। मंदिर के निर्माण में प्रयुक्त लाल पत्थर भी अपनी मोहकता से जैसे मानव की भाषा से कहीं अधिक मुखर नजर आते हैं। ऐसा लगता है कि जैसे भगवान सूर्यदेव की समस्त किरणें भगवान सूर्यदेव तथा उनकी पत्नी देवी छाया देवी के प्रथम दर्शन यहीं पर कर रहीं हों।

यह सूर्य मंदिर कुल २४ पहियों पर टिका हुआ है जिसके एक तरफ १२ पहिये तथा दूसरी तरफ १२ पहिये हैं। खण्डहर बने आज के सूर्यमंदिर के चार पहिये आज भी धूपघडी के रुप में इस्तेमाल किये जाते हैं। सूर्यमंदिर के मुख्य द्वार को गजसिंह द्वार कहा जाता है। यहां पर पत्थर के दो विशाल सिंह की मूर्तियां हैं जिसमें अपने पैरों से हाथी को कुचलते दिखाया गया है। मंदिर में प्रवेश करते ही सबसे पहले नाट्य मंदिर आता है। मंदिर की सीढियां चौडी-चौडी हैं जो आनेवाले पर्यटकों को सूर्यमंदिर के जगमोहन मंदिर तक ले जाती हैं। सीढियों के दोनों तरफ विशालकाय घोडे बने हैं जो देखने में ऐसे जीवंत लगते हैं जैसे वे तत्काल युद्ध के लिए दौड जाएंगे। मंदिर में तीन अति सुंदर मूर्तियां हैं, जिनके स्थान को काफी सोच-समझकर रखा गया है। तीन मूर्तियों में एक है उगते सूरज की मूर्ति, दूसरी दोपहर के सूरज की मूर्ति तथा तीसरी ढलते हुए सूरज की

श्री जगन्नाथपुरी धाम से करीब ३५ किलोमीटर की दूरी पर उत्तर-पूर्व दिशा में अवस्थित है। इसका निर्माण १३वीं शताब्दी में गंगवंश के प्रतापी राजा नरसिंह देव ने किया था जिसे १९८४ में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर के रुप में मान्यता प्रदान की गई। इस अनूठे कोणार्क सूर्यमंदिर के निर्माण में कुल लगभग २ वर्ष लगे। इसके निर्माण में कुल लगभग १२०० शिल्पकारों तथा कारीगरों ने योगदान जिया। यह मंदिर ओडिशा की प्राचीनतम स्थापत्य और मूर्तिकल का बोजोड उदारण है। यह सूर्यमंदिर सभी प्रकार से पूरे विश्व में कालचक्र के प्रतीक के रुप में विख्यात है। मंदिर के निर्माण में प्रयुक्त लाल पत्थर भी अपनी मोहकता से जैसे मानव की भाषा से कहीं अधिक मुखर नजर आते हैं। ऐसा ल गता है कि जैसे भगवान सूर्यदेव की समस्त किरणें भगवान सूर्यदेव तथा उनकी पत्नी देवी छाया देवी के प्रथम दर्शन यहीं पर कर रहीं हों।

मूर्ति। मंदिर के प्रवेशद्वार के बगल में नवग्रहदेव की मूर्तियां हैं जिनके पूजन का व्यक्तिगत सुख-शांति के लिए विशेष महत्त्व बताया गया है। सूर्यमंदिर के दक्षिणी भाग में निर्मित दो विशाल काय घोडे ताकत और ऊर्जा के प्रतीक हैं। ये मूर्ति ओडिशा सरकार के राजकीय चिह्न हैं। मंदिर के निचले भाग में तथा मंदिर की दीवारों पर बनी कलाकृतियां अद्भुत हैं।

कोणार्क में प्रतिवर्ष कोणार्क महोत्सव संगीत-नृत्य कला प्रेमियों के लिए अत्यंत आनंददायक होता है। मंदिर प्रांगण में कुल २२ अन्य मंदिर भी हैं। मंदिर की नक्काशियां मनमोहक हैं।

यह सूर्य मंदिर कुल २४ पहियों पर टिका हुआ है जिसके एक तरफ १२ पहिये तथा दूसरी तरफ १२ पहिये हैं। खण्डहर बने आज के सूर्यमंदिर के चार पहिये आज भी धूपघडी के रुप में इस्तेमाल किये जाते हैं। सूर्यमंदिर के मुख्य द्वार को गजसिंह द्वार कहा जाता है। यहां पर पत्थर के दो विशाल सिंह की मूर्तियां हैं जिसमें अपने पैरों से हाथी को कुचलते दिखाया गया है। मंदिर में प्रवेश करते ही सबसे पहले नाट्य मंदिर आता है। मंदिर की सीढियां चौडी-चौडी हैं जो आनेवाले पर्यटकों को सूर्यमंदिर के जगमोहन मंदिर तक ले जाती हैं।

सूर्यदेव की पत्नी छाया देवी के मंदिर में सबसे पहले एक सुंदर औरत की मूर्ति है जो अपने पति के आगमन की प्रतीक्षारत नजर आती है। और उसे ही देखने के लिए कोणार्क आनेवाले लोगों में अधिकतर नव दंपत्ति ही होते हैं जो वहां पर जीवन में प्रतीक्षा के महत्त्व को प्रत्यक्ष रुप में समझने का अहसास करते हैं। तस्वीरें खीचाते हैं। प्रकृति के खुले वातावरण में निर्मित इस सूर्यमंदिर की दीवारों की छटा मोहक तथा दर्शनीय हैं जिन पर कामुक कलाकृतियों को भी बडी बारीकी से उकेरा गया है। यहां पर एक मगरमच्छ की भी मूर्ति है जो अपने मुंह में मछली दबाये हुए है।

१७७९ में कोणार्क के अरुण स्तंभ को लाकर पुरी के जगन्नाथ मंदिर के सिंहद्वार के सामने स्थापित कर दिया है जो प्रतिदिन भगवान सूर्यदेव की प्रथम किरणों के साथ श्रीजगन्नाथ मंदिर के रत्नवेदी पर विराजमान महाप्रभु जगन्नाथ के प्रथम दर्शन करता है। एक समय था जब कोणार्क सूर्यमंदिर के रथ के चौबीस पहिये थे जिसे कुल छः घोड़े खींच रहे होते दिखाया गया था लेकिन आज मात्र एक ही घोडा वहां पर दिखता है। कोणार्क सूर्यमंदिर को विरंचि-नारायण मंदिर भी कहा जाता है। पद्मपुराण के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण का पुत्र साम्ब जब शापग्रस्त होकर कोढ रोग से ग्रसित हो गया तब वह यही आकर बंगोपसागर के चन्द्रभागा सागर-संगम नदी तट पर पवित्र स्नानकर लगातार १२ वर्षों तक भगवान सूर्यदेव की घोर तपस्या की जिससे सूर्यदेव प्रसन्न होकर उसे कोढमुक्त का वरदान दिये।

ऐसी जानकारी मिलती है कि तभी से इस मंदिर में सूर्योपासना आरंभ हुई। निर्विवाद रुप में सत्य यह है कि पिछले लगभग ७०० वर्षों से देश-विदेश के हजारों कुष्ठरोगियों का इलाज ओड़िशा का विश्व विख्यात सूर्यमंदिर भगवान सूर्यदेव की भोर की प्रथम किरणों तथा सायंकाल की अस्ताचलगामी होती किरणों के माध्यम से होता है। कोणार्क सूर्यमंदिर की सबसे अनोखी विशेषता यह भी है कि इसमें भगवान सूर्यदेव की तीन मूर्तियां हैं जो जीवन के शाश्वत सत्य बाल्यावस्था, युवावस्था और प्रौढावस्था की सच्चाई को स्पष्ट करतीं हैं।

-अशोक पाण्डेय

Allu Arjun और Deepika पहली बार एक साथ, Sci-Fi मेगा प्रोजेक्ट की शूटिंग शुरू!

साउथ सुपरस्टार Allu Arjun और बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेस Deepika Padukone पहली बार बड़े परदे पर साथ नजर आने जा रहे हैं। यह जोड़ी भारत की अब तक की सबसे महंगी Sci-Fi फिल्मों में से एक AA22xA6 में काम कर रही है, जिसका निर्देशन कर रहे हैं ब्लॉकबस्टर डायरेक्टर Atlee। इस फिल्म की शूटिंग जून २०२५ से मुंबई और हैदराबाद में शुरू हो चुकी है। यह एक हाई-विजुअल एक्शन और साइंस-फिक्शन आधारित फिल्म है। Deepika एक मजबूत महिला योद्धा की भूमिका में हैं, जिनका लुक और एक्शन दर्शकों को आश्चर्यचकित करेगा। फिल्म में Allu Arjun डुअल रोल में नजर आएंगे - एक आम आदमी और दूसरा रहस्यमयी साइबर योद्धा। सूत्रों की मानें तो इस फिल्म में दीपिका के अलावा Janhvi Kapoor, Mrunal Thakur और Rashmika Mandanna भी नजर आ सकती हैं। इस बहु-कल ाकार फिल्म का बजट ₹५०० करोड़ से ऊपर बताया जा रहा है।

निर्माता ने कहा, 'हम पहली बार South और Bollywood के दो बड़े सुपरस्टार्स को एक साथ लाने जा रहे हैं। यह प्रोजेक्ट भारतीय सिनेमा के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा।' AA22xA6 को २०२६ के अंत या २०२७ की Pongal रिलीज़ के लिए निर्धारित किया गया है। फिल्म को पैन-इंडिया स्तर पर हिंदी, तेलुगु, तमिल, मलयालम और कन्नड़ भाषाओं में रिलीज़ किया जाएगा।

सबसे महंगे टीवी होस्ट बने सलमान!

लोकप्रिय रियलिटी शो बिग बॉस के १९वें सीज़न में सुपरस्टार सलमान खान एक बार फिर होस्ट की भूमिका में नजर आएंगे। लेकिन इस बार चर्चा सिर्फ उनके होस्टिंग स्टाइल की नहीं, बल्कि उनकी आश्चर्यजनक फीस की भी हो रही है। रिपोर्ट्स के अनुसार, सलमान खान को इस सीज़न के लिए लगभग ₹२५०-३०० करोड़ का पारिश्रमिक मिल रहा है, जिससे वह भारत के सबसे महंगे टीवी होस्ट बन चुके हैं। सूत्रों की मानें तो सलमान को प्रत्येक सप्ताहांत (वीकेंड का वार) के लिए लगभग ₹१२-१५ करोड़ का भुगतान किया जा रहा है। शो की कुल अवधि लगभग तीन महीने मानी जा रही है, लिहाजा कुल फीस ₹२५०-३०० करोड़ के आसपास पहुंचने की संभावना है। सलमान खान ने बिग बॉस के साथ अपनी शुरुआत सीज़न ४ से की थी, तब उन्हें प्रति एपिसोड लगभग ₹२.५ करोड़ मिलते थे। तब से लेकर अब तक उनकी फीस में हर साल उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। पिछले वर्षों में जब मीडिया में उनकी फीस को लेकर ₹१,००० करोड़ जैसे आंकड़े सामने आए थे, तब खुद सलमान ने हँसते हुए इन दावों का खंडन किया था। हालांकि, इस बार उन्होंने अब तक इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

बिग बॉस की टीआरपी लगातार गिरने से बची है तो उसका एक बड़ा श्रेय सलमान खान को ही जाता है। उनके होस्टिंग अंदाज़, कंटेस्टेंट्स के साथ संवाद और उनकी दबंग छवि ने शो को साल दर साल जीवित रखा है। यही वजह है कि निर्माता उन्हें शो से जोड़ने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं – चाहे जितनी भी बड़ी रकम क्यों न चुकानी पड़े।

'CM रेखा गुप्ता के मायामहल में लगेंगे करोड़ों रुपये!!

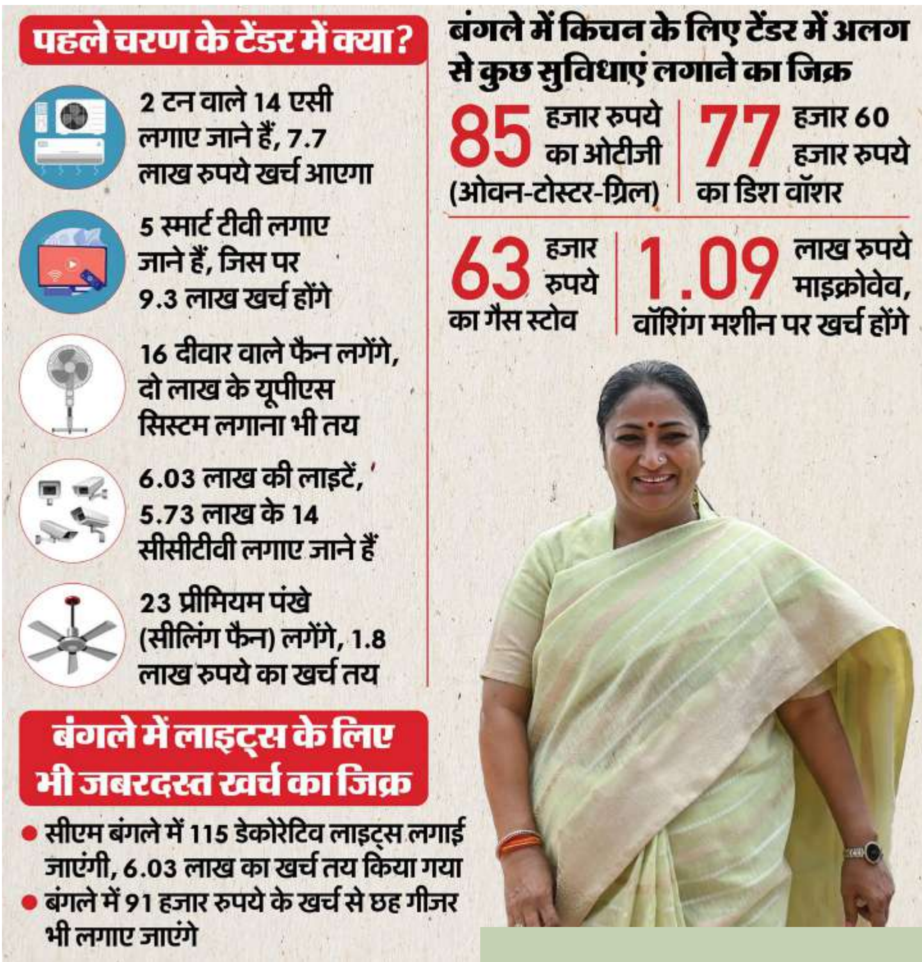

दिल्ली के लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के बंगले के लिए एक टेंडर जारी किया है। घर के निर्माण के लिए जारी किए गए इस टेंडर की खास बात यह है कि इसे सीएम के आधिकारिक आवास के निर्माण के लिए नहीं, बल्कि रेनोवेशन के लिए जारी किया गया है। पीडब्ल्यूडी ने इसके लिए ६० लाख रुपये का टेंडर जारी किया है। इसे लेकर दिल्ली में मुख्य विपक्षी दल- आम आदमी पार्टी (आप) के साथ-साथ कांग्रेस ने भी सीएम रेखा गुप्ता को घेरा है। आप ने रेखा गुप्ता के बंगले को माया महल बुलाना भी शुरू कर दिया है।

बताया गया है कि रेखा गुप्ता को दो बंगले आवंटित हुए थे। इनमें से पीडब्ल्यूडी ने बंगला नंबर-१ के लिए रेनोवेशन का टेंडर जारी किया है। यहां मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता खुद रहेंगी। वहीं, उनका दूसरा बंगला, बंगला नंबर-२ फिलहाल कैंप ऑफिस के तौर पर इस्तेमाल किया जाएगा।

बंगला नंबर-१ को लेकर खास बात यह है कि पहले यहां दिल्ली के उपराज्यपाल का दफ्तर था। इसके चलते बंगले में कमरों को अलग-अलग केबिन में बांट दिया गया था। एक-एक कमरे को दो या तीन वर्गों में किया गया था, ताकि यहां सरकारी कर्मियों के लिए क्यूबिकल्स बनाए जा सकें। ऐसे में जब रेखा गुप्ता ने जून में इस बंगले को अपना निवास बनाए जाने के लिए चुना था, तब अनुमान लगाया जा रहा था कि इसका रेनोवेशन नए सिरे से कराया जाएगा।

गौरतलब है कि रेखा गुप्ता मुख्यमंत्री बनने के बाद से अब तक अपने परिवार के साथ अपने शालीमार बाग स्थित निजी निवास पर रह रही हैं। एक मीडिया ग्रुप ने कुछ समय पहले ही जानकारी दी थी कि रेखा गुप्ता पहले लुटियंस दिल्ली में अपने रहने के लिए घर ढूंढ रही थीं, लेकिन पीडब्ल्यूडी के पास केंद्र सरकार के प्रबंधन के अंतर्गत आने वाले बंगलों से बदलने के लिए कोई ढंग का बंगला नहीं था।

टेंडर के मुताबिक, ६० लाख रुपये का जो टेंडर जारी हुआ है, उसमें खर्च किसी निर्माण कार्य में नहीं होना है। बल्कि सिर्फ इलेक्ट्रिकल और इंटीरियर फिटिंग से जुड़े काम कराए जाने हैं। रिपोर्ट्स में कहा गया है कि राजनिवास पर सीएम रेखा गुप्ता को जो बंगला मिला है, वह टाइप-७ का बंगला है। इसमें चार बेडरूम, ड्रॉइंग रूम, बिजनेस हॉल, एक कॉमन हॉल, आगंतुकों के लिए एक विजिटर हॉल, हाउस हेल्प के लिए कमरा, सभी में बाथरूम, एक बड़ा लॉन, किचन और घर के पीछे एक बैक यार्ड शामिल है।

टेंडर के मुताबिक, जिस बंगले का रेनोवेशन होना है, वहां पहले चरण का टेंडर जारी हुआ है। यहां २ टन वाले १४ एसी लगाए जाने हैं, जिनका खर्च ७.७ लाख रुपये तय किया गया है। इसके अलावा पांच स्मार्ट टीवी लगाए जाने हैं, जिनके लिए ९.३ लाख रुपये दर्शाए गए हैं। इसके अलावा ६.०३ लाख की लाइटें लगाई जानी हैं। बंगले में सुरक्षा के लिए १४ सीसीटीवी भी लगाए जाने हैं, जिनके लिए ५.७३ लाख रुपये अलग से तय किए गए हैं। दूसरी तरफ बंगले में छत पर लगने वाले २३ प्रीमियम पंखे (सीलिंग फैन) लगेंगे। इन पर करीब १.८ लाख रुपये का खर्च तय किया गया है। इसके अलावा १६ दीवार वाले फैन लगेंगे। बंगले में बिजली की निर्बाध व्यवस्था के लिए दो लाख रुपये से यूपीएस सिस्टम लगाना भी तय किया गया है।

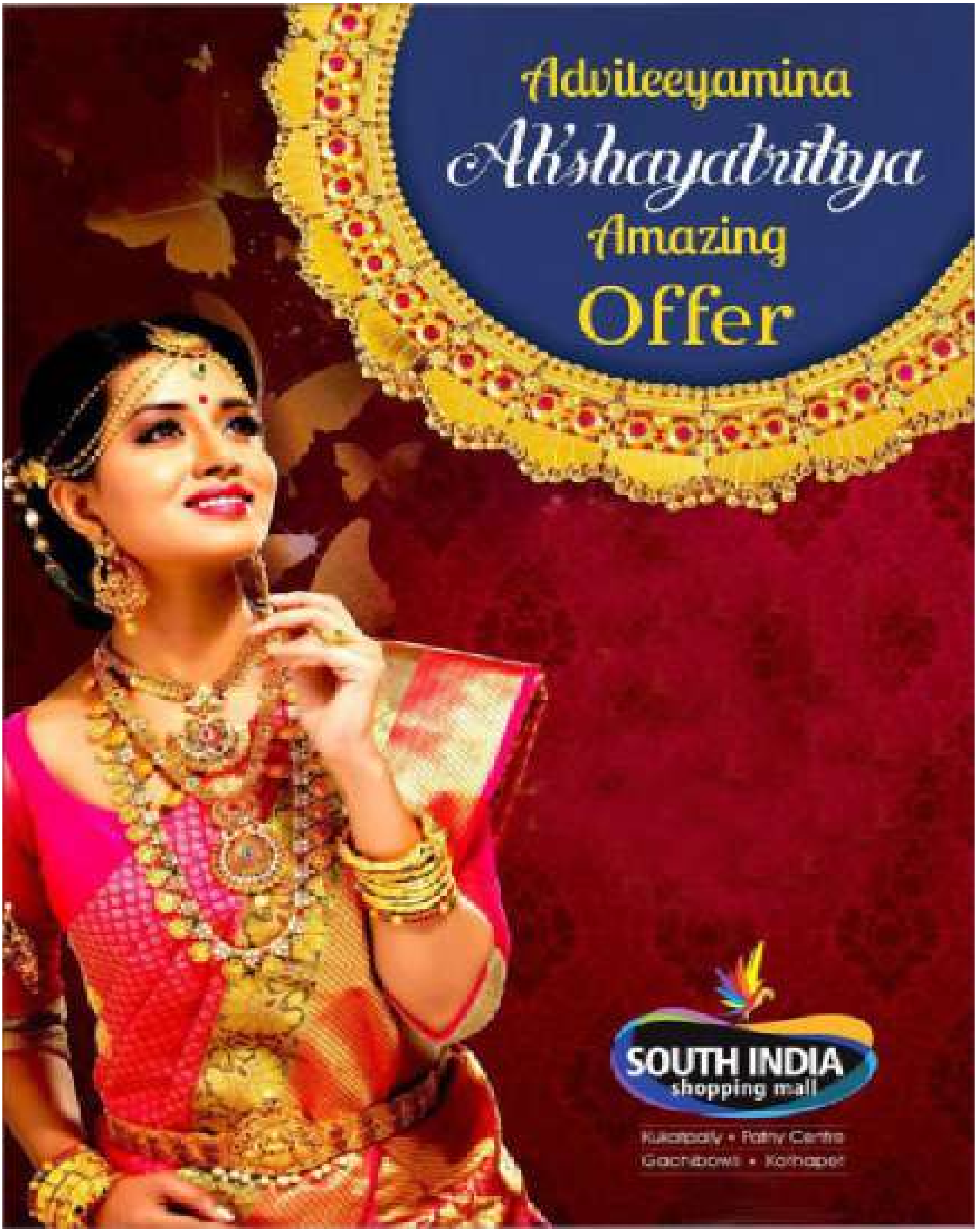
Adviteeyamina
Akshayatritya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall

श्रीवाणी क्षेत्र जगन्नाथ मंदिर की ओर से अनुष्ठित हुई भगवान जगन्नाथ की घोषयात्रा

हर साल की तरह इस साल भी कीस श्रीवाणीक्षेत्र जगन्नाथ मंदिर प्रशासन की ओर से श्री जगन्नाथ महाप्रभु की विश्व प्रसिद्ध घोषयात्रा अनुष्ठित हुई। सुबह मंगल आरती, मैलम, तड़पलागी, रोश होम, अबकाशा, सूर्य पूजा और रथ स्थापना जैसे अनुष्ठानों के उपरांत ३:०० बजे अपराह्न छेरापहंरा नीति कीस जगन्नाथ मंदिर ट्रस्ट के संस्थापक अच्युत सामंत जी के द्वारा पूरी की गई। शाम ४:०० बजे, भक्तों ने भगवान बलभद्र, देवी सुभद्रा और महाप्रभु जगन्नाथ के रथों को नवनिर्मित गुंडिचा मंदिर तक खींचा। घंट, मृदंगों और ढोल की थाप के साथ ही जय जगन्नाथ के नाद से रथदाण्ड गुंजायमान हो उठा। श्रीवाणी क्षेत्र रथ यात्रा का एक मुख्य आकर्षण यह रहा कि यहां देवी सुभद्रा के रथ को महिलाओं ने खींचा। मौसम अनुकूल था इसलिए घोषयात्रा देखने के लिए स्थानीय लगभग ५०,००० से भी अधिक श्रद्धालु भक्त एकत्रित हुए। सुसज्जित नंदीघोष, तालध्वज और देवदलन रथों को खींचकर भक्तों ने देवी का आशीर्वाद प्राप्त किया। गौरतलब है कि पुरी जगन्नाथ मंदिर की परंपरा के आधार पर ही श्रीवाणी क्षेत्र भगवान महाप्रभु के सभी रीति -नीति के अनुसार पूजा की गई।

पुरी रथ यात्रा के सभी नीति कांत भी यहां रथयात्रा में संपन्न हुआ। रथ बनाने के लिए पुरी से विशेष बिंदानी, महाराणा और चित्रकारों को काम पर रखा जाता है। श्रीवाणी क्षेत्र में श्रीजगन्नाथ मंदिर के निर्माण से लेकर, पुरी के राजा गजपति श्री दिव्यसिंहदेव की सलाह के अनुसार यहां सभी पूजा की जाती हैं। यहां भी मंदिर की अबिकाला संरचना में भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा के लिए १६, १४ और १२ पहियों वाले तीन नये

भक्तों ने भगवान बलभद्र, देवी सुभद्रा और महाप्रभु जगन्नाथ के रथों को नवनिर्मित गुंडिचा मंदिर तक खींचा। घंट, मृदंगों और ढोल की थाप के साथ ही जय जगन्नाथ के नाद से रथदाण्ड गुंजायमान हो उठा। श्रीवाणी क्षेत्र रथ यात्रा का एक मुख्य आकर्षण यह रहा कि यहां देवी सुभद्रा के रथ को महिलाओं ने खींचा। मौसम अनुकूल था इसलिए घोषयात्रा देखने के लिए स्थानीय लगभग ५०,००० से भी अधिक श्रद्धालु भक्त एकत्रित हुए। सुसज्जित नंदीघोष, तालध्वज और देवदलन रथों को खींचकर भक्तों ने देवी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

रथ बनाए गए हैं। रथयात्रा से लेकर बाहुड़ा नौ दिनों तक यह महाप्रभु के समक्ष भजन समारोह आयोजित किया जाएगा। हर साल इन नौ दिनों में श्रीजीउ के दर्शन के लिए आसपास के क्षेत्रों से भक्तों का तांता लगा रहता है।

क्यूएस वर्ल्ड रैंकिंग्स २०२६ प्रकाशित कीट डीम्ड विश्वविद्यालय अर्जित किया भारत के टॉप १० में स्थान

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय (कलिंगा इंस्टिट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी) ने क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स २०२६ के प्रकाशित परिणाम के अनुसार ओडिशा के सभी निजी विश्वविद्यालयों में पहला स्थान प्राप्त कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। यही नहीं, पूरे भारत में शीर्ष निजी उच्च शिक्षण संस्थानों की सूची में भी कीट को ९वां स्थान मिला है। यह इसका इस प्रतिष्ठित वैश्विक रैंकिंग में पहला प्रवेश है।

अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी पहली भागीदारी में ही कीट ने एशियन यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स - साउदर्न एशिया में ५५वां स्थान हांसिल कर सबको चौंका दिया है। यह उपलब्धि कीट की शैक्षणिक गुणवत्ता, अनुसंधान, नवाचार और वैश्विक सहभागिता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। क्यूएस रैंकिंग्स २०२६ ने विश्वभर के १,५०० से अधिक शीर्ष विश्वविद्यालयों का मूल्यांकन किया था। यह मूल्यांकन शैक्षणिक प्रतिष्ठा, नियोक्ता प्रतिष्ठा, फैकल्टी-स्टूडेंट अनुपात, प्रति फैकल्टी शोध-पत्र, अंतरराष्ट्रीय छात्रों और शिक्षकों की संख्या, शोध नेटवर्क, रोजगार परिणाम और स्थिरता जैसे कई कठोर मानकों पर आधारित था।

इस उपलब्धि पर प्रतिक्रिया देते हुए कीट और कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने कहा, 'यह मान्यता हमारी शैक्षणिक उत्कृष्टता, सामाजिक प्रतिबद्धता और वैश्विक सहभागिता के प्रति लगातार किए जा रहे प्रयासों का परिणाम है। मात्र २१ वर्षों में कीट ने कई पुराने और प्रतिष्ठित संस्थानों को पीछे छोड़ दिया है। मैं इस गौरवपूर्ण पल के लिए सभी शिक्षकों, कर्मचारियों और छात्रों को बधाई देता हूं।'

कीट और कीस परिवार ने डॉ. सामंत के प्रति आत्मीय कृतज्ञता व्यक्त की है जिनके दूरदर्शी नेतृत्व और समावेशी शिक्षा दृष्टिकोण ने ओडिशा को वैश्विक शिक्षा मानचित्र पर एक विशिष्ट पहचान दिलाई है।

५ जुलाई को लक्ष्मी-नारायण रुप में रथारुढ़ होकर बाहुड़ा विजय करेंगे भगवान जगन्नाथ

नीलाद्रि विजय की सबसे रोचक बात यह होती है कि तीन देवविग्रहों को देवी लक्ष्मीजी तो रत्नवेदी पर पुनः आरुढ़ होने की अनुमति तो दे देती हैं लेकिन जगन्नाथजी को रोक देती हैं क्योंकि जगन्नाथजी जब रथयात्रा पर गुण्डीचा मंदिर जाते हैं तो अपने बडे भाई बलभद्रजी को, लाडली बहन सुभद्राजी को तथा सुदर्शन जी को साथ लेकर चले जाते हैं लेकिन लक्ष्मीजी को श्रीमंदिर में अकेले ही छोड़ देते हैं। ऐसे में माता लक्ष्मी का क्रोधित होना स्वाभाविक होता है। अब श्रीमंदिर में प्रवेश की अनुमति मां लक्ष्मी जगन्नाथ जी के हाथों से रसगुल्ला भोग ग्रहणकर और प्रसन्न होकर ही अपनी अनुमति रत्नवेदी पर पुनः विराजमान होने के लिए प्रदान करतीं हैं।

गुण्डीचा महोत्सव मनाकर तथा सात दिनों तक विश्रामकर भगवान जगन्नाथ आगामी ५ जुलाई को लक्ष्मी-नारायण रुप में रथारुढ़ होकर बाहुड़ा विजय करेंगे। उस दिन वे रथारुढ़ होकर अपने जन्मवेदी से पुनः अपने श्रीमंदिर के रत्नवेदी पर वापस लौटेंगे। गुण्डीचा मंदिर को गुण्डीचा घर, ब्रह्मलोक, सुंदराचल तथा जनकपुरी भी कहा जाता है। यह मंदिर लगभग ५ एकड भू-भाग पर निर्मित है। मंदिर के चारों तरफ अतिमोहक बाग-बगीचे हैं जो मंदिर की छटा को और अधिक सुरम्य बना देते हैं। गुण्डीचा मंदिर का निर्माण भी जगन्नाथ पुरी के मुख्य जगन्नाथ मंदिर (श्रीमंदिर) की तरह ही किया गया है। इसका पिछला हिस्सा विमान कहलाता है। उसके अंदर का भाग है जगमोहन। उसके बाद नाट्यमण्डप और उसके बाद है भोगमण्डप।

गुण्डीचा मंदिर का निर्माण मालवा नरेश इन्द्रद्युम्न ने अपनी महारानी गुण्डीचा के नाम पर भगवान विश्वकर्मा द्वारा वहां की महावेदी पर करवाया था। गुण्डीचा मंदिर की रत्नवेदी चार फीट ऊंची तथा १९फीट लंबी है। मंदिर के आसपास का क्षेत्र श्रद्धाबाली कहलाता है जहां की बालुकाराशि के कण-कण में श्रद्धा का निवास है। पहली बार यहीं पर राजा इन्द्रद्युम्न ने एक हजार अश्वमेध यज्ञ किया था। गुण्डीचा मंदिर भी जगन्नाथ मंदिर पुरी की तरह ही उत्कलीय स्थापत्य एवं मूर्तिकला का साक्षात उदाहरण है। गुण्डीचा मंदिर भी हल्के भूरे रंग के सुंदर कलेवर में है। यह मंदिर भी जगन्नाथ मंदिर की तरह देश-विदेश से पुरी आनेवाले समस्त जगन्नाथ भक्तों को अपनी भव्यता, प्राकृतिक सुषमा तथा सुरम्य परिवेश को लेकर आकर्षण का केन्द्र है। गौरतलब है कि प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को चतुर्धा देवविग्रहों को श्रीमंदिर से पहण्डी विजय कराकर तथा रथारुढ़ कराकर भक्तगण गुण्डीचा मंदिर लाते हैं जहां पर वे सात दिनों तक विश्राम करते हैं।

बाहुड़ा विजय के दिन अर्थात् आगामी ५ जुलाई को गुण्डीचा मंदिर में चतुर्धा देवविग्रहों की सुबह में मंगल आरती होगी। मयलम, तडपलागी, रोसडा भोग होगा। अवकाश, सूर्यपूजा, द्वारपाल पूजा, शेषवेश आदि श्रीमंदिर के निर्धारित विधि-विधान के तहत ही संपन्न होगा। उस दिन चतुर्धा देवविग्रहों को गोपालवल्लव भोग (खिचडी भोग) निवेदित कराकर एक-एककर पहण्डी विजय

कराकर उनके सुनिश्चित रथों पर आरुढ़ किया जाएगा। उस दिन भगवान जगन्नाथ का दिव्य रुप लक्ष्मी-नारायण रुप होता है जिसके दर्शन की लालसा देश-विदेश के समस्त जगन्नाथ भक्तों की रहती है। भगवान जगन्नाथ के प्रथम सेवक पुरी के गजपति महाराजा श्री श्री दिव्य सिंहदेवजी महाराजा अपने राजमहल श्रीनाहर से पालकी में पधारकर तीनों रथों पर चंदनमिश्रित पवित्र जल छिडककर छेरापंहरा करेंगे। उसके उपरांत तीनों रथों पर लगीं नारियल की सीढियों को हटा दिया जाएगा तथा रथों को उनके घोड़ों से जोड़ दिया जाएगा। तीनों रथ क्रमशः तालध्वज, देवदलन तथा नंदिघोष को समस्त जगन्नाथ भक्तगण जय जगन्नाथ तथा हरिबोल के जयघोष के साथ खींचकर श्रीमंदिर के सिंहद्वार के समीप लाएंगे।

आगामी ६ जुलाई को रथ पर ही चतुर्धा देवविग्रहों का सोना वेष होगा जिसमें श्रीमंदिर के रत्नभण्डार से कुल बारह हजार तोले के सोने के अनेक आभूषण, हीरे-जवाहरात आदि से चतुर्धा देवविग्रों को नख से लेकर मस्तक तक सुशोभित किया जाता है। वह अभूतपूर्व रुप भगवान जगन्नाथ की ऐश्वर्य लीला का प्रत्यक्ष प्रमाण होता है। अगले दिन अर्थात् ७ जुलाई को चतुर्धा देवविग्रहों का अधरपडा होगा और उसके अगले दिन अर्थात् आगामी ८ जुलाई को नीलाद्रि विजय कर भगवान जगन्नाथ अपने रत्नवेदी पर पुनः आरुढ़ होंगे।

नीलाद्रि विजय की सबसे रोचक बात यह होती है कि तीन देवविग्रहों को देवी लक्ष्मीजी तो रत्नवेदी पर पुनः आरुढ़ होने की अनुमति तो दे देती हैं लेकिन जगन्नाथजी को रोक देती हैं क्योंकि जगन्नाथजी जब रथयात्रा पर गुण्डीचा मंदिर जाते हैं तो अपने बडे भाई बलभद्रजी को, लाडली बहन सुभद्राजी को तथा सुदर्शन जी को साथ लेकर चले जाते हैं लेकिन लक्ष्मीजी को श्रीमंदिर में अकेले ही छोड़ देते हैं। ऐसे में माता लक्ष्मी का क्रोधित होना स्वाभाविक होता है। अब श्रीमंदिर में प्रवेश की अनुमति मां लक्ष्मी जगन्नाथ जी के हाथों से रसगुल्ला भोग ग्रहणकर और प्रसन्न होकर ही अपनी अनुमति रत्नवेदी पर पुनः विराजमान होने के लिए प्रदान करतीं हैं। २०२५ का नीलाद्रि विजय आगामी ८ जुलाई को है। उसके उपरांत अपने रत्नवेदी पर पूर्ववत विराजमान होकर भगवान जगन्नाथ चतुर्धा देवविग्रह रुप में अपने भक्तों को पुनः नित्य दर्शन देंगे। - अशोक पाण्डेय

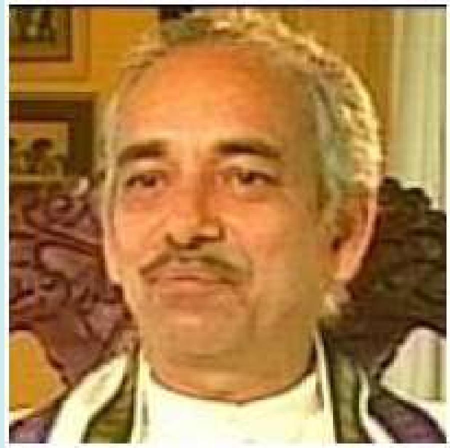

भगवान जगन्नाथ के प्रथम सेवक पुरी धाम के गजपति महाराजा श्री श्री दिव्य सिंहदेवजी महाभाग हैं जिनका जन्म ०६फरवरी,१९५३ में एक राजपरिवार में हुआ। उनके पिताश्री का नाम महाराजा वीरकिशोर देवजी है। पिताश्री के स्वर्गवास के बाद श्री श्री दिव्य सिंहदेव जी महाराजा को पैतृक विरासत में भगवान जगन्नाथ के प्रथम सेवक का पुनीत दायित्व मिला। १९७१ में जब आप मात्र १९ वर्ष के थे तभी से आप भगवान जगन्नाथ की विश्वप्रसिद्ध रथयात्रा के दिन तीनों रथों पर छेरापंहरा का पवित्र दायित्व निभा रहे हैं। आप का आध्यात्मिक व्यक्तित्व सादगी और भगवान जगन्नाथ की सेवा का यथार्थ आदर्श है। आपकी प्रारंभिक शिक्षा पुरी धाम के एक मिशनरी स्कूल में हुई। आप दिल्ली विश्वविद्यालय के संत स्टीफन कालेज से एलएल.बी. किये तथा अमरीका शिकागो के नार्थ-वेस्टर्न विश्वविद्यालय से आपने एलएल.एम.किया। आपकी पत्नी महारानी सूर्यमणि महापट्टदेवी आपके जीवन की प्रेरणा हैं। १९८० से १९९३ तक आप आध्यात्मिक साधना के लिए उत्तराखण्ड, देहरादून के स्वामी शिवानन्द आश्रम में रहे। ०७जुलाई,१९७० के दिन आपके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। उसके उपरांत आपने भगवान जगन्नाथ के प्रथम सेवक के रुप में अपनी जिम्मेदारी संभाल ली।

भगवान जगन्नाथ के प्रति आपके समर्पित यथार्थ आध्यात्मिक जीवन का प्रमाण उनके प्रथम

भगवान जगन्नाथ के प्रथम सेवकः

पुरी धाम के गजपति महाराजाः श्री श्री दिव्य सिंहदेव जी महाराजा

रथयात्रा के लिए चतुर्धा देवविग्रहों को पहण्डी विजय कराकर उन्हें रथारुढ कराया जा चुका था लेकिन भगवान जगन्नाथ अपने रथ नंदिघोष रथ की सीढियों पर ही बैठे रहे। अपराह्न हो गया था। ऐसे में आप अपने राजमहल श्रीनाहर से दौडते हुए रथ के समीप आये और भगवान जगन्नाथजी से प्रार्थना किये कि जगन्नाथ भगवान रथारुढ हों और भगवान जगन्नाथजी ने आपकी प्रार्थना स्वीकार कर तत्काल रथारुढ हो गये।

सेवक के रुप में १९७२ की रथयात्रा के दिन देखने को मिला। रथयात्रा के लिए चतुर्धा देवविग्रहों को पहण्डी विजय कराकर उन्हें रथारुढ कराया जा चुका था लेकिन भगवान जगन्नाथ अपने रथ नंदिघोष रथ की सीढियों पर ही बैठे रहे। अपराह्न हो गया था। ऐसे में आप अपने राजमहल श्रीनाहर से दौडते हुए रथ के समीप आये और भगवान जगन्नाथजी से प्रार्थना किये कि जगन्नाथ भगवान रथारुढ हों और भगवान जगन्नाथजी ने आपकी प्रार्थना स्वीकार कर तत्काल रथारुढ हो गये। २०१२ में आपने पुरी में पंचरात्र महोत्सव का शुभारंभ किया जिसका उद्देश्य भगवान जगन्नाथ जगन्नाथ महात्म्य को अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाना है। आपने स्कन्द पुराण में वर्णित भगवान जगन्नाथ महात्म्य, पूजा-पाठ को ही मूल रुप में महत्त्व देते हुए स्कन्द पुराण का ओडिया, अंग्रेजी तथा हिन्दी संस्करण प्रकाशित करवाया है। -अशोक पाण्डेय

चन्द्रमौलीश्वर के साक्षात प्रतिरुपः श्री जगन्नाथपुरी गोवर्द्धन पीठ के १४५ वें पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य

स्वामी निश्चलानंद सरस्वती महाभाग

चन्द्रमौलीश्वर के साक्षात प्रतिरुप हैं श्री जगन्नाथपुरी गोवर्द्धन पीठ के १४५वें पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वतीजी महाभाग। आपका सनातनी शाश्वत संदेश है-' एक सुसंस्कृत, सुशिक्षित, सुरक्षित, समृद्ध, सेवापरायण स्वस्थ व्यक्ति तथा समाज की संरचना में विश्व मेधा-रक्षा-वाणिज्य और श्रमशक्ति का उपयोग एवं विनियोग हो। विश्व को धर्मनियंत्रित, पक्षपातविहीन-सर्वहितप्रद शासन सुलभ कराने में सत्पुरुषों की प्रीति तथा प्रवृत्ति परिलक्षित हो। सेवा और सहानुभूति के नाम पर किसी वर्ग के अस्तित्व और आदर्श को विलुप्त करने के समस्त षडयंत्र विश्वस्तर पर मानवोचित शील की सीमा मंठ जघन्य अपराध उद्घोषित हो। विकास के नाम पर पर्यावरण को विकृत और विलुप्त करनेवाले समस्त प्रकल्प निरस्त हों। स्थावर, जंगम प्राणियों के हितों में पाश्चात जगत विनियुक्त हो। पृथ्वी, पानी, प्रकाश, पवन और आकाश सर्व शांतिप्रद और सुखप्रद हों।' जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती महाभाग पिछले लगभग ३० वर्षों से दिव्य गोवर्द्धन पीठ को सुशोभित कर रहे हैं। वे अपनी दिव्य मेधाशक्ति एवं दिव्य विद्यासागर के बदौलत भारतीय सनातनी परम्पराओं के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के शाश्वत जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए सद्गुरु, श्री जगन्नाथ और सद्ग्रंथ को ही मान्यता देते हैं। साक्षात भारतीय आध्यात्मिक चेतना के प्राण स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती महाभाग पिछले लगभग ३० वर्षों से समस्त सांसारिक सुखों का त्यागकर भारतीय सनातनी शाश्वत आध्यात्मिक परम्पराओं, गंगा, रामसेतु, गोमाता तथा अयोध्या रामजन्मभूमि अभियान के सच्चे संरक्षक तथा मार्गदर्शक बने हुए हैं।

प्रति वर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को पुरी धाम में अनुष्ठित होनोवाली भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के दिन जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती महाभाग अपने परिकरों से साथ गोवर्द्धन मठ से पधारकर श्रीमंदिर के सिंहद्वार के समीप खडे तीनों रथों तालध्वज, देवदलन तथा नंदिघोष रथों की सुव्यवस्था आदि का अवलोकन करते हैं तथा रथों पर जाकर रथारुढ़ चतुर्धा देवविग्रहों को अपना आत्मनिवेदन प्रस्तुत करते हैं। जगतगुरु की भगवान जगन्नाथ जी से एक ही प्रार्थना रहती है कि पृथ्वी, पानी, प्रकाश, पवन और आकाश आदि शांतिप्रद और सुखप्रद हों तथा विश्वमानवता की रक्षा हेतु चारों तरफ शांति ही शांति हो।

-अशोक पाण्डेय

कीट कीस और कीम्स के प्राण प्रतिष्ठाता महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत जी रथयात्राः२०२५ की लाइव कमेंट्री हेतु अशोक पाण्डेय को शुभकामनाएं देते हुए.

जिंदगी फाउंडेशन के सभी प्रतियोगी (२०) छात्र नीट २०२५ क्वालीफाई, दिहाड़ी मजदूर के बेटे रघुनाथ बेहरा ने PwBD केटेगरी में पूरे देश में तीसरा रैंक प्राप्त किया.

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-98

सभी के लिए सुनहरा

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

अवसर!

प्रश्न १ : भारतय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई थी ?

प्रश्न २ : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष कौन थी ?

प्रश्न ३ : भारतीय सेना के सर्वोच्च सेना कमांडर कौन है ?

प्रश्न ४ : मण्डल कमीशन किस प्रधान मंत्री के कार्यकाल में लागू हुआ है ?

प्रश्न ५ :लूनी नदी किस राज्य में बहती है ?

प्रश्न ६ : विश्व का विशालतम रेगिस्तान कौन सा है ?

प्रश्न ७ : विश्व के किस नगर को अपरिवर्तनीय नगर कहा जाता है ?

प्रश्न ८ : श्रीलंका में कौन से जनजाति सबसे अधिक पाई जाती है ?

प्रश्न ९ : श्वेत क्रांति का सम्बन्ध है ?

प्रश्न १० : सती प्रथा का सर्वाधिक विरोध किसने किया ?

प्रश्न १६: सेन्ट्रल रेलवे का कार्यालय कहाॅ स्थित है ?

प्रश्न १७ : सोमनाथ मन्दिर को किस मुसलमान आक्रमणकारी ने विध्वंस किया था ?

प्रश्न १८ : स्वर्ण मंदिर भारत के किस शहर में स्थित है ?

प्रश्न १९ : स्वेज नहर किन दो सागरों को जोड़ती है ?

प्रश्न २० : हरिजन शब्द किसने दिया था ?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः ....

पूरा पताः ....

....

....

फोन नं.: ....

ई-मेलः ....

''कहूँ? पर क्या कहूँ? ऐसी भोली-भाली, फूल जैसी निर्दोष लड़की से, जो मुझे दो मिलों तथा चार मोटरों का मालिक और माइकेल मधुसुदन दत्त पर्यंत बंगाली साहित्य का विद्वान समझती है। ऐसी श्रद्धामयी लड़की से भला क्या कहूँ?'' एक छोटी-सी कोठरी में करवट बदलते हुए नरेश को नींद नहीं आ रही थी। अपने सहपाठियों की नज़रों में उसने इस कोठरी को अपने चाचा का 'नेपियन-सी-रोड' का महल बना रखा था। किसी-किसी को तो उसने एक अट्टालिका को दूर से दिखाया तक भी था। पर चाचा का अभिमान तथा चाची की ल ड़ाकू वृत्ति की किलेबंदी करके उसने वहाँ सबका प्रवेश रोक रखा था। यह 'महल' जो हमेशा उसे गहरी नींद में सुला देता था, आज नींद के बजाय आँसुओं को उपहार दे रहा था। इस उपहार के पीछे उसको मेहनत करते हुए पिता तथा काया घिसती हुई माँ दिखायी देती है। नन्हें से गाँव की गंदी गलियाँ उभरती हैं।

आखिरी झूठ

कितनी सुंदर है वह? बात करने का मौका मिल जाए तो मज़ा आ जाए। नरेश घिया ने अपने आप से कहा। और बात करने के इरादे से उसने अपनी ओर बढ़ती हुई लड़की की तरफ़ मुसकरा-कर देखा।

उसके चेहरे पर भी मुस्कुराहट थी। वह कह रही थी,''मैं आपके पास आ ही रही थी।''

''सचमुच, मुझे बहुत खुशी हुई मिस''

''नंदिता मेहता'' उसने वाक्य पूरा किया।

''कल की गोष्ठी में मुझे आप का व्याख्यान बहुत पसंद आया,'' फिर अचानक वह आत्मविभोर हो कर बोली --''मुझे इतना पसंद आया कि मैंने सोचा अगर मैं खुद आकर आपका अभिनंदन नहीं करती हूँ, तो अपनी नज़रों में ही गिर जाऊँगी।''

नरेश ज़रा झुककर बोला,''थैंक्यू थैंक्यू थैंक्यू, मिस।''

''नंदिता, नंदिता मेहता नहीं मिस्टर घिया।''

''पर आपने गलती की न, मिस नंदिता।''

''मैंने गलती की? कौन-सी?

''मेरा नाम मिस्टर घिया नहीं, नरेश है।''

''ओह, सॉरी, हाँ मैं अपनी खुशी ही आपके सामने व्यक्त करना चाहती थी।''

''मैं गौरवान्वित हुआ। पर क्या मैं सचमुच इतना अच्छा बोला था, इतना अच्छा कि आपके जैसी तेजस्वी स्त्री, 'सॉरी,' कन्या को खुद चलकर आना पड़ा मुझे बधाई देने!''

''आप ज़रूर इतना ही अच्छा बोले होंगे, नहीं तो मैं इधर क्यों आती?'' एक मुसकराहट उसके अधरों पर थी,''आप कैसे आदमी हैं? जैसे कि आपको पता ही न हो कि आप कितना अच्छा बोले थे।''

''सचमुच पता नहीं है मिस नंदिता। बहुत ही भुलक्कड़ हूँ। पर क्या कहा था मैंने?''

''अगर यही मैं बता सकती, तो बधाई स्वीकार कर रही होती, दे न रही होती। पर वह क्या वाक्य था ---

''व्हॉट ग्रैमर इज लैंगुएज वह क्या क्या था?''

''हाँ हाँ, वह तो वह तो,

''नरेश चुटकी बजाते हुए कह रहा था, ''वर्ड्स आर टु थॉट व्हॉट, ग्रैमर इज टू लैंगुएज...''

(विचारों के लिए जो महत्व शब्दों का हैं, वही महत्व भाषा के लिए व्याकरण का है।) पर नंदिता जी यह उक्ति मेरी नहीं है, कहीं पढ़ी थी मैंने।''

''पढ़ी हुई ही सही, पर आपने इसका प्रयोग बहुत अच्छा किया। फिर आपकी तो आदत है कि किसी चीज़ का भी यश लेना नहीं चाहते। पंडया साहब कह रहे थे।''

''क्या कह रहे थे पंडया साहब?''

''यही कि नरेश बिलकुल अभिमानी नहीं है। हमारी कक्षा में कल की गोष्ठी के संदर्भ में बाते करते हुए आज ही उन्होंने कहा कि आपने कोई निबंध बहुत अच्छा लिखा था, किन्तु उसका भी यश आप लेने को तैयार न हुए।''

''मतलब?''

''मातालाबा आपने कोई बहुत 'ब्रिलियंट' बात लिखी थी। उसकी प्रशंसा होने पर आपने मुसकरा कर कहा था कि इसके लिए मुझे बहुत बुद्धिमान मानना गलत होगा, क्योंकि मैंने उसे कहीं पढ़ा था।

''मैंने तो केवल उसे उद्घृत कर दिया था और सच भी यही था, मिस नंदिता''

''मिस विस जाने दीजिए नरेश जी, सिर्फ़ नंदिता ही अच्छा लगता है।''

नरेश कुछ झुका। फिर मन में गुदगुदी महसूस करते हुए बोला, ''मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ। मुझे मसखरी करने की आदत है। मैंने इमानदारी से लिखा था कि परीक्षक अगर ऐसा मानेगा कि ऐसा लिखनेवाला लड़का प्रतिभावान है, तो यह उसकी भूल होगी। अकसर ऐसा भी होता है कि जो चीज़ परीक्षक ने न पढ़ी हो, उसे विद्यार्थी पढ़ ले और उसे परीक्षा में लिख दे, तो परीक्षक उसे होशियार समझने लगता है।''

''होशियार है तो लगेगा भी।''

इस तरह से नरेश तथा नंदिता की मित्रता गाढ़ी होती गई, जो थोड़े ही दिनों में सारे कॉलेज की चर्चा का विषय बन गई। कालेज में नई आई नंदिता अपने रूप तथा लावण्य से सबके आकर्षण का केंद्र थी। नरेश अपनी चपलता और होशियारी के लिए सब का प्रिय था ही --

पर वह उस रूपवती सुंदरी का भी प्रिय हो जाए, यह किसी को भी पसन्द नहीं आया फिर भी सभी समझते थे कि यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि नरेश जैसा प्रतिभाशाली था, वैसा ही धनवान भी था। बात-बात में वह लजाता हुआ कहता था कि बड़ौदा में उसके पिता की दो मिलें तथा चार मोटरें हैं। वहाँ तो बड़े राजसी ठाठ तथा लाड़-प्यार से रखा जाता है, पर उसकी इच्छा बंबई में ही पढ़ने की थी, इसलिए वह यहाँ चला आया है। मम्मी तो बहुत रोई थीं। पर पापा इरादे के बड़े पक्के हैं। बेटा अपने आप अपनी ज़िंदगी सँवार सके इसलिए न तो एक मोटर वहाँ से भेजते हैं और न मुझे यहाँ खरीदने देते हैं।

वैसे चार में से दो तो बेकार पड़ी रहती है। एक का इस्तेमाल मम्मी करती है, एक पापा की सेवा में रहती है। जब कभी मैं वहाँ होता हूँ, तब तीसरी मोटर भी मुझे दे दी जाती है। और मम्मी अक्सर कहती है,''तू अकेला है इसलिए तेरे हिस्से में दो दो मोटरें हैं।''

नरेश और नंदिता जब भी मिलते उनकी बातचीत का विषय मुख्यतः विदेश होता। नंदिता कहती --''मेरे पिता जी काफी वर्ष विलायत में रहें हैं इसलिए मेरा बचपन करीब-करीब वहीं बीता है। पर मेरे पापा बड़े ही सनकी है। जब मैं दस साल की हुई, तब उन्होंने अपना वहाँ रहने का इरादा बदल दिया। तंबू उखाड़कर इधर आए। अब वह माथेपर त्रिपुंड आँकते हैं और गीता के श्लोक बोलते रहते हैं बड़े सनकी लगते हैं।''

इतना कहकर वह ज़ोर से खिलखिला पड़ती। तभी नरेश पूछ बैठा,''टेम्स नदी को कलकल बहते नहीं सुना है ना?''

''कैसे बहेगी बिचारी जब सारा शहर उसे घेरे हुए है।''

''तो फिर ऐसे कलकल नाद करते हुए हँसना कहाँ से सीखा, नंदिता? बचपन तो तुमने उसी के किनारे बिताया है न?''

''आप बड़े वैसे हैं!''

''पर तुम्हारी तरह नहीं। और मेरे पिता भी तुम्हारे पिता की तरह नहीं हैं। उनमें सनक तो बिलकुल ही नहीं। व्यापार उनका प्राण है। विलायत में भी धंधा ही करते रहे। पारंगत हो कर जब स्वदेश लौटे, तब यहाँ भी व्यापार ही किया और ईश्वर की कृपा से उन्हें सफलता भी खूब मिली।''

''ठीक--ठीक!''

नंदिता हँस पड़ी।

''दो मिलें तथा चार मोटर गाडियों की सफलता कोई खास सफलता नहीं कहलाती नरेश जी''

''पाँचवी भी आनेवाली है,'' नरेश ने गंभीरता से कहा, ''आज ही मम्मी का पत्र आया है। उन्होंने इस बात को गुप्त रखने को कहा है।''

''यह किसे मिलेगी?''

''किसे मिलनी चाहिए?''

''तुमको,'' नंदिता ताली बजाती उठ खड़ी हुई, ''आपको भी फ़ायदा हो गया। मुझे भी कभी उसमें लिफ्ट दोगे ना?''

''मैं क्या कहूँ,'' नरेश ने असमंजस में पड़ते हुए कहा। उसकी आवाज़ भी धीमी पड़ गई,''कि उसे किसी को दे सकूँ, इसीलिए मम्मी का 'स्क्रू' घुमाने की कोशिश कर रहा हूँ।''

''सचमुच!''

सामने रखी एक किताब की ओर संकेत करते हुए नंदिता ने नरेश से पूछा --

''तुम मार्क्स को पूरा कर चुके हो शायद। यह तो कोई दूसरी किताब लगती है?''

''यह फ्रायड की है, देखनी है?''

''भाड़ में जाए फ्रायड,

मुझे तो उसका नाम भी पसंद नहीं।''

''तुम बहुत जल्दी ही ऊब जानेवाली जान पड़ती हो।''

''तो लाओ, देख लेती हूँ, इसमें क्या है?''

''नहीं, नहीं, रहने दो, मेरा फायड इतना गिरा हुआ नहीं है,'' नरेश ने हँसते हुए कहा।

और उस पुस्तक को उसने जरा परे खिसका दिया।

''देखूँ, तुम्हारा फ्रायड। उसमें क्या पढ़ने लायक है?'' कहकर उसने अचानक आगे बढ़कर पुस्तक उठा ली।

''अरे! यह तो लंदन की 'गाइड-बुक' है। फ्रायड कहाँ हैं?''

"अरे, यह आ गई? बदल गई होगी। शायद, पटेल है ना, काफी दिनों से पीछे पड़ा है, लंदन के बारे में जानने के लिए। इसीलिए उसे देने के लिए लाया हूँ। बेचारा फ्रायड तो मेरे कमरे में ही सो रहा होगा।"

"पर यह भी उन लोगों के लिए है जो लंदन से बिलकुल अनजान है।"

"पटेल तो अनजान ही है ना!"

"पर यह पुस्तिका तो एकदम नई है। क्या उसी के लिए खरीदी?"

"क्या करूँ मित्र है ना!

और फिर क्या उसकी खरीदने

की औकात है?"

"कितने उदार हो तुम!"

"उदार तो तुम हो नंदिता।"

नरेश की आवाज़ भाव-विभोर हो उठी।"नहीं तो मेरे जैसे को इतने स्नेह भरी मित्रता कैसे देती!"

"तुम्हारे जैसे को?" नंदिता ने भृकुटी सिकोड़ कर पूछा।

नरेश ने उसी दिन अपने पिता को पत्र में लिखा, "आपकी एक बात हमेशा सच होती रहती है कि मुझे परीक्षा में अच्छी डिवीजन नहीं मिलती। वैसे, यह बात सभी मानते हैं कि मेरा सामान्य ज्ञान बहुतों से अच्छा हैं। चूँकि मैं किताबी कीड़ा नहीं हूँ। शायद, इसीलिए ऐसा है। यहाँ कोई नहीं मानेगा कि मैं वास्तव में ठूँठ हूँ। इतना ठूँठ कि बंगाली सीखने बैठा पर लिपि इतनी टेढ़ी-मेढ़ी कि उसी में उलझ कर रह गया और उसे छोड़ बैठा, फिर भी मेरे मित्र मुझे बंगाली का पंडित मानते हैं। मुझे हँसी आती है उन पर।

माँ कैसी हैं? दुकान कैसी चल रही है? व्यापार मंदा ही लगता है। पिछले महीने आपने मुझे २५ रुपए कम भेजे थे। गुज़ारा कर रहा हूँ। पिछले महिने से एक ट्यूशन भी मिल गई है। आपकी कैसी तंदुरूस्ती है, उसमें मैं आपको ज़्यादा मेहनत करने देना नहीं चाहता हूँ।

अगले वर्ष तक मैं बी.ए. कर लूँगा। बस, इतनी ही देर है। इसके बाद मैं आपका बोझ हलका करने।"

उसकी आँखें भर आई, हाथ रुक गया। उसे दो मिलों तथा चार मोटरों की याद हो आई!

पत्र डाक में डालकर नरेश ने एक अजीब-सी तसल्ली महसूस की। ऐसी ही जैसी नंदिता के सान्निध्य से होती थी। यह सान्निध्य अब और ज़्यादा मधुर हो गया था।

कभी-कभी कोई यह भी कह उठता था कि दोनों का विवाह हो जाए तो जान छूटे। पर विवाह कैसे हो सकता था। नरेश तो जैसे कुछ जानता-समझता ही नहीं था। "सारी दुनिया समझती है तो फिर यह कैसे नहीं समझता?" नंदिता सोचती थी।

"कैसा भोला है।"

"तुम कुछ समझते क्यों नहीं?"

"क्या नहीं समझता?"

"जो सारी दुनिया समझती है वह।"

"कि..."

"यह मुझसे नहीं कहा जाएगा।"

"तो किससे कहा जाएगा?"

"तुमसे," कहकर नंदिता ने अचानक उसका हाथ थाम लिया। जो कुछ नरेश को अभी तक समझमें नहीं आया था, वह अचानक ही आ गया।

"नंदी," वह सिर्फ़ इतना बोल सका।

"बोलते क्यों नहीं?"

"क्या बोलूँ, तू तो बहुत भोली है।"

"भोले तो खुद हो। मन की बात कहने का साहस तक नहीं करते!" हालात ने नरेश को जैसे सावधान कर दिया हो। उसके मुख पर एक निर्णय, एक निश्चय की चमक थी, उसने कहा, कहूँगा, एक दिन ज़रूर कहूँगा।"

"कहूँ? पर क्या कहूँ? ऐसी भोली-भाली, फूल जैसी निर्दोष लड़की से, जो मुझे दो मिलों तथा चार मोटरों का मालिक और माइकेल मधुसुदन दत्त पर्यंत बंगाली साहित्य का विद्वान समझती है। ऐसी श्रद्धामयी लड़की से भला क्या कहूँ?" एक छोटी-सी कोठरी में करवट बदलते हुए नरेश को नींद नहीं आ रही थी। अपने सहपाठियों की नज़रों में उसने इस कोठरी को अपने चाचा का 'नेपियन-सी-रोड' का महल बना रखा था। किसी-किसी को तो उसने एक अट्टालिका को दूर से दिखाया तक भी था। पर चाचा का अभिमान तथा चाची की लड़ाकू वृत्ति की किलेबंदी करके उसने वहाँ सबका प्रवेश रोक रखा था।

यह 'महल' जो हमेशा उसे गहरी नींद में सुला देता था, आज नींद के बजाय आँसुओं को उपहार दे रहा था। इस उपहार के पीछे उसको मेहनत करते हुए पिता तथा काया घिसती हुई माँ दिखायी देती है। नन्हें से गाँव की गंदी गलियाँ उभरती है।

उसमें क्या नंदिता रह सकती है?

नामुमकिन, बिलकुल नामुमकिन।

मैं नरेश घिया चाहे जितनी गपोड़ी होऊँ, पर ऐसा अत्याचार कभी नहीं कर सकूँगा। तो कहना क्या चाहिए? नंदिता से?"

"अब तो नंदी," उसने कहना चाहा। नंदिता जैसे नींद से जागी हो। विस्मय उसके चेहरे पर था। वह सोच रही थी नरेश की इस आवाज़ में इतनी व्यथा क्यों हैं?

"तुमने एक दिन मुझसे कहा था कि मैं तुमसे कुछ कहूँ।"

"हाँ, हाँ," वह उत्साहपूर्वक बोली,

"मैं तो इसी का इंतज़ार कर रही थी, हर रोज़, हर घड़ी, हर पल।"

"मुझे तुमसे जो कहना है, वह कहूँगा, पर पहले एक सवाल पूछूँ?"

"पूछो ना, नहीं क्यों?"

"तुम मेरी कितनी घनिष्ठ मित्र हो?"

"हूँ ही।"

"पर फिर भी।" नरेश अचकचाया, बोला,"क्या मैंने कभी कोई मर्यादा तोड़ी है? मैंने कभी भी तुम्हारा मित्र के अलावा किसी और तरीके से स्पर्श किया है? सच कहना।"

"नहीं किया। पर तुम ऐसे हो, इसी कारण तो, मैं क्या कहूँ तुमको,"

"कैसी भोली हो," उसने कहा --

"इतना गहरा संबंध होने पर भी मैंने ऐसा कुछ क्यों नहीं किया,

इसका विचार तक तुमने नहीं किया।"

"इसमें विचार क्या करना।

तुम इतने अच्छे हो कि..."

"मनुष्य चाहे जितना अच्छा हो फिर भी वह ऐसा नहीं करेगा, नंदी।"

"तो फिर कौन नहीं करेगा?"

नंदी ने छेड़ा।

"शादी-शुदा"

जैसे कब्र से नरेश की आवाज़ आई।

"नरेश," नंदिता चीख-सी पड़ी।

"शादी-शुदा"

नरेश ने उतने ही धीमे स्वर में दोबारा कहा। इसके पहले कि नंदिता उसे रोक कर कुछ पूछ सके, वह चला गया। हिंदवी. समय

-गुलाबदास ब्रोकर

रूपांतर - प्रमिला राजे

बनवास

परिन्दे तेंज-तेंज पर मारते उड़ते जाते हैं, और धूप पीली होकर अचल के बड़े तालाब की सीढ़ियों पर उतर आयी है। गुरुद्वारे के कलश का रंग डूबती हुई किरणों में सुनहरा सफेद लग रहा है और बड़े मैदान से दूसरी ओर लालिमा बिखरने लगी है। अब थोड़ी देर में ही रावण को आग लगा दी जाएगी। लोग शोर मचाएंगे, डर-डर कर दूर भागेंगे और शाम के नीले धुंधलके में उड़ती हुई चिनगारियाँ फुलझड़ियाँ लगेंगी। देर रात आग के शोले उठेंगे। आस-पास के लोगों के चेहरे अग्नि के प्रकाश में बड़े भयानक लगेंगे, जैसे इनमें से हर एक रावण का रूप धारे सीता को जुदाई से विलाप करते देखने और दूसरी बार बनवास भोगते पाकर खुश होने यहाँ आया हो।

बनवास कितनी कठिन बात है, पर किसी के वश में तो कुछ भी नहीं, कौन अपनी इच्छा से दुख को गले लगाता है?

भाई कहा करते थे, ''बीबी! ये सारा समय सपने-से क्यों देखती हो। ये प्यार जो अब तुम्हें मिलता है, प्रकाश जो तुम्हारे आस-पास दिख रहा है, हौले-हौले कम होता जाएगा, समय हर वस्तु में कमी कर देता है। पर ये बर्बादी इतनी आहिस्ता से होती है कि हमें इसकी आदत पड़ जाती है,'' आज भाई कहाँ हैं? अगर जन्मभूमि की गन्ध लिए मेरे साथ-साथ चलने वाली हवा जा सकती है तो उन्हें कहीं ढूंढ़ सकती तो मैं कहती'जाकर पूछो तो सही इस दुख में कमी क्यों नहीं होती?'

वर्षों बोझ उठाते और कठिन रास्तों से गुजरने पर भी इनसान सपने क्यों देखता है? सुख की आशा क्यों रखता है? प्रकाश से इतना प्रेम क्यों करता है?

सीता जी ने बनवास भोग कर यही दुआ क्यों की थी कि वह रामचन्द्र से मिल सके। क्या विपदा मानव को कठोर नहीं कर देती कि वह अच्छे दिनों की आशा ही छोड़ दे।

अँधेरे से प्रेम क्यों नहीं हो सकता? आंखिर क्यों? नाख के पेड़ में उस साल से फूल आ रहे हैं जिस साल मुन्नी पैदा हुई थी। रुत बदलती है तो टहनियाँ फूलों से भर जाती हैं, और पेड़ फलों के बोझ से झुक जाता है, पेड़ और धरती का सम्बन्ध और भी गहरा हो जाता है। इसकी जड़ें धरती में और गहरी होती चली जाती हैं। इस सम्बन्ध को कोई भी नहीं तोड़ सकता।

मुन्नी अब बड़ी हो गयी है। कितने वर्ष मेरे समीप से दबे पाँव निकले चले जाते हैं।

आज बड़ी मां ने गुरुपाल से कहा था, ''काका, बहू और बच्चों को दशहरे में घुमा ला। कितने वर्षों से वह इस गाँव से बाहर भी नहीं निकली।''

गुरुपाल ने बड़ी तेजी से कहा, ''मां, तूने यह भी कहा कब था, यह वर्षों से बाहर नहीं निकली तो इसमें मेरा क्या दोष है!''

भला इसमें किसका दोष हो सकता है? जब कोई मुझे बहू कहता है तो लगता है गाली दे रहा हो। वर्षों से सुन रही हूं। उस रात से सुनती आयी हूं जब गुरुपाल ने मुझे इस आँगन में ढकेला था और चौके में बैठी हुई बड़ी मां से कहा था

''मां, देख तेरे लिए बहू लाया हूं, बांकी और सुन्दर। आज जितनी लड़कियाँ हमारे हाथ लगीं उनमें से सबसे अच्छी है'', और दीए की लौ को उठा कर मां मेरी तरफ आयी थीं। भूख और डर से मेरी आँखें फटी हुई थीं। मीलों नंगे पाँव चलकर मुझमें अब उँगली उठाने की भी शक्ति न थी। मैं इनके कदमों में ढेर हो गयी। आंगन में बँधी भैंस और गाय मुझे टुकर-टुकर देख रही थीं और चारा छोड़ कर खड़ी हो गयी थीं। मां ने सिर से पाँव तक मुझे कई बार देखा था और फिर कहा था

''तू अगर अच्छे काम करता तो आज ये हाल न होता मेरा, देख, चूल्हा झोंकते-झोंकते मेरी आँखें अन्धी हो चली हैं। और सारी कहारियों ने फसल पर अनाज न मिलने के कारण हमारे घर आना बन्द कर दिया है। बता तू ही मुझसे इस घर का बोझ कैसे संभालेगा। खेतीबाड़ी करे तो क्या ही सुख हो मुझे।''

गुरुपाल ने कहा, ''देख तो सही अब महरियों-कहरियों के नखरे उठाने की क्या जरूरत है। ये तो तेरी दासी है। इसी से चक्की पिसवा, पानी भरवा, जो मन चाहे करवा, अब मैंने तुझे

''तू अगर अच्छे काम करता तो आज ये हाल न होता मेरा, देख, चूल्हा झोंकते-झोंकते मेरी आँखें अन्धी हो चली हैं। और सारी कहारियों ने फसल पर अनाज न मिलने के कारण हमारे घर आना बन्द कर दिया है। बता तू ही मुझसे इस घर का बोझ कैसे संभालेगा। खेतीबाड़ी करे तो क्या ही सुख हो मुझे।'' गुरुपाल ने कहा, ''देख तो सही अब महरियों-कहरियों के नखरे उठाने की क्या जरूरत है। ये तो तेरी दासी है। इसी से चक्की पिसवा, पानी भरवा, जो मन चाहे करवा, अब मैंने तुझे बहू ललाके दे दी है।'' सारे गाँव में बहुएं आयीं, न कोई बाजा बजा, न किसी ने ढोलक पर लहक-लहक कर गीत गाए, न नाचने वालियों ने स्वांग भरे, न कूल्हे मटका कर अनुकरण किया। मेरे धूल से सने हुए बालों में न किसी ने तेल डाला न किसी ने श्रृंगार किया। कोरे हाथों और उजड़ी मांग से मैं सुहागन बन गयी।

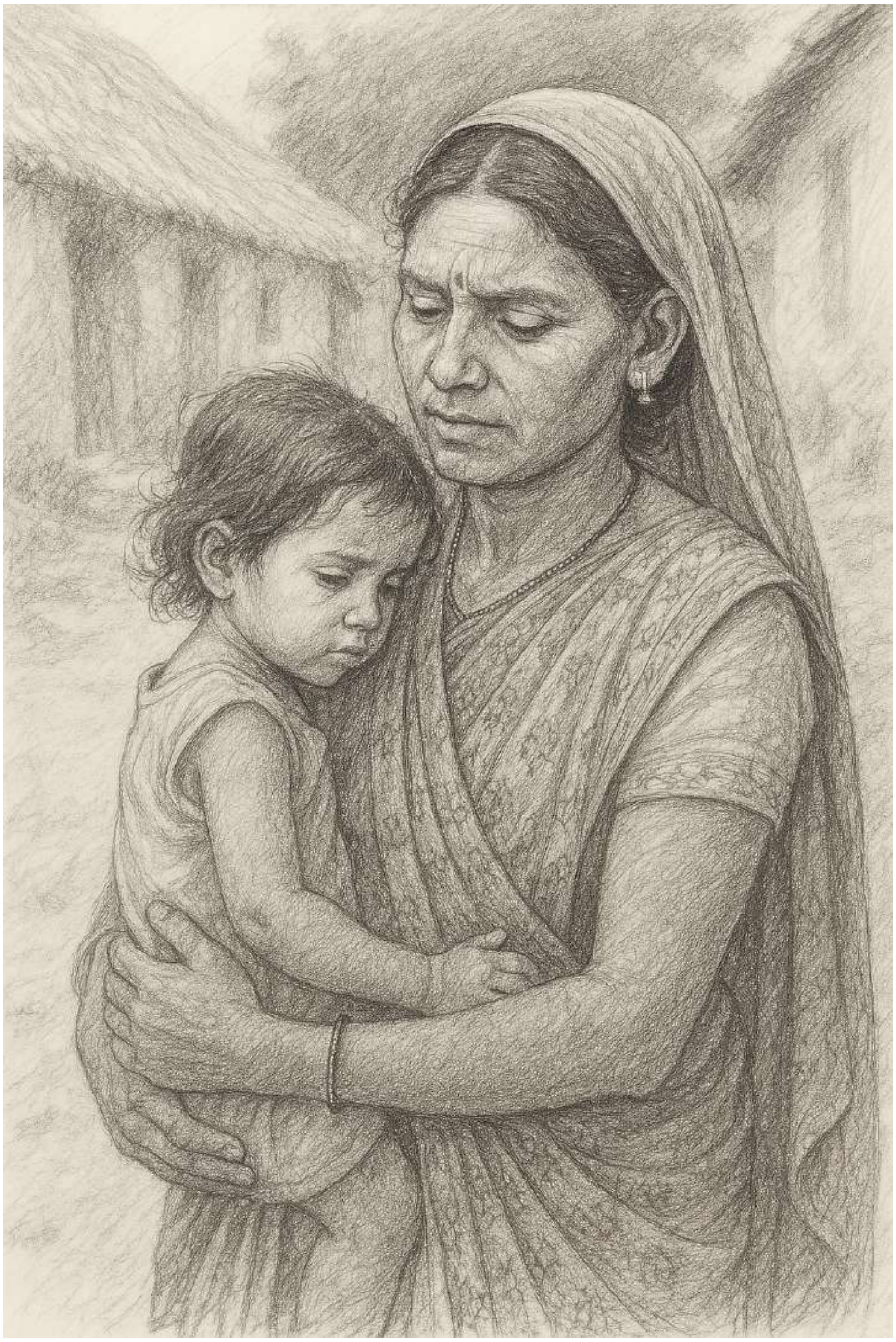

बहू ललाके दे दी है।''

सारे गाँव में बहुएं आयीं, न कोई बाजा बजा, न किसी ने ढोलक पर लहक-लहक कर गीत गाए, न नाचने वालियों ने स्वांग भरे, न कूल्हे मटका कर अनुकरण किया।

मेरे धूल से सने हुए बालों में न किसी ने तेल डाला न किसी ने श्रृंगार किया। कोरे हाथों और उजड़ी मांग से मैं सुहागन बन गयी। बड़ी मां ने गुरुपाल की बातें सुनकर यूं मेरी ओर देखा जैसे मैं कोई विपदा हूं जिसे उसका पोता कहीं से उठा लाया है। फिर दीया उसी तरह हाथ में लिए वह चौके में चली गयी और मुझसे किसी ने कुछ न पूछा कि बहू का कैसा स्वागत हो रहा है।

तब से आज तक मैं भी सीता जैसी हूं। मैं बनवास भोग रही हूं। झूले उखाड़ते, बीड़ियाँ पीते, झूलेवाले एक-दूसरे को गालियाँ दे रहे हैं और गधे पर सामान इतनी शक्ति से लाद रहे हैं जैसे गधे लकड़ी के हों। रामलीला की रथें एक ओर खड़ी हैं। और रूप धारनेवाले लड़के चमकीले कपड़े पहने मलाई की कुल्फियाँ और चटनी वाले पकौड़े खा रहे हैं। दूध और चटनी के धब्बे इन रंगबिरंगे कपड़ों पर कोढ़ के दागे लगते हैं। मुन्नी खड़ी उन्हें तकती जा रही है। उसे इस बात का भी एहसास नहीं कि वह खो जाएगी। एहसान होने से भी क्या होता है, जिसे खोना होता है वह भरे घर में खो जाता है।

गुरुपाल उन्हें खींच रहा है और दोनों लड़के थक कर रोते हुए हर बेचने वाले को देखकर खरीदने के लिए पाँव पटक रहे हैं। ये मेला है। मांएं, बच्चों से लापरवाह भीड़ में धक्के खाकर इधर-उधर हो जाती हैं, और छोटे बच्चे एक-एक चेहरे को तकते जोर-जोर ये रोते आगे-ही-आगे भागे जाते हैं। भला मेले में बिछुड़ने वाले कभी मिलते हैं? यह वियोग जन्म-जन्मान्तर से चाहने वालों के बीच दीवार बन जाता है। वह चेहरे जिन पर हम सब कुछ लुटा दें, इस आस पर कि हम इन्हें एक बार फिर देख सकें, कहीं दिखाई नहीं देते रास्ते लहरों पर ताना-बाना बुनने वाले कीड़ों के कदमों के पदचिन्हों की तरह हमारे पीछे मिट जाते हैं। हम जिन राहों से चल कर आते हैं उनसे लौट नहीं सकते। कुछ भी तो वापस नहीं आता और मेले की भीड़ आगे चलती रहती है।

''समय कभी लौट कर नहीं आता,'' भैया कहा करते थे, ''बीबी जो क्षण बीत गया, वह मिट जाता है, धूल बन जाता है।'' जब मैं पढ़ने में दिल नहीं लगाती और गुड़ियाघर को सजाने में स्कूल से आकर सहेलियों के साथ लगी रहती तो भैया मुझे समझाया करते थे।

यह गुड़ियाघर मुझे बाबा ने लाकर दिया था। मुन्नी अपने दोनों हाथों से एक बड़ी-सी कपड़े की गुड़िया संभाले हुए है। गुरुपाल ऊपर भीड़ को देख रहा है और मुन्नी समय-समय पर झुक-झुककर अपनी गुड़िया को देखती जाती है। दोनों लड़के रावण की मूर्ति लिए हुए हर चेहरे को आश्चर्य से देख रहे हैं। मुन्नी की आंखों में अपनी गुड़िया के लिए कितना प्रेम है। कपड़े के चौड़े से मुंह पर बेढंगे रंगों से नाक और सिरआंखें बनी हुई हैं। नाक में नथुनी है। गोटे लगी चुनरी सिर पर रखे अपने लहंगे को संभाले ये कंचनी, लगती है अब नाचेगी। अचल के तालाब के किनारे होकर खेतों में से

MONAD UNIVERSITY
Recognized & Approved by :
UGC
UP Govt.
PCI
BCI
NCTE
AIU
आज़ादी का अमृत महोत्सव
बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ
शिक्षित महिला - सशक्त भारत
ADMISSIONS OPEN 2024-25
*Free Education for Girls.
COURSES OFFERED

काजल फुट वेयर
हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है
कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)
स्पेशल ऑफर के साथ

हमारा रास्ता संग्राओं को जाता है। जीवन की यात्रा निरन्तर चलती रहती है। सीधे टेढ़े रास्तों और उलझी हुई पगडण्डियों से किसी लक्ष्य पर पहुंचने की प्रबल इच्छा भी हो, तो भी निरन्तर चलते रहना पड़ता है हमेशा-हमेशा चाहे पाँव घायल हों और दिल में कुछ न हो।

शाम का नीला धुंधलका और नीचे उतर आया है। शाम न जाने क्यों मुझे बहुत उदास कर देती है। आकाश पर अकेला तारा, धड़कता, काँपता, दीये की लौ की तरह थरथराता है और नीलाहट के रिक्त समुद्र में इसकी तन्हाई मुझे अपने बनवास की याद दिलती है। मानरव के इस अकेलेपन में मैं उस अकेले पेड़ की तरह हूं जिस पर न फूल आते हैं न फल।

ये तारा मुझे उस जहांज की याद दिलाता है जिसमें बैठ भाई समुद्र पर गये थे। वह अपने ढेरों सामान के साथ इतनी दूर की यात्रा करने के लिए जब तैयार हो रहे थे, तो अम्मा रो पड़ी थीं

मगर फिर भी धैर्य के साथ वह सामान ठीक कर रही थीं और दुआएँ पढ़ती जाती थीं। बाहर बाबा कई तरह के प्रबन्ध में लगे थे और भैया बड़े उदास थे। आपा चुपचाप गुमसुम आँगन में दबे पाँव चलती इधर-उधर आ जा रही थी। मैं सारे घर में चहकती फिरती थी। चोट जब तक न लगे घाव के दर्द का कहाँ पता चल पाता है।

बन्दरगाह तक हम सब इन्हें पहुँचाने गये थे। भैया भाभी का सामान रखवाने, कागंज ठीक करने जहाज पर ऊपर आ-जा रहे थे और मैं जंगले पर झुकी मटियाले हरे रंग के पानी को देखती भाई से पूछ रही थी, ''यह पानी ऐसा क्यों हैं? इस पर तेल के धब्बे क्यों हैं? नावें क्यों हैं? ऊँची-नीची लहरों पर डोलती ये नावें जब डोलती हैं तो सिर नहीं चकराता क्या?'' प्रश्नों से परेशान होकर भाई कह रहे थे जब तू बड़ी हो जाएगी न बीबी तो सारी बातें अपने आप मालूम हो जाएंगी।

और आज मुझे मालूम हुआ कि जिस नाव के साथ चप्पू न हो वह डूब जाती है। नावों को डुबोने के लिए एक लहर भी काफी होती है। वह तो तटों पर भी डूब जाता हैं। बड़े होने पर जब इन बातों का पता चला तो भाई नहीं है।

फिर जहाज की सीटियाँ सुनाई दीं और बाबा ने भाई को गले लगाकर सिर पर हाथ फेरा और अन्त में खुदा को समर्पित किया। भैया मां से लिपट गये थे। आपा बड़े कमजोर दिल की थी, बात-बात पर रोने लगती थी। उसे हिचकियों से रोते देखकर भाई ने कहा था

''बीबी को देख कैसी खुश है भला। इसमें रोने की क्या बात है, दो साल में तो मैं लौट ही आऊँगा, कोई मैं हमेशा के लिए थोड़े ना जा रहा हूं.'' फिर मुझे सीने से लगा कर बोले, ''बीबी मैं तेरे लिए पेरिस से उपहार लाऊँगा, तू मुझे पत्र लिखती रहना'' और मैंने जोर से सिर हिला दिया था। फिर जब अन्तिम सीटी सुनाई दी तो वह बड़े सन्तुष्ट से बहुत लापरवाही से पग उठाते जैसे कहीं समीप ही जा रहे हों चले गये। जब तक जहांज दिखता रहा हम रुमाल हिलाते रहे, फिर शाम की धुन्ध में बन्दरगाह के प्रकाश की परछाईं पानी की लहरों में डोलने लगी और जहांज की बत्ती अकेले तारे की तरह काँपती हुई आँखों से ओझल हो गयी। इसके बाद सारा प्रकाश मेरे चारों ओर हमेशा के लिए डूब गया। लहरों में से फिर कोई किरण नहीं निकली।

मैं अम्मा से लिपट कर कितनी जोर से चीख पड़ी थी, जैसे कोई मेरे दिल में कह रहा था अब ये चेहरा कभी दिखाई नहीं देगा। अब तू भाई को कभी देख न सकेगी। मेरा दिल जोर-जोर से काँप रहा था जैसे पश्चिम में खाली आसमान को देखकर रूहें काँप जाती हैं। देर बागों में रात अपनी काली लटें बिखरा रही थी। गुरुपाल ने अपने दोनों बच्चों को कन्धों पर बिठा लिया है और वह खेतों के बीच सफेद लकीरों-सी पगडंडी पर हमसे आगे-आगे जा रहा है और मुन्नी धीरे-धीरे चल रही है। पानी के नालों को छलाँग कर वह उस खेत पर हमारी प्रतीक्षा करेगा, और दोनों बच्चों को रावण की कहानी सुनाएगा। इसे क्या मालूम सीता उसके पीछे आ रही है और वह स्वयं रावण है।

मुन्नी मुझसे कहती है, ''मां, स्वरूप के मामा ने उसे दशहरे पर बड़े अच्छे रंग-बिरंगे कपड़े भेजे हैं। रेशमी हैं, हाथ लगाने में बहुत अच्छे लगते हैं। मां मेरा कोई मामा नहीं है जो मुझे अच्छी-अच्छी चीजें दे सके। मां तुम बोलती क्यों नहीं? मेला अच्छा नहीं लगा तुम्हें, तुम थक गयी हो ना मां?

''हां बेटी मैं थक गयी हूं , मैं बूढ़ी हो गयी हूं मुझे बहुत चलना पड़ा है ना।''

''कोई बूढ़ी नहीं हो गयी,'' मुन्नी बड़े विश्वास के साथ मेरी ओर देख कर कहती, ''तुम तो देवी की मूर्ति लगती हो, बड़ी मां भी यही कहती है।''

मुन्नी को क्या पता मुझे कितना चलना पड़ा है। एक जीवन से दूसरे जीवन तक की दूरी कम नहीं होती, और जब इनसान ऐंठ जाता है तो उसके मन में कोई भी आशा नहीं रहती, तब वह पूज्यनीय हो जाता है। संग्राओं के रास्ते पर बिछड़ों की प्रतीक्षा करते-करते मेरी आँखें पथरा गयी हैं। मेरा मन खाली है, मैं लक्ष्मी हूं। फिर भी दुखों का ताना कितना अटूट है। गहरा और पक्का, कभी साथ न छोड़ने वाला।

मुन्नी फिर पूछ रही थी, ''क्या हमारे कोई मामा नहीं?

मैं इससे क्या कहूं इसे क्या उत्तर दूँ। दोराहे पर खड़ी सोच रही हूं।

भैया मुझे कितना प्यार करते थे पर मैं उनसे डरती भी थी। वह घर में घुसते तो चुनरी अपने सिर पर आ जाती। चाल में ठहराव और हंसने की ध्वनि धीमी हो जाती। मैं इनके सामने खड़ी होती तो लगता दुनिया में इनसे लम्बा कोई होगा ही नहीं। साफ-सुथरी लकीरें, न कागज गन्दे करते, न हाथ में स्याही भरते। मुझे कहते, ''बीबी जब तू बड़ी हो जाएगी तो तू भी ऐसे ही लिखा करेगी।'' आज भैया मुझे देखते तो क्या कहते? मेरे भाग्य की रेखाओं पर इतनी स्याही है कि सारे पन्ने पर एक भी तो सीधी रेखा दिखाई नहीं पड़ती। मुझे तो कभी लिखना न आया।

उन दिनों गुड़ियाघर सजा कर मैं सोचा करती थी, हम इसमें रह सकते हैं। अम्मा, बाबा और मैं, भैया और आपा सभी यहाँ रहेंगे, जीवन एक रसभरा गीत है, कोई कमी नहीं इसमें।

भैया की शादी हुई तो मैंने कहा था हमारा घर स्वर्ग है आकाश वाला स्वर्ग। उन दिनों अगर मैं दुआ मांगती तो समझ में नहीं आता कि क्या माँगू। आज की तरह मैंने खुदा से कुछ नहीं माँगा। सुख और दुख की चरम सीमा, जीवन के चक्कर में एक ही डगर पर हैं।

भाई समुद्र पार चले गये और मेरे स्वर्ग के स्वप्न चूर-चूर हो गये। सारे जीवन की सिलवटें नुकीले किनारों के काँच के टुकड़ों की तरह इधर-उधर फैलकर गुजरने वालों को घायल कर रही हैं। राह के दूसरी ओर जाने वाली तो कोई भी नहीं रहा। रास्ता ऐसे सूना पड़ा था जैसे श्मशान घाट हो। दूर-दूर तक कोई

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY
₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY
₹ 599

नहीं आता। सीता जी के विलाप को इस देश में कौन सुनता, अकेलेपन का दुख कितना कठोर होता है, जीवन कितना कठिन हैं, गुरुपाल दूर खड़ा मुझे पुकार रहा था। मुन्नी को पुकार रहा था। हम दोनों बहुत हौले-हौले चल रहे हैं। कपास के खेतों में केवल सूखी लकड़ियाँ खड़ी हैं। हंसते फूल लोग समेट कर ले जाते हैं। गेहूं के खेतों में अभी न बालें फूटी हैं और न इनमें दाने पड़े हैं।

बड़ी मां बहुत बेचैन होंगी। मेरी ओर से वह हमेशा चिन्तित रहती हैं। जिस देश का वह सोचती हैं उसका रास्ता कठिन है। घायल दिल को लेकर उजड़ी मांग के साथ मैं भला कहाँ जा सकती हूं। गाने वालों की टोलियाँ भजन गाती मेरे पीछे आ रही हैं। अचल के तालाब के पास जमा हुआ मेला अब बिखर रहा हैं। मजदूर जोर-जोर से बातें करते मेरे और मुन्नी के समीप से गुजर रहे हैं। महिलाएं अच्छे-अच्छे कपड़े पहने, दोपट्टे को संभालती घूंघट माथों तक सरकाए मेले में खरीदी मिठाइयाँ और पोटलियों को हाथ में पकड़े, बच्चों को कन्धे से चिपटाए नंगे पाँव तेंज-तेंज चल रही हैं। ''मां तुम चुप क्यों हो? कोई बात करो न मुझे डर लग रहा है।'' मुन्नी बढ़ते अँधेरे में मेरे हाथ को पकड़ने के प्रयत्न में अपनी गुड़िया को संभाल नहीं सकती। इसकी आवांज आँसुओं से भीग रही है। इसको कोई और प्रश्न पूछने का होश नहीं।

मुन्नी जब बड़ी होगी तो इसे अपने आप पता चल जाएगा कि अँधेरे से डरना बेकार है। जब इसका जादू चल पड़ता है तो कुछ किये नहीं बनता। भाई कहा करते थे, ''बीबी पानी में शक्ति है अपना रास्ता स्वयं ढूंढ़ लेता है।'' मैं हर काम को करने में लगी रहती हूं ताकि व्यस्त रहूं सोचने-विचारने का समय न मिल पाए।

जब समय था तो सोच न था, अब सोच है तो समय नहीं। हर जगह कुछ-न-कुछ कमी रह ही जाती है। कभी कुछ नहीं होता और कभी बहुत कुछ। आज आँखें बन्द करती हूं। तो दिल कहता है वह सब अभी आएंगे और भैया मुझे देखते ही कहेंगे 'बीबी यह क्या चेहरा बना रखा है, फुलकारी तुम्हारे सिर पर अच्छी ही नहीं लगती। उतारो इसे। ये देख मैं तेरे लिए क्या लाया हूं। छोड़ दे सारे काम, इधर आ मेरे पास बैठ। जब हम आया करें तो बस मेरे पास ही बैठा कर।' प्रेम के सहारे जो स्वर्ग आबाद था उस पर इस प्रकार धूल छा जाएगी सोचा भी नहीं था। हम तस्वीरों की तरह वास्तविकता की परछाई हैं। मेरे दिल तो हमेशा से बावला था, उल्टी बातें सोचने वाला और बड़ा ही मूर्ख!

दिल हमेशा से अनहोनी बातें सोचता और यूँ ही धड़कता है। जब इससे बातें करती हूं तो कहता है, ''आखिर तेरा क्या जाता है बीबी! सपनों पर तो किसी का वश नहीं और फिर उस सपने में क्या बुराई है कि खुले किवाड़ों के अन्दर किसी दिन वह सब आ जाएं जिनकी तुम्हें प्रतीक्षा सता रही है।''

मैं कहती हूं, मेरे लिए अँधेरा-ही-अँधेरा है, निराश होना घोर पाप है, पर आशा आखिर किससे करूँ? मुन्नी मेरा आंचल पकडे पूछ रही है, ''मां बताना हमारे घर क्यों नहीं आते, क्या दीपावली में हम मामा के घर नहीं जाएंगे मां? मां अब मेरा दिल कहीं नहीं लगता, मैं बस मामा के पास जाऊँगी।'' किससे पूछूँ, इसके मामा का घर किस नगर में है। संग्राओं से बाहर मुझे सारे घर गुड़ियाघर लगते हैं। जिनकी कोई वास्तविकता नहीं। और फिर भी आत्मा न जाने क्यों भटकती ही रहती है। ऐसी वस्तुएं ढूंढती है जो कहीं भी नहीं दिखतीं। ऐसी आवांजों को सुनना चाहती है जो फिर कभी सुनाई न देंगी। सिर पर गोबर के टोकरे उठाते, दूध दुहते न जाने क्यों कुछ महीनों से मेरा दिल धड़का करता है। पर अब मुझे मालूम है वह सब जहाँ भी हैं वह देश मेरी पहुँच से बाहर है। कहानियों के उस नगर की खोज लगाकर मैं क्या करूंगी। गुरुपाल, बच्चे और मैं अब सब साथ चल रहे हैं। सरकंडों के रेशमी बौर अब मेरे बालों को छू रहे हैं।

मुन्नी कहती है , मां मैं थक गयी हूं , मुझसे अब और नहीं चला जाता। लड़के रो रहे हैं इनकी आँखें नींद से बन्द हो रही हैं। रावण से ये संभाले नहीं संभलते। हम खेत की ऊँची मुंडेर पर बैठ गये हैं। मुन्नी गोद में लेटी है। गुरुपाल कह रहा है, ''देखो तो सही औरतें इतनी मूर्ख हैं आज कितने बच्चे खो गये हैं। मेले में इन्हें होश ही नहीं रहता।''

''मेले के बिना भी तो बच्चे माओं से बिछुड़ जाते हैं।'' मैं उसकी ओर देखे बिना मुन्नी का सिर सहलाते हुए बोल रही हूं। ''तुम कभी भूल भी पाओगी कि नहीं, वह समय और था ये और है,'' गुरुपाल हौले से बोला। गुरुपाल को मैं कैसे समझाऊँ कि समय कभी भी और नहीं था और इनसान के भाग्य में दुख इसलिए है कि वो भूल नहीं सकता। मेरी याद अभी तक तांजी है। हर ओर आग लगी थी। देश आजाद होकर बँट गया था। अम्मा और बाबा ने कहा सारे लोग पागल हैं जो डरते हैं वही घर से भागे जाते हैं। अम्मा-अब्बा कितने भूले थे, ये भी नहीं जानते कि दुख हमेशा अपनों ही से मिलते हैं। भगवान, गुरु और अल्लाह के नाम पर दान देने वाले हाथों ने एक-दूसरे की हत्या की। बहनों-बेटियों के लिए कट मरने वाले औरत की मान-मर्यादा को झूठा बोल समझने लगे। भाई और अपनों के शब्द सदियों-सदियों की बेड़ियों की तरह इस आंजादी में कट गये और जत्थे बनाकर घूमने वालों के पाँव में धूल बनकर मिल गये।

अम्मा बाबा से बोली, ''जान के साथ इज्जत का भी डर है जो इन लड़कियों के साथ है। मेरी मानो तुम इन सबको भैया के पास भेज दो।''

बाबा बोले, ''लोग गाड़ियाँ-की-गाड़ियाँ काट कर फेंक रहे हैं। ऐसे में जाना और भी खतरे से खाली नहीं। तुम सब घर में रहो खुदा हमारी मदद करेगा।'' यूं समय तो कट गया, पर बाबा की भूल यही थी को उन्होंने पुरानी जिन्दगी का सहारा लिया था। और इसी भूल के बदले जब गुरुपाल मुझे घर से बाहर घसीट कर ला रहा था मैंने बाबा के सफेद सिर की नाली के पास पड़ा देखा था। बन्द आँखों और खून से भरे सिर को भूल कर न जाने वह किस शक्ति से प्रार्थना कर रहे थे। दुआ के कबूल होने का वह समय था भला? अम्मा के सीने से एक चमकता हुआ छुरा आर-पार हो गया था। आपा की चीखें आज भी मुझे आँधी के हंगामे में कभी-कभार सुनाई पड़ जाती है। गुरुपाल मुझे खींचे लिए जा रहा था। आज भैया होते तो कोई मुझे छू सकते था, कोई मुझे यूं नंगे सिर जन्मभूमि की उन राहों पर घसीट सकता था जिसका कण-कण मुझे प्यार करते थे। मुझको बाबा से अभी तक कितनी बातें करनी शेष थीं। अम्मा को मैंने कितना सताया था। भैया और भाभी को कितना तंग किया था। और जब मैं डोली के बिना संग्राओं तक खींची गयी तो बाबुल का देश छूट चुका था और कोई न था विदा करने के लिए।

दुख सहने के बाद अगर सुख की आशा हो तो दुख का बोझ हल्का हो जाता है। पर...?

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

बड़ी मां की मार, गुरुपाल की गालियाँ, भूख-प्यास मैंने दूर टिमटिमाते दिए की तरह इस आशा की तरह देखकर बर्दाश्त कर ली थी कि शायद भइया मुझे ढूँढ़ते किसी दिन संग्राओं में आ जाएं। फिर मैं बड़ी मां की ओर देखकर मुस्करा दूंगी और गुरुपाल की ओर देखे बिना भइया के साथ चली जाऊँगी। उस दिन नीम के पत्तों से खेलती हवा गीत गाएगी और सारा गाँव खुशियाँ मनाएगा। इनसान सारे संसार का स्वयं को केन्द्र क्यूँ समझता है? न जाने क्यूँ? जब आँखें अँधेरा नहीं देखतीं, इनसान उजाले के लिए आँखें झपकाता रहता है और सपने देखता रहता है। आशाएं आवारा विचारों की तरह आस-पास चक्कर काटती रहती हैं। जब मुन्नी पैदा हुई तो मेरे सपनों की कड़ियाँ ढीली पड़ गयी। दिल के चारों ओर आशाओं का घेरा बिखर गया। मैंने सपनों में भी जागना शुरू कर दिया। संग्राओं के गीतों में मेरा भी कभी-कभी एक बोल गूँज उठता।

जब दोनों देशों में मैत्री हुई तो गुरुपाल उदास रहने लगा। सहमा-सहमा और परेशान-सा। इन दिनों मुन्नी पाँव-पाँव चलती थी और प्यारी-प्यारी तोतली बातें करती। खबरें जोर-शोर से फैलीं पर मुझे कोई फौज लेने नहीं आयी।

फिर मैंने सुना पास के गाँवों में दूसरे देशों के सिपाही लड़कियाँ ढूँढ़ रहे हैं। किस देश के...? कहाँ, किन लोगों के बीच? उन दिनों मैंने भी सोचा था, शायद भइया और भाभी मुझे ढूँढ़ने आएंगे। मैं हर रोज आशाओं की पोटली में गिरह बाँधती और आस लगाए गली के मोड़ की ओर देखती। उस वर्ष सर्दियों में सिपाही संग्राओं में मुझे भी लेने आये। पर मैं भइया और भाभी की बहन होने के साथ-साथ मुन्नी की मां भी थी। और मैंने सोचा-जाने ये कौन लोग हैं। वह कौन-सा देश हो...जीवन में पहली बार मेरा विश्वास डगमगाया। सपनों के नगर धूल बनकर मेरे सामने से हट गये। मेरी जड़ें संग्राओं के गाँव में गहरी हो गयीं। सूखना, मुर्झाना और बर्बाद होना किसे अच्छा लगता है। हर दुखियारन ब्याह कर कहीं-न-कहीं जाती है। मेरे ब्याह में भइया और भाभी न मिले तो क्या हुआ। गुरुपाल ने मेरे लिए लाशों का ढेर तो बिछाया था। खून से रस्ते लाल तो किये थे। शहर-के-शहर जलाकर प्रकाश जन्मा था। लोग चीखते-चिल्लाते भागते मेरी शादी की खुशियाँ मना रहे थे। मैं कितनी बार उस किताब के अक्षरों को देखती रही थी जो गुरुपाल वर्षों बाद मुन्नी को पढ़ाने के लिए लाया था। और शब्द मेरी आँखों में धड़कन बन गये थे। मुझे याद आयी वो कहानी जो भइया ने सुनाई थी, ''बीबी उससे भी अच्छी कहानियाँ किताबों में हैं। बस तू थोड़ी और बड़ी हो जा फिर देखना कितनी मजेदार बातें पढ़ने को मिलेंगी।'' कहानियों की शहंजादी की तरह जब फौज मुझे छुड़ाने आयी तो मैं छुप गयी। मैं किसी और के साथ क्यूं जाती भला? मुझे ले जाने भइया और भाभी क्यूं नहीं आये? मैं दिल-ही-दिल में भइया और भाभी से रूठ गयी और आज तक रूठी हुई हूं।

मुन्नी जब मेरे पास लेटती और पूछती, ''मां तुम दीपावली में मामा के घर क्यूं नहीं जातीं। मां हमें कोई भी मिठाई क्यूं नहीं भेजता?''

मामा कभी खोजने ही नहीं निकलते मुन्नी, तेरे मामा कभी भी विदा कराने नहीं आये। भला जीवन में किसी के पास इतनी फुर्सत कहाँ कि किसी को ढूँढ़ने निकले। भइया के बच्चे भी अब मुन्नी के बराबर बड़े हो गये होंगे। वह जब अपनी मां से मामा के घर के बारे में पूछते होंगे तो क्या भाभी को भी चुप रह कर या ध्यान हटाने के लिए इधर-उधर की बातें नहीं करनी पड़ती होंगी। कभी-कभार दिल में कहानियाँ होती हैं पर मुंह पर एक शब्द भी नहीं आता। गली की बहुएं जब नीम की छाँव में चरखे कातती गीत गातीं तो मैं चुप रहती हूं। मायके के गीतों में कितना रस होता है। रुतें बदलती हैं। साल-के-साल कभी किसी को और कभी किसी को उनके पिता-भाई जब विदा कराने आते हैं तब आशा, रेखा, पुरु और चन्दर के पाँव धरती पर नहीं टिकते। वह हर एक से गले मिल-मिल कर मायके जाती हैं। इनके बोल गीत लगते हैं। रुतें बदलती रहती हैं।

लड़कियाँ कौओं को कोठे से उड़ाकर अपने वीरों का रास्ता तकती हैं। मैं कौओं को उड़ाने के लिए उठाऊँ तो बेजान हाथ मेरी गोद में गिर जाते हैं। बड़ी मां को मुझ पर विश्वास हो गया। जब मैंने अपनी पिछली जिन्दगी से सारे नाते तोड़ लिए तो बड़ी मां से नाता और गहरा हो गया। मैं उनकी लक्ष्मी बहू बन गयी हूं। मेरे हाथ का सूत वह बड़े चाव से लोगों को दिखाती हैं।

खेतों में हरे गेहूं की बालों की सुगन्ध फैले धुएं में मिलकर एक गीत गा रही थी। इक्के-दुक्के तारों से भरा आकाश, नहर में कलकल लहरें, जैसे इन गीतों के बोल थे। कभी बैलों के लिए सिर पर चारे के गट्ठर उठाए किसानों के पीछे, किसी दिन घोड़े पर सवार एक जवान, मेरे खुले किबाड़ों के सामने आकर उतरे और भइया कह कर मैं उससे लिपट जाऊँ। मैं दरवांजे पर खड़ी-खड़ी भला किसकी राह ताकती हूं। मेरी आँखों में आँसू आ गये। मुन्नी के सिर पर अगर ये आँसू गिर गये तो वह घबरा कर उठेगी और पूछेगी, ''मां तुम रोती क्यूं हो?'' मैं उससे अपना दुख क्या कहूंगी? मुन्नी अगर पूछे, ''मां तुम्हारी आँखें भीगी क्यूं हैं? तुम दशहरे की रात भी रोती हो मां? मां क्या तुम थक गयी हो?''

गुरुपाल ने दोनों बच्चों को कन्धे पर उठा लिया है। मुन्नी और मैं संग्राओं जा रहे हैं। सीता जी ने दूसरी बार बनवास जाने के बदले रावण का घर कबूल कर लिया है। मुझमें इतनी शक्ति कहाँ से आएगी कि मैं दूसरी बार किसी अँधेरे से बाहर पाँव धर सकूँ? जीवन का सारा प्रकाश पीछे नगर की तरह मुझसे दूर हटता चला गया मगर मुझे फिर भी अँधेरे से प्यार नहीं हो पातान जाने क्यूं? मुझे चलते ही जाना है। थकान मेरे अंग-अंग में दुख बन कर फैली है। पर फिर भी मुझे चलते ही जाना है। जीवन के मेले में वासी और बनवासी सब कदम बढ़ाए चलने पर मजबूर हैं।

सबसे अधिक डर मुझे मुन्नी से लगता है। वह कल फिर मुझसे वही सवाल पूछेगी और फिर कोई इसकी बात का जवाब नहीं दे पाएगा। न गुरुपाल, न मैं और न शायद बड़ी मां। कई प्रश्न ऐसे क्यूं होते हैं? इतने कठिन जिनका जवाब कोई भी न दे सके? सर्दियों की लम्बी रातों में दुख अलाव जलाकर, बीते सपनों को बुलाता और कहानियाँ सुनाता है। कहानियाँ भला कभी सच्ची हो सकती हैं। मन बड़ा हठी है, इसे बीते दिन न जाने क्यूं याद आते रहते हैं। संग्राओं से परे भी कोई चिन्ता है क्या? गाँव की ऊँची-नीची गलियों में गोबर और मूत की बास, अनाज की बास के साथ मिली जिन्दगी के धारे की तरह बहती चली जाती है। आज का दिन भी समाप्त हो गया। हवा के झोंकों की तरह दिन समाप्त हो जाते हैं। जाने अभी कितना रास्ता शेष है।

-जमीला हाशमी

(उर्दू से अनुवाद : शम्भु यादव)

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

अपने देश से दूर रहते वहाँ के हर भारतीय से अंदरूनी लगाव रहता है। निशा और नेहा की गपशप में रंग चढ़ने लगा। उलझनों को सुलझाने की कोशिशें की जाने लगीं। परिवार में रिश्तेदारों के हस्तक्षेप से नेहा कुछ परेशान थी। नेहा का इस तरह बुलाना, निशा का आत्मीयता से जाना और उसे समझाना, यह आम बात हो गई थी। निशा उम्र में बड़ी होने के नाते नेहा को समझाती, उतने पल के लिए नेहा मान भी जाती, पर...। इस बार जब उसकी बीती कहानी सुनी तो निशा दंग रह गई।

कच्ची नींव

छुट्टी का दिन था, रात के नौ बज रहे थे। निशा के बेटे छुट्टियों में घर आए थे, सो दिन भर के लिए दो तीन परिवार खेरान की ओर निकल पड़े। यों तो कुवैत रेगिस्तान है पर कुछ जगहें ऐसी ज़रूर हैं जहाँ हरियाली और फव्वारों के बीच मौजमस्ती से समय गुज़ारा जा सकता है।

एक तो १३० किलोमीटर की ड्राइव, दूसरे वहाँ साइकिल रिक्शा का मज़े-मज़े में चलाना पर वापस लौटे तो थक कर चूर, सभी सुस्त हो रहे थे। रात का खाना हल्का-फुल्का किस तरह का हो इस पर चर्चा चल रही थी। इतने में फ़ोन की घंटी बजी। निशा की सहेली, नेहा का फोन था। उम्र में छोटी होने के नाते वह निशा को दीदी कहती है। फ़ोन पर ही रोने लग गई। कहने लगी, 'दीदी, आप जल्दी से मेरे घर आ जाइए।' पल भर के लिए निशा घबरा गई। हालाँकि ऐसे घबरा कर फ़ोन करके बुलाना और निशा का वहाँ भागा-भागा जाना, यह कोई नई बात नहीं थी। लेकिन इस बार के बुलाना निशा को कुछ दर्द का अहसास दे रहा था।

अब्बासिया की इस बिल्डिंग में दोनों पास-पास रहती थीं। निशा तुरंत उसके घर पहुँच गई। विदेश में रहने वालों को ऐसे ही एक दूसरे का सहारा बनना पड़ता है। वह कह रही थी, 'मुझे यहाँ नहीं रहना, वापस जाना हैं।'

नेहा के इस वाक्य का अर्थ निशा जल्दी नहीं लगा पाई। एक बेटी चार साल की और दूसरी गोद में ६-७ महीने की। अकेली ही जाऊँगी यह जिद भी कुछ अजीब ही थी उसकी। एक माँ के लिए ऐसी छोटी-छोटी बेटियों को छोड़ कर जाना इतना आसान नहीं (शायद किसी माँ के मन में भी न आए), पर यह कैसी माँ है और ऐसी किस मुसीबत में आ गई है कि उसकी सोच सब मायने पार कर चुकी है। निशा कुछ अंदाज़ा नहीं लगा पा रही थी।

खाड़ी देशों में या विदेशों में ही गृहिणियों के लिए समय बिताना एक समस्या-सी रहती है। अपने देश के माहौल से एकदम अलग माहौल में खुद को ढालना कठिन काम होता है। अपनी रुचियों ऐसे समय काफ़ी साथ निभाती हैं। साथ में अड़ोसी-पड़ोसी अच्छे मिलें तो समय थोड़ा मज़े में बीत जाता है।

अब्बासिया के इस मुहल्ले में भारतीय अधिक होने के कारण भारतीय लोग यहीं रहना पसंद करते हैं। कुछ माहौल भारतीय बना रहता है। हालाँकि ज़्यादातर लोग दक्षिण भारत के हैं पर उत्तर और पूर्वी भारतीयों की भी कमी नहीं। यों ही शाम को टहलते हुए नेहा से निशा का परिचय हुआ था। पहले सिर्फ पहचान थी, लेकिन यह पहचान धीरे-धीरे चुलबुली नेहा निशा के करीब पहुँचने में देर नहीं लगी। अपना बना लिया था।

अपने देश से दूर रहते वहाँ के हर भारतीय से अंदरूनी लगाव रहता है। निशा और नेहा की गपशप में रंग चढ़ने लगा। उलझनों को सुलझाने की कोशिशें की जाने लगीं। परिवार में रिश्तेदारों के हस्तक्षेप से नेहा कुछ परेशान थी। नेहा का इस तरह बुलाना, निशा का आत्मीयता से जाना और उसे समझाना, यह आम बात हो गई थी। निशा उम्र में बड़ी होने के नाते नेहा को समझाती, उतने पल के लिए नेहा मान भी जाती, पर...। इस बार जब उसकी बीती कहानी सुनी तो निशा दंग रह गई। जितना निशा नेहा के बारे में जानती थी वो एक अधूरा सच था। इसका मतलब निशा ने नेहा को पूरी तरह जाना ही नहीं था अब तक? निशा के मन में पूरी सच्चाई क्या हो सकती है इस पर सवालिया निशान लग चुका था।

निशा नेहा के घर पहुँचने तक उसके बारे में ही सोचती रही। उसकी जिंदगी के कुछ पहलू जो निशा के सामने खुले थे उस पर मन ही मन नज़र डालने लगी। माँ बाप की यह लाडली बेटी अपने छोटे भाई और बड़ी बहन के साथ बड़ी हो रही थी। अपने बच्चों से बेहद प्यार करने वाले लेकिन कठोर स्वभाव के नेहा के पिता जी ने अनुशासन के नाम पर घर का माहौल डरावना बना रखा था। पढ़ने-लिखने के बहाने उनका गाँव छूट गया, पर पढ़े-लिखे लोगों की जो सोच होनी चाहिए, वह विकसित नहीं हो पाई। नेहा बता रही थी, 'गाँव से बड़े शहर को देखने या किसी बहाने, घर में लोगों का तांता लगा रहता था। उनके सामने भी हमारे पिता जी हम बच्चों को मार पीट करने से चूकते नहीं थे।' माहौल में एक अजीब-सा तनाव बना हुआ रहता था।

ऐसे माहौल में एक दिन पेइंग गेस्ट के नाम पर अजय का इनके घर में प्रवेश हुआ। कुछ वजह रही होगी, बारह साल की उम्र में अजय घर से निकला और दर-दर की ठोंकरें खाता हुआ यहाँ तक पहुँचा था। उनत्तीस-तीस साल का अजय इतने सालों से प्यार का भूखा था। नेहा के माँ पिता जी से दो प्यार के बोल सुनता तो खुश हो जाता। अजय की मीठी-मीठी बातों से घर में हँसी-खुशी गूँजने लगी। और उन्नीस साल की कच्ची उम्र में मुलायम दिल की नेहा अजय की ओर कब आकर्षित हो गई, पता ही नहीं चला।

नेहा हमेशा सोचती कि अजय ने बारह साल की छोटी-सी उम्र से ही अकेली जिंदगी जी है, उसे प्यार के सहारे की, सँभालने की ज़रूरत है। उधर मन ही मन में अजय भी नेहा को चाहने लगा था। जब अजय ने एक दिन अपने प्यार का इज़हार नेहा के सामने किया तो वह सिहर उठी। नेहा ने घर में हमेशा मारपीट और घबराहट का ही माहौल देखा था। अजय के शादी के प्रस्ताव

को स्वीकारना यानी इस माहौल से मुक्ति और अजय को अपने प्यार का सहारा, यही सही कदम होगा। उम्र में अजय नेहा से काफी बड़ा है, इस बात को भी उसने नज़रअंदाज़ कर दिया। सहमी और साहस की कमी के कारण दबी-दबी-सी रहने वाली नेहा ने अपनी बहन तक को इस बात की भनक तक नहीं लगने दी और चोरी छुपे शादी कर ली। नेहा अपने घर में ही रह रही थी इसलिए घर में किसी को कोई शक नहीं हुआ।

अजय शादी के बाद नौकरी के बहाने विदेश चला गया। कॉलेज का पहला साल नेहा ने जैसे तैसे पूरा किया। साथ-साथ अजय के पत्र का इंतज़ार करती रहती। एक साल बाद अजय नेहा को लेने आ पहुँचा। पहले से ही अजय के साथ शादी के बंधन में बँधी नेहा आज अपने माँ बाप का घर छोड़ कर, वो भी बिना बताए, उन्हे दुख पहुँचाते हुए परदेस जाने की तैयारी में थी। लेकिन ससुराल के प्रति उसका प्रेम जाग उठा। नेहा ने सोचा कि यही एक अच्छा मौका है, माँ-पिता जी से बेटे को मिलाने का।

अजय माँ-पिता जी से मिलने जाने के लिए राज़ी नहीं था लेकिन अपने लोगों की, माँ बाप के प्यार की क्या कीमत होती है यह नेहा जानती थी। वही खोया हुआ प्यार अजय को दुबारा वह वापस दिलाना चाहती थी। अपनी जिद में नेहा अजय के साथ ससुराल पहुँची। पहला स्वागत कुछ खास नहीं हुआ लेकिन बाद में अपने स्वभाव से नेहा ने सब का मन जीत लिया। हँसी खुशी के कुछ पल ससुराल में बिता कर नेहा अजय के साथ कुवैत आ गई।

पढ़ा-लिखा ज़्यादा नहीं होने के कारण अजय की नौकरी कुछ ज़्यादा अच्छी नहीं थी पर पहला साल जैसे तैसे गुज़र ही गया। २१ साल की उम्र में जब नेहा पहली बार माँ बनने वाली थी तब निशा से उसकी मुलाकात उस से हुई। हर कदम पर पति का दुख सुख में साथ देने वाली नेहा हमेशा जिंदादिल रहती थी। उसे प्यारी-सी बेटी हुई।

अजय भी बहुत मेहनती। शिक्षा ज़्यादा नहीं ले सका लेकिन हर काम लगन से करता था, नये-नये काम सीखनें में खूब दिलचस्पी लेता। वेल्डिंग और लकड़ी का काम सीख कर मज़दूर की हैसियत से इस देश में कदम रखने वाले अजय ने बड़ी लगन से फैक्स मशीन, जेराक्स मशीन और कम्प्यूटर जैसी मशीनें ठीक करने में महारत हासिल कर ली और अंग्रेज़ी भाषा के साथ-साथ यहाँ की अरबी भाषा पर भी उसका अच्छा खासा प्रभुत्व हो गया।

यह यात्रा कुछ आसान न थी। लेकिन नेहा का साथ था और आगे बढ़ने की लगन! हर मंजिल आसान-सी लगी। अजय-नेहा का आंतरजातीय विवाह था। ऐसे विवाह में काफ़ी मुश्किलें थी, काफ़ी समझौते भी थे। नेहा खुद शाकाहारी होने के बावजूद अजय के लिए माँसाहारी खाना बनाने लगी। अजय अपनी बुद्धि व परिश्रम की चमक दिखाते हुए टेक्निशियन के पद तक पहुँच गया। सब कुछ सामान्य था, उत्साहवर्धक था और धीरे-धीरे दोनों की गृहस्थी जमने लगी।

हमेशा काम करने की लगन के कारण अजय काम में ही व्यस्त होता गया। शुरू-शुरू में नेहा इस बात से नाराज़ होती थी। लेकिन अब बेटी के साथ उसका दिल लगने लगा। बेटी की परवरिश में अजय पिता की हैसियत से समय नहीं दे पाता था, पर नेहा अपनी तरफ़ से बेटी और पूरे घर की जिम्मेदारी सँभाल रही थी। हालाँकि परदेस में यह सब अकेले निबटाना आसान नहीं पर नेहा चुपचाप सबकुछ करती रही।

समय बीतता गया। नेहा ने एक और बेटी को जन्म दिया। अजय का काम अपने ऑफिस के बाहर भी फैलने लगा था, उसे दिन के चौबीस घंटे भी कम लगते और इधर दो छोटे बच्चों के साथ नेहा को हर पल गुज़ारना मुश्किल होता था। सहेलियों और रिश्तेदारों का अभाव, मनोरंजन की कमी, घर के कामों का बोझ और दो छोटी बेटियों के पालन पोषण की जिम्मेदारी उस अकेली पर। कभी-कभी अजय पर ही झुंझला पड़ती और उधर अजय भी काम की थकान से लौटने पर घर की अव्यवस्था, बच्चों के रोने या समय से खाना तैयार न मिलने पर बिगड़ पड़ता। ऐसे अनेक मौकों पर नेहा निशा के शरण आती, निशा उसे समझाती और फिर सब कुछ सामान्य हो जाता।

इसी बीच कलकत्ता से अजय के छोटे भाई विजय का ख़त आया कि घर की हालत अच्छी नहीं। वह बी.ए. करने के बाद एक एडवर्टाइजिंग कंपनी में नौकरी कर रहा था, लेकिन परिस्थिति ख़ास सुखदायी नहीं थी। अजय ने सोचा कि यदि विजय को यहाँ बुलाया जाय तो अच्छा रहेगा। एक व्यक्ति के आने से घर का उदास और अकेलापन दूर हो जाएगा, यह सोच कर नेहा ने भी तुरंत हामी भरी।

विजय के लिए भाग दौड़ कर एक नौकरी का इंतजाम॰ कर के अजय ने उसे कुवैत का वीज़ा भिजवाया और कुछ ही दिनों में विजय कुवैत आ पहुँचा।

इतने बरसों बाद दोनों भाइयों को साथ-साथ बैठ कर बाते करते देख नेहा भी खुश हो गई। बच्चियाँ भी खुश थीं। घर में रौनक छा गई थी। लेकिन दोनों भाइयों की जिंदगियाँ ऐसी मिलीं कि नेहा को अपनी जिंदगी उजड़ती नज़र आने लगी। भाई से मिलने के बाद अजय इतना बदल जाएगा ऐसा नेहा ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। विजय के सामने नेहा की अहमियत शून्य होने लगी।

विजय के आने के बाद थोड़े दिन हँसी-मज़ाक और खुशी में अच्छे बीते। अपनी महीने की आय के हिसाब से चलना इन दोनों भाइयों ने सीखा ही नहीं था। अजय-विजय के पिता जी ने भी इसी स्वभाव के कारण सब कुछ गँवाया था। लेकिन यहाँ तो बेटे भी पैसों की कीमत क्या है यह सोचने की जगह अपने पिता जी के कदमों पर ही चलते नज़र आ रहे थे। इस रईस देश के रईस लोगों के साथ बराबरी करना चाहते थे। विजय तो यहाँ की चकाचौंध देखकर बौखला गया था। अपने छोटे भाई के कहने में आकर और उसका दिल रखने के ख़ातिर बिना सोचे समझे ख़रीदारी शुरू हो गई और जिन चीज़ों के बिना गुज़ारा संभव हो सकता है उन्हीं चीज़ों का ढेर घर में सजता गया।

इन सब बातों से नेहा दुखी रहने लगी। आज जेब में पैसा है तो उसे खर्च करने की बजाय थोड़ा कल के बारे में सोचने में नेहा यकीन रखती थी। हमेशा बेटियों के भविष्य के बारे में सोचती रहती। यदि ऐसे ही चलता रहा तो आगे क्या होगा। अजय इतना ज़्यादा मेहनती है कि यदि कुछ सोच समझ होती तो आगे के एक दो सालों में ही हालात सुधर सकते थे लेकिन इस खर्चीले स्वभाव के कारण अनेक बार छोटी-छोटी चीज़ों के लिए मुश्किल समय में नेहा को निशा के सामने हाथ फैलाने की नौबत आन पड़ती थी। शून्य से उठे हुए अजय को नेहा ने बराबर का साथ दिया था। इसलिए ऐसे मौके पर वह खुद को कमज़ोर महसूस करती थी, भविष्य की चिंता सताने लगती। ■

–दीपिका जोशी

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

30% off
Enriched With
Vitamin E
Keeps eyes nourished
Almond Oil
Gives a smooth glide for an
intense black color in one stroke
Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

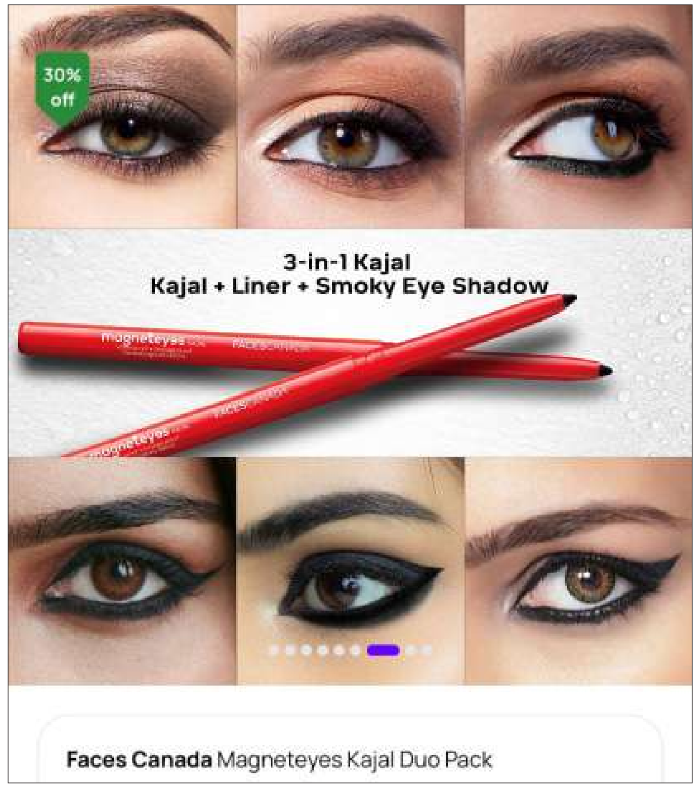
30% off
3-in-1 Kajal
Kajal + Liner + Smoky Eye Shadow
Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

17% off
GET INSTANT
GLOWING SKIN
WITH
UBTAN RANGE
GOOD VIBES
UBTAN RANGE
CTSM

30% off
SUPER SAVER
DEEP CLEANSING CHARCOAL COMBO
DEEP CLEANSING
GOOD VIBES
SKIN PURIFYING FACE WASH
Activated Charcoal
DEEP CLEANSING FACE SCRUB
PEEL OFF MASK
DEEP CLEANSING SHEET MASK
Activated Charcoal

दिल्ली में पुरानी गाड़ियां रखने वालों को बड़ी राहत, फिलहाल सीज नहीं होगी आपकी कार!

दिल्ली में पुरानी गाड़ी रखने वालों को फिलहाल बड़ी राहत मिलती नजर आ रही है. लोगों की गाड़ी पेट्रोल पंप पर सीज नहीं होगी. पर्याप्त सिस्टम नहीं होने के कारण यह फैसला लिया गया है. दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को पत्र लिखकर निर्देश संख्या ८९ के पालन को रोक लगाने को कहा है. इसके तहत दिल्ली में एंड-ऑफ-लाइफ (ईओएल) यानी वो डीजल और पेट्रोल वाहन जो अपनी समय सीमा पूरी कर चुके हैं उन्हें ईंधन देने से मना किया गया है. मंत्रर ने कहा कि 'हम आयोग से आग्रह करते हैं कि निर्देश संख्या ८९ के पालन पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाई जाए. जब तक कि स्वचालित नंबर प्लेट पहचान यानी ANPR सिस्टम पूरे एनसीआर में इंटीग्रेटेड नहीं हो जाती. उन्होंने पत्र में लिखा कि हमें विश्वास है कि दिल्ली सरकार के चल रहे बहुआयामी प्रयासों से वायु गुणवत्ता में पर्याप्त सुधार आएगा.

१ जुलाई से दिल्ली में १५ साल से पुराने पेट्रोल वाहनों और १० साल से पुराने डीजल वाहनों को पेट्रोल नहीं दिया जा रहा है। पेट्रोल पंप पर ऐसे वाहनों पर एक्शन लिया जा रहा है। जो भी पुराने वाहन पेट्रोल भराने आ रहे हैं, उनके तुरंत जब्त किया जा रहा है. बुधवार को ८५ वाहनों को ट्रैफिक पुलिस ने पकड़ा लेकिन केवल ७ वाहनों को जब्त किया गया. बाकी ७८ वाहनों को छोड़ दिया गया. इससे पहले १ जुलाई को ८० वाहनों को जब्त किया गया था. सवाल यह है कि दूसरे दिन सिर्फ ७ वाहनों को क्यों जब्त किया गया और बाकी वाहनों को क्यों छोड़ दिया गया.

दिल्ली पेट्रोल डीलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष निश्चल सिंघानिया ने कहा कि पुरानी गाड़ियों पर दिल्ली सरकार की सख्ती के चलते दिल्ली की सड़कों पर दूसरे दिन अजीब सा सन्नाटा नजर आया. मर्सिडीज, ऑडी और बीएमडब्ल्यू जैसी लग्जरी और चमचमाती कारे कम ही नजर आईं. यातायात विभाग का कहना है कि ७८ वाहन अपनी उम्र को पूरा जरूर कर चुके हैं लेकिन उन्हें इसलिए छोड़ दिया गया क्योंकि इनके खिलाफ कोई आपत्ति प्रमाणपत्र जारी नहीं था.

रवींद्र जडेजा ने वर्ल्ड क्रिकेट में मचाई खलबली, यह कारनामा करने वाले बने दुनिया के पहले खिलाड़ी

भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने इतिहास रच दिया है. वह आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के इतिहास में २००० या २००० से अधिक रन के साथ-साथ १०० या १०० से अधिक विकेट चटकाने वाले दुनिया के पहले खिलाड़ी बन गए हैं. खबर लिखे जाने तक ३६ वर्षीय दिग्गज ऑलराउंडर ने वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के ४१ मुकाबलों में हिस्सा लिया है. इस बीच उनके बल्ले से २०१० रन निकले हैं. इसके अलावा गेंदबाजी में उन्होंने १३२ सफलता प्राप्त की है.

इंग्लैंड क्रिकेट टीम के मौजूदा कप्तान एवं दिग्गज ऑलराउंडर बेन स्टोक्स के पास भी यह बड़ी उपलब्धि हासिल करने का सुनहरा मौका है. खबर लिखे जाने तक उन्होंने अपनी टीम की तरफ से वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के ५५ मुकाबलों में हिस्सा लिया है. इस बीच उनके बल्ले से ३३६५ रन निकले हैं. मगर गेंदबाजी के दौरान वह ८६ विकेट ही चटका पाए हैं. भविष्य में वह १४ विकेट और प्राप्त करने में कामयाब होते हैं तो वह भी जडेजा के खास क्लब में शामिल हो जाएंगे. बात करें रवींद्र जडेजा के टेस्ट करियर के बारे में तो उन्होंने देश के लिए खबर लिखे जाने तक ८२ टेस्ट मुकाबलों में हिस्सा लिया है. इस बीच उनके बल्ले से १२१ पारियों में ३५.३ की औसत से ३४९५ रन निकले हैं. टेस्ट क्रिकेट में उनके नाम चार शतक और २३ अर्धशतक दर्ज है. वहीं बात करें उनके गेंदबाजी प्रदर्शन के बारे में तो उन्होंने टेस्ट के इतने ही मुकाबलों की १५३ पारियों में २४.६१ की औसत से ३२४ विकेट चटकाए हैं. इस दौरान उनके नाम तीन बार १० और १५ बार पांच विकेट चटकाने का कारनामा जुड़ा है.

भारतीय ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप में २००० रन और १०० विकेट का रिकॉर्ड बनाया है.वह इस चैंपियनशिप के इतिहास में ऐसा करने वाले पहले खिलाड़ी बने हैं.जडेजा ने वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के ४१ मैचों में भाग लिया है.उन्होंने अपने करियर में २०१० रन बनाए हैं.

कोलकाता के लॉ कॉलेज में छात्रा से दुष्कर्म मामले में चौथा आरोपी गिरफ्तार

कोलकाता रेप केस में सीन को रीक्रिएट किया गया

कोलकाता में लॉ की छात्रा के साथ हुए गैंगरेप मामले में पुलिस की जांच जारी है. पुलिस ने अभी तक इस मामले में मुख्य आरोपी समेत कुल चार को गिरफ्तार किया है. जिनसे पूछताछ जारी है. कोलकाता पुलिस ने आज सुबह इस घटना को लेकर क्राइम सीन को रीक्रिएट किया. इस दौरान सभी चार आरोपी पुलिस के साथ ही मौके पर मौजूद रहे.पुलिस ने आरोपी को करीब ५ घंटे घटनास्थल पर ही रखा.सीन रीक्रिएट करने के बाद आरोपियों को वापस लेकर जाया गया.

पुलिस की जांच के बीच मोनोजीत मिश्रा को लेकर कई बड़े और चौकाने वाले खुलासे हो रहे हैं. सूत्रों के अनुसार आरोपी मोनोजीत मिश्रा का लम्बा आपराधिक इतिहास रहा है. उस पर ११ आपराधिक मामले दर्ज हैं. कोलकाता पुलिस के टॉप सूत्रों ने एनडीटीवी को बताया कि इनमें से कई मामले महिलाओं के साथ छेड़खानी और उनके साथ बदसलूकी की. मोनोजीत इन सभी मामलों में जमानत पर चल रहा था. पीड़ित कॉलेज में पहले दिन से मोनोजीत के निशाने पर थी. २५ जून को हुए लॉ कॉलेज छात्रा के गैंगरेप मामले में मुख्य आरोपी मनीजित मिश्रा ने अपराध करने के बाद कुछ भरोसेमंद साथियों को कॉलेज में रुककर कासबा पुलिस स्टेशन के आसपास निगरानी करने को कहा था. कॉलेज से पुलिस स्टेशन करीब एक किलोमीटर दूर है.इसके बाद मैंगो दूसरे आरोपी प्रमित मुखर्जी और जैब अहमद के साथ कॉलेज से निकल गया.अगले दिन सुबह मोनोजित ने एक कॉलेज अधिकारी को कॉल किया और पुलिस के आने के बारे में पूछा. उसी दिन प्रमित ने एक वकील से संपर्क किया और दोनों ने कई कॉलेज के वरिष्ठ छात्रों से भी मदद मांगी.लेकिन उन्हें किसी ने मदद नहीं की.

एक्ट्रेस ने बताया क्या है Glutathione इंजेक्शन लेने का प्रोसेस, कितने में लगवाती थीं इंजेक्शनए...

एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री से हाल ही में चौंकाने वाली खबर सामने आई. जब कांटा लगा गर्ल के नाम से मशहूर मॉड्ल और एक्ट्रेस शेफाली जरीवाला का ४२ साल की उम्र में निधन हो गया. वहीं पुलिस की जांच शुरू हुई और उनके घर से एंटी एजिंग और स्किन लाइटनिंग की दवाए मिलीं, जिसमें ग्लूटाथियोन और विटामिन सी के इंजेक्शन शामिल हैं. इसी को लेकर सोशल मीडिया और इंटरनेट पर चर्चा तेज हो गई है कि आखिर ग्लूटाथियोन है क्या और इसे लेने का प्रोसेस क्या है. वहीं NDTV इंडिया से खास बातचीत में एक्ट्रेस रोजलिन खान ने बताया कि ग्लूटाथियोन इंजेक्शन लेने का प्रोसेस क्या होता है.

रोजलिन खान ने कहा, इसका प्रोसेस बड़ा सिंपल होता है. मैं घर आकर विटामिन सी ले लेती थी. और यह हाथ की नसों में लगाया जाता है. बहुत सिंपल होता है. कुछ फील नहीं होता है. लेकिन अगर वह डॉक्टर अच्छा है और एक्सपीरियंस्ड है तो वह हमेशा आपसे यह पूछते हैं कि क्या आपने खाना खाया है.

क्या आप खाली पेट तो नहीं हो. वह आमतौर पर आपसे कहते हैं कि आप घर जाकर कोई वर्कआउट नहीं करेंगे और अगले २४ घंटे तक आप अच्छी तरह से खाना पानी सब चीज का ध्यान रखेंगे. तो ये कुछ चीजें बताई जाती हैं. आजकल लोग इसे बहुत हल्के में लेते हैं और काम पर चले जाते हैं और यह एक आसान लाइफ कर ली है लोगों ने इसके साथ ही इंटरव्यू में रोजलिन खान ने यह भी बताया कि २००९ में वह ६००० का एक इंजेक्शन लेती थीं. वहीं समय के साथ इसकी कीमत भी बढ़ गई है.

पोषक तत्वों से भरपूर कंटोला में कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन, कैल्शियम, फाइबर, सोडियम, मैग्नीशियम, कॉपर, पोटैशियम, जिंक आदि पोषक तत्वों के साथ ही विटामिन A, विटामिन B1, B2, B3, B5, B6, B9, B12, विटामिन C, विटामिन D2 ,D3, विटामिन H और विटामिन K पर्याप्त मात्रा में होता है। यही वजह है कि इस-के सेवन से शरीर ताकतवर बनता है और यह पीलिया से लेकर डायबिटीज़, बवासीर, ब्लड प्रेशर, बुखार आदि में बहुत फायदेमंद माना जाता है। इसके अलावा, यह आसानी से पच जाती है और इसमें कैलोरी बिल्कुल नहीं होती, जिससे वज़न घटाने वालों के लिए यह बहुत अच्छा विकल्प है।

कंटोला की खेती...

कंटोला एक लोकप्रिय पौष्टिक सब्जी है, जिसकी खेती पूरे भारत में प्राचीन समय से की जाती है। ककोड़ा फल को ककोरा, कंटोला, कर्कोटकी, ककोड़े आदि नाम से भी जाना जाता है। कंटोला को इंग्लिश में 'Spine Gourd' नाम से जाना जाता है। यह सब्जी गर्मियों में जैसे गर्म मौसम में अच्छी तरह से विकसित हो सकती है। आमतौर पर, लोग इस सब्जी के साथ करेला को भ्रमित करते हैं। जैसा कि कंटोला में करेले से संबंधित विशेषता होती है।लेकिन इसका स्वाद उतना नहीं होता है। कोई भी इन्हें आसानी से पहचान सकता है क्योंकि ये लौकी सब्जियां आकार में गोल होती हैं और लंबाई में भी छोटी होती हैं। ककोड़ा की खेती रेतीली दोमट और चिकनी मिट्टी में की जाती है, लेकिन उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अच्छे परिणाम मिलते हैं।

भारत में, इस ककोरा खेती की व्यापक रूप से की जाती है क्योंकि वे मिट्टी की एक विस्तृत विविधता पर बढ़ सकते हैं। बाजार में छोटे आकार के, ताजा और स्वस्थ कंटोला की काफी मांग है। भारत में, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक दो मुख्य व्यावसायिक रूप से खेती करने वाले राज्य हैं। हालांकि, Indira Kankoda I (RMF 37) खेखसा (Spine Gourd)) की नवीनतम संकर या उन्नत किस्म में से एक है। यह उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, झारखंड, छत्तीसगढ़ और यहां तक कि मेघालय के कई क्षेत्रों में इस सब्जी का व्यवसाय के रूप में उत्पादन कर सकता है।

कंटोला की खेती - जिसे तीखे करैला या स्पाइनी गोर्ड (Spiny Gourd) भी कहते हैं - एक लाभदायक मौसमी सब्जी की खेती है जो कम पानी, कम देखभाल में भी अच्छी पैदावार देती है। यह स्वास्थ्यवर्धक होती है और बाज़ार में इसकी मांग भी लगातार बढ़ रही है। कंटोला फसल आसानी से रेतीली, दोमट और चिकनी मिट्टी में विकसित हो सकती है। अच्छी जल निकासी शक्ति और अच्छी कार्बनिक पदार्थों वाली मिट्टी को इसकी खेती के लिए अच्छी जमीन मानी जाती है। हालांकि, आप कुछ कार्बनिक पदार्थों के अलावा पीएच को बढ़ाने के लिए अपनी मिट्टी के पीएच का प्रबंधन कर सकते हैं, आप चूने के पत्थर का उपयोग कर सकते हैं या पीएच को कम करने के लिए, आप जिप्सम का उपयोग कर सकते हैं।

जलवायु और भूमिः

- गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छा उत्पादन होता है।
- बलुई दोमट मिट्टी या हल्की दोमट भूमि उपयुक्त होती है।
- pH मानः ६.० - ७.५ के बीच बेहतर है।

बीज की बुवाईः

- समयः जून-जुलाई (मानसून) सबसे अच्छा समय है।
  कुछ क्षेत्र में फरवरी-मार्च में भी बुवाई की जाती है।
- विधिः बीज या जड़ से रोपण किया जा सकता है।
- बीज मात्राः प्रति हेक्टेयर ६-८ किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है।
- बीज शोधनः बुवाई से पहले बीजों को फफूंदनाशक से उपचारित करें।

खेत की तैयारीः

- २-३ बार जुताई करके खेत समतल कर लें।
- १५-२० टन गोबर की खाद मिलाएं।

रोपण दूरीः

- पौधों के बीच १ मीटर और कतारों के बीच १.५-२ मीटर की दूरी रखें।

खाद और उर्वरकः

अच्छा उत्पादन के लिए फसल को लगभग १५ से २२ टन साधारण खाद जैसे गोबर की खाद लगाना चाहिए। इसे भूमि तैयारी के समय या अंतिम हल पर दीजिये। अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए, आपकी मिट्टी में पर्याप्त पोषण होना चाहिए और एक अच्छी उपजाऊ शक्ति भी होनी चाहिए। हालांकि, कांटोला खेती में, एन, पी, के के आवेदन को १२०: ८०: ८० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज बोने से पहले या खेत पर कंदों की मदद से बोना सबसे अच्छा उपचार माना जाता है।

उर्वरक	मात्रा प्रति हेक्टेयर
नाइट्रोजन (N)	४०-५० किग्रा
फॉस्फोरस (P)	४० किग्रा
पोटाश (K)	३० किग्रा

आधा नाइट्रोजन और बाकी उर्वरक बुवाई के समय, बाकी नाइट्रोजन ३०-४० दिन बाद दें।

सिंचाईः

ककोरा खेती में समय पर और उचित सिंचाई से आपको अपना उत्पादन बढ़ाने में मदद मिल ती है। बीज बोने के बाद तुरंत पानी दें। उसके बाद फसल के पौधे के आधार पर पानी दें। लेकिन, जरूरत के अनुसार पानी दें और यह भी क्षेत्र से क्षेत्र और जलवायु स्थिति में भिन्न होता है। गर्मियों में, लगातार पानी आवश्यक है और मानसून में पानी की कोई आवश्यकता नहीं है। फिर भी, यदि आवश्यक हो तो पानी दें।

मानसून आधारित खेती में सामान्यतः सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती।

अधिक सूखा होने पर १०-१५ दिन के अंतर पर सिंचाई करें।

रोग और कीट नियंत्रणः

पत्ती झुलसा और मृदु सड़न रोग हो सकते हैं। कापर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव करें।

कीटों में फल मक्खी और चेपा आदि को नियंत्रित करें - नीम आधारित कीटनाशक या इमिडाक्लोप्रिड उपयोग करें।

तोड़ाई और उपजः

यदि आप व्यवसाय के रूप में एक वाणिज्यिक फसल का पालन कर रहे हैं और खरपतवार की देखभाल नहीं कर रहे हैं, तो यह आपके लिए हानिकारक होगा। किसी भी व्यावसायिक फसल में खरपतवार कम उपज देता है, क्योंकि यह फसल की अच्छी वृद्धि को कम करता है। इसीलिए कंटोला की खेती में खरप-तवार को हटाने को नियमित रूप से सात दिनों के अंतराल पर किया जाना चाहिए।

कांटोला खेती में खरपतवार को नियंत्रित करने के लिए, आप कोई भी चुन सकते हैं; हाथ होइंग विधि या मैनुअल निराई विधि। वर्तमान में, खरपतवार नियंत्रण रसायन स्थानीय बाजार में आसानी से उपलब्ध है। आप किसी विशेष फसल के लिए अपनी आवश्यकता के आधार पर उपयोग कर सकते हैं।

पहली तोड़ाईः बुवाई के ६०-७० दिन बाद।

उपजः ८०-१२० क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक।

८-१० बार तुड़ाई होती है।

लाभः

कंटोला की कीमत ₹४० से ₹१०० प्रति किलो तक जा सकती है।

जैविक खेती से मांग और दाम दोनों अधिक होते हैं। कम लागत और अधिक लाभ वाली फसल।

विशेष सुझावः

इसे मंडियों, लोकल बाजारों, हाट या ऑनलाइन प्लेटफार्म (pewmes BigBasket, URanKissan) पर भी बेचा जा सकता है।

कंटोला का अचार, सूखा चिप्स, और पाउडर भी बाजार में लोकप्रिय हो रहे हैं - प्रोसेसिंग के लिए अवसर।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें। आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा। किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

हमारा पर्यावरण